RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 सितंबर 2024
डाक प्रेषण तिथि : 29 सितंबर-01 अक्टूबर 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 12
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 80
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

महत्तम महापुरुष का **महत्तम** गुणगान हो,
अवसर है अनमोल इसकी शीघ्र ही पहचान हो।
आप स्वयं भी तर जाएँ साथ औरों को भी तारें,
संघ का हर मोती जुड़ जाए, तब माला का सार हो।।

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

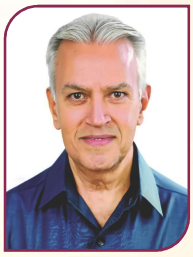

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

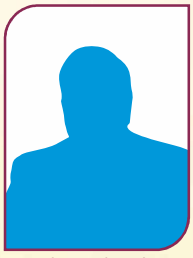

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

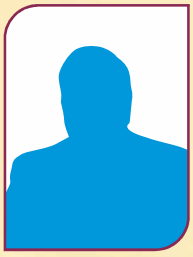

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री खूबचंद जी पारख
राजनांदगाँव
MID No. : 141590

स्व. श्री विनय जी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. : 107376

श्री शांतिलाल जी डागा
कोलकाता
MID No. : 188697

श्री प्रकाशचंद जी सूर्या
उज्जैन
MID No. : 160559

श्री उत्तमचंद जी रांका
जयपुर
MID No. : 111353

श्री रावतमल जी संचेती
गंगाशहर
MID No. : 123813

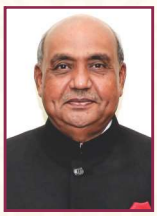

श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

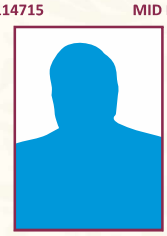

श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

चतुर्थ चरण

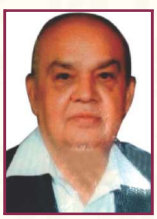

श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा-डोंगरगाँव * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़ - इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा - भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा * श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई * श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव * श्री सुंदरलाल जी पींचा-गुवाहाटी * श्री अमरचंद जी बैद-नोखा * श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन * श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई * श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर * श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर * श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला * श्री लीला देवी बंब-चेन्नई * श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ * श्रीमती जमना देवी लुणावत-नोखागाँव * श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई * श्री संजय जी मालू-कोलकाता

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव - महत्तम शिखर

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा महोत्सव का चरम स्वरुप

रक्तदान

आचार्य श्री नानेश के 25वें स्मृति दिवस एवं
आचार्य श्री रामेश के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में

SCAN FOR REGISTRATION

रक्त की हर एक बूँद कीमती है

DONATE BLOOD SAVE LIFE

''क्यों न खुद की एक पहचान बनाएँ, चलो रक्तदान करें और करवाएँ''

13 अक्टूबर 2024 को देशभर के प्रत्येक संघ में 'रक्तदान' शिविर का आयोजन।

आयोजक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

निवेदक – महत्तम शिखर आयोजन समिति

Helpline (+91)7020661020 | mahattammahotsav@gmail.com | Mahattam Mahotsav

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

विहार सेवा संयोजन सदस्य संक्षिप्त परिचय

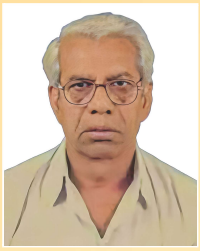

सुश्रावक झुमरलाल जी लोढ़ा का जन्म 11 नवंबर 1943 को ग्राम आसरा में हुआ। आप बहुत ही मिलनसार व्यक्तित्व के धनी हैं। आपके तीन भाई व तीन बहन हैं। वर्तमान में डोंगरगाँव, जिला राजनांदगाँव (छ.ग.) में निवास करते हुए आप संघ सेवा में रत हैं। आप श्री सौरभ मुनि जी म.सा., श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. के संसारपक्षीय दादाजी हैं। आप सहित संपूर्ण लोढ़ा परिवार आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धावान है।

पोल्लुर निवासी **युवारत्न मनोज कुमार जी छाजेड़** सुपुत्र मदनलाल जी-पदमा बाई छाजेड़ बचपन से ही विशिष्ट प्रतिभा के धनी हैं। आप विहार सेवा सहित संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों से जुड़े हुए हैं। आप साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. के संसारपक्षीय मौसाजी हैं। संघ व चारित्रात्माओं की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते हैं। संपूर्ण छाजेड़ परिवार परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति पूर्ण समर्पित है।

नागदा निवासी **सुश्रावक निर्मल जी चपलोत** सुपुत्र स्व. श्री शांतिलाल जी चपलोत धर्मपाल क्षेत्र व विहार सेवा में विशेष रुचि रखते हैं। तप-त्याग, दान, धर्माराधना के गुण आपको अपनी माताजी श्रीमती संपत बाई से विरासत में प्राप्त हुए हैं। आप दो बार 13-13 उपवास की तपस्या पूर्ण कर चुके हैं। आप साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. के संसारपक्षीय बहनोई हैं। देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट निष्ठावान निर्मल जी का जीवन सरल, सहज, मिलनसारिता आदि गुणों से परिपूर्ण है। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति विशेष श्रद्धा व समर्पणा है।

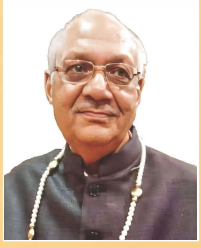

रायपुर निवासी **सुश्रावक सोहनलाल जी पींचा** सुपुत्र श्री बालंचद जी पींचा का जन्म गंगाशहर, जिला बीकानेर (राज.) में हुआ। आप परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के संसारपक्षीय भुआजी के सुपुत्र हैं। सौम्य, सरल, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी सोहनलाल जी सेवा कार्यों में सदैव अग्रणी रहते हैं। चारित्रात्माओं के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा है। आपकी जीवनसंगिनी कंचन देवी पींचा भी आपके शुभ कार्यों में सदैव सहयोगी रहती हैं।

सेलंबा। शेरगढ़ निवासी **सुश्रावक स्व. श्री पुखराज जी चौपड़ा** का जन्म सगतमल जी-मीमो बाई चौपड़ा के घर-आँगन में हुआ। आप युवावस्था में व्यवसाय हेतु पाट, कनखाड़ी और सेलंबा गाँव आ गए। आप संपूर्ण परिवार को धर्म-ध्यान की प्रेरणा देते थे। मिलनसार व्यक्तित्व के धनी चौपड़ा जी एवं उनके भ्राता जवरीलाल जी की जोड़ी राम-लक्ष्मण जैसी जोड़ी मानी जाती थी। आपने स्थानीय संघ में अध्यक्ष सहित अनेक पदों पर सेवाएँ दीं। दान एवं चारित्रात्माओं की सेवा भावना से आप ओत-प्रोत थे। संपूर्ण चौपड़ा परिवार की आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण समर्पणा है।

Jai GURU NANA

JAI MAHAVEER

JAI GURU RAM

राम चमकते भानु समाना

SADHUMARGI PROFESSIONAL FORUM (SPF)

(UNDER SHRI AKHIL BHARATVARSHIYA SADHUMARGI JAIN SANGH)

A Centre For Professionals Intellectuals Of Sadhumargi Persuasion To Meet, Bond, Network & Synergize

VISION

A Global Social Capital
"Sangh at Heart,
Service In Spirit."

MISSION

Professional Bonding
Networking Events
Social Welfare
Holistic Development

GOALS

Spiritual Development
Social Development
Personality Development
Professional Development
Skill Development

ABOUT US

We at SADHUMARGI Professional Forum (SPF) are proudly connecting the Professional Shravak Shravika of SADHUMARGI Sangh from all over INDIA and abroad! The community thrives on collaboration, innovation and mutual support, creating a network where professionals can connect, share knowledge and advance together. As we look to the future, we remain committed to fostering growth, embracing new opportunities and continuing to build a vibrant and supportive professional community.

QUALIFICATIONS ACCEPTED

FINANCE: CA\CS\ CMA\CFA
MANAGEMENT: MBA\ PGDM\IAS\IPS\DM\Other Administrator in Civil or Administrative Services\ Masters in Hotel Management
ENGINEERING: BE\B.Tech \ME\M.Tech\ B.Arch
EDUCATION: M.Ed, PhD (Economists\Statistics\ Mathematics\ Scientists \ Geologists\Actuaries)
MEDICAL: MBBS/BAMS/BHMS/BDS/BNYS/MD/MS
PARAMEDICAL: BPT/MPT
APPLIED AND LIFE SCIENCE: MSc (Psychology, Biochemistry, Anatomy, Physiology, Pathology, Medical Pharmacology), MPH (Masters In Public Health)
PHARMACY: B.Pharm/Pharm.D/M.Pharm
RESEARCH: Masters in Biotechnology, Microbiology, Biochemistry, Wild Life etc.
DESIGNING: Masters in Fashion\Interior\Web\Jewellery\Visual Arts \Animation
COMPUTER APPLICATION: MCA\M.Sc (CS\IT)
COMMUNICATION: Masters in Mass Communication\Journalism
LEGAL: LLB, LLM, Registered Advocate, Masters in Cyber Law
Certified Motivational\Professional Trainer\Coach With Masters degree
MASTER FROM FOREIGN UNIVERSITIES
Other: (10+2+5 years Professional degree course other than academic courses like M.A\M.Com\M.sc)

FOLLOW US ON

spf_forum | spf_forum | sfp_forum
sadhumargiprofessionalforum
sadhumargi-professional-forum

SCAN TO REGISTER

FOR REGISTRATION FORM
SCAN OR OPEN
https://tinyurl.com/spfnewmember
Call: 9414150955 | 7823070748 | 9422314905

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह..... 08
भक्ति रस : विनय मोक्ष का द्वार है..... 12
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र..... 13
श्रमणोपासक हेडलाइंस..... 15
भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार..... 16
महत्तम महोत्सव..... 38
अपने आचार्यदेव को जानें..... 43
विविध समाचार..... 45
विविध भेंट मार्फत..... 57
विनम्र श्रद्धांजलि..... 65
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति..... 66
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ..... 72

सुविचार

मौन

मौन की महिमा मुनि, जानते हैं जग माहीं।
रंग चाहो साधना में, मौन सदा कीजिए।।
वाणी से अधिक मौन, होता है मुखर सुनो।
सकल विवादों की ये, दवा घोट पीजिए।।
प्रवृत्तियाँ अंतर्मुखी, मौन में होती हैं सारी।
आनंद का मूल मौन, जरा ध्यान दीजिए।।
वीर कहे गौतम से, बहुयं मा य आलवे।
अव्याबाध सुख सदा, मौन द्वारा लीजिए।।

साभार – वीर कहे गौतम से

चिंतन

तुम क्या देख रहे हो?

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

मैं जो भी पाता हूँ वह प्रतिफल है। श्रम करने से पारिश्रमिक मिलता है। श्रम का जो मूल्य मिलता है, उसे ही पारिश्रमिक कहा जाता है। दूसरे शब्दों में श्रम ही पारिश्रमिक के रूप में साकार होता हुआ नजर आता है। एक सम्राट ने एक कारीगर से भवन बनवाया। उसने उसमें धाँधली की। भवन देखने में अच्छा था, पर मजबूती कम थी। सम्राट ने भवन को देखा और कहा-मैं बहुत समय से तुम्हें पुरस्कृत करना चाहता था, आज मैं मन की मुराद पूरी कर रहा हूँ। इतना कहते हुए उस भवन के दस्तावेज अपने हस्ताक्षर के साथ उसे थमा दिए। कारीगर को काटो तो खून नहीं। वह सोचने लगा पहले मालूम होता तो मकान की मजबूती पर विशेष ध्यान देता। पर अब क्या हो, जब चिड़िया चुग गई खेत। वह मन मसोसकर रह गया। यह एक रूपक है। इससे ध्वनित होता है कि तुम जैसा बनाते हो वैसा ही तुम्हें प्राप्त होता है। व्यक्ति यदि अच्छा करता है तो उसका अच्छा लाभ पाएगा और बुरा करेगा तो बुरा। उसका कर्तृत्व ही व्यक्तित्व को निखार पाता है। जैसा बोया जाता है वैसा प्राप्त होता है। जैसा करता है जीव वैसे ही वह भरता है। उसका कार्य ही प्रतिफल के रूप में उभरता है। इसे स्पष्ट जान लेना चाहिए।

धर्म क्रियाओं के विषय में भी यही बात लागू होती है। जो जितने मन, श्रद्धा व भक्ति से एवं उत्कृष्ट भाव से क्रिया-अनुष्ठान करेगा, उसे उसका प्रतिफल भी उतना ही उत्कृष्ट व श्रेष्ठ रूप से प्राप्त होगा। तीर्थंकर नाम का उपार्जन भी उसी का एक अंग है। इससे विपरीत भयंकर कर्मों का बंध भी व्यक्ति स्वयं की भावनाओं से ही करता है, जैसा कि तंदुलमच्छ के लिए कथन आता है। अतः कोई भी कार्य करने से पहले विचार करो, तुम क्या चाहते हो? तुम उस कार्य में क्या अनुभव करते व देखते हो? मूर्तिकार पत्थर से मूर्ति बनाने के पूर्व ही उसमें मूर्ति को देख लेता है। पेपर देने वाला मिलने वाले प्राप्तांकों का अनुमान लगा लेता है। वैसे ही किसी भी कार्य में देखो तुम्हें क्या दिखता है!

फाल्गुन शुक्ल 10, शुक्रवार, 18.03.2016 **साभार- आरोह**

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

नीति-प्रयोग

29-30 अगस्त 2024 अंक से आगे...

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च,
हिंस्रादयालुरपिचार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुर रत्न धनागमा च,
वाराांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा।

अर्थात् राजाओं की नीति वेश्या की तरह अनेक रूप धारण करने वाली होती है। वह कहीं सत्यवादिनी, कहीं कटुभाषिणी, कहीं प्रियभाषिणी, कहीं हिंसा कराने वाली, कहीं दयालुता दिखाने वाली, कहीं लोभी, कहीं उदार, कहीं अपव्यय करने वाली और कहीं धन संचय करने वाली बन जाती है।

राजाओं की कोई एक नीति नहीं होती। वे जहाँ जिस नीति से कार्य चलता देखते हैं, वहाँ उसी नीति से काम लेने लगते हैं, फिर चाहे वह नीति धर्म और न्याय के अनुकूल हो या प्रतिकूल। उन्हें इसकी चिंता नहीं होती। उन्हें तो कार्य साधने की चिंता रहती है। वे कहीं सामनीति से काम लेते हैं और दूसरे को अपने समान बनाकर या मान देकर कार्य साधते हैं। कहीं दामनीति का उपयोग करते हुए खूब उदारतापूर्वक द्रव्य आदि देकर काम बनाते हैं। कहीं दंडनीति चलाते हैं और मार-पीटकर अपना मतलब निकालते हैं और कहीं भेदनीति को आगे रखते हैं, जिससे फूट डालकर एक को बड़ा, दूसरे को छोटा बताकर कार्य सिद्ध करते हैं। इसी प्रकार के छल-कपट का नाम ही राजनीति है। इसे जानने वाले ही राजनीति के कुशल माने जाते हैं।

शिशुपाल भी राजा था। वह भी नीति और उसका प्रयोग जानता था। रुक्मिणी को अपने अनुकूल करने के लिए भी उसने नीति का ही प्रयोग करना उचित समझा, लेकिन शुद्ध सत्य के सम्मुख कपटभरी नीति कदापि सफल नहीं होती।

कुण्डिनपुर नगर को सेना से घेरने के पश्चात् शिशुपाल ने विचार किया कि यद्यपि मेरा मित्र रुक्म अपनी बात पूरी करेगा और रुक्मिणी के न मानने पर वह बलपूर्वक रुक्मिणी का विवाह मेरे साथ कर देगा, परंतु दंडनीति का प्रयोग करने से पूर्व साम, दाम और भेद नीति का प्रयोग करना अच्छा है। दंडनीति अंतिम नीति है। इससे पूर्व की किसी नीति से यदि कार्य हो जाए तो सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए मुझे रुक्मिणी को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पहले साम, दाम और भेद नीति से ही काम लेना चाहिए। इस प्रकार विचार कर शिशुपाल ने अपने साथ की दूती-दासियों को बुलाकर उनसे कहा कि क्या तुम रुक्मिणी को मेरे साथ विवाह करने के लिए राजी नहीं कर सकतीं?

दूतियाँ— महाराज! हम क्या कुछ नहीं कर सकतीं! ऐसा कौनसा कार्य है, जो हमसे न हो सके! हम दिन को रात बता देने और रात को दिन बता देने की शक्ति रखती हैं। रुक्मिणी तो चीज ही क्या है! हम इंद्राणी को भी

उसके निश्चय से हिला सकती हैं। रुक्मिणी बेचारी तो लड़की है, उसे वश में करना कौनसी बड़ी बात है! आपने अब तक हमें आज्ञा ही नहीं दी, नहीं तो कभी की रुक्मिणी स्वयं आकर आपके पाँवों में गिर गई होती।

शिशुपाल— हाँ, तुम ऐसी ही हो। मुझे विश्वास है कि तुम रुक्मिणी को मेरे साथ विवाह करना स्वीकार करा दोगी। अच्छा तो, तुम्हें इस कार्य के लिए जो कुछ चाहिए, वो ले लो और कार्य में लग जाओ।

दूतियाँ— रुक्मिणी के यहाँ बिना कोई विशेष कारण बताए जाना ठीक नहीं है और वह कारण भी ऐसा होना चाहिए जो हमारे कार्य में सहायक हो। आप सुंदर तथा बहुमूल्य वस्त्राभूषण और शृंगार सामग्री मँगवा दीजिए। हम रुक्मिणी का शृंगार करने के बहाने रुक्मिणी के यहाँ जाएँगी। वे वस्त्राभूषण रुक्मिणी को आपकी ओर आकर्षित करने में सहायक भी होंगे। आगे जो कुछ करना होगा, वह तो हम करेंगी ही।

दूतियों की युक्ति शिशुपाल को पसंद आई। उसने दूतियों की इच्छानुसार स्त्रियों के योग्य अनेक बहुमूल्य वस्त्राभूषण और शृंगार सामग्री मँगवा दी। दूतियाँ उन वस्त्रालंकारों को बड़े-बड़े स्वर्ण थालों में सजाकर रथ में बैठ बड़े ठाठ-बाठ से रुक्मिणी के यहाँ चलीं। जो कोई पूछता कि ये कहाँ जा रही हैं तो उनके सारथी आदि कह देते थे कि ये राजकुमारी का शृंगार करने जा रही हैं।

संसार में ऐसे बहुत कम मनुष्य होंगे जो प्रलोभन में पड़कर अपने ध्येय से विचलित न होते हों। ध्येय से विचलित होने वालों में अधिक संख्या प्रलोभन में पड़कर पतित होने वालों की ही मिलेगी। हाँ, यह अंतर चाहे मिले कि किसी ने किस लोभ से ध्येय को ठुकराया और किसी ने किसी और प्रलोभन से। कोई धन के प्रलोभन में पड़ा रहेगा, कोई सुख के प्रलोभन में, कोई स्त्री, खान-पान आदि के प्रलोभन में पड़ा रहेगा। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी संयम (अपने ध्येय) को भुला देते हैं। बड़े-बड़े न्याय निपुण राजा भी प्रलोभन में फँसकर अन्याय करने लगते हैं और प्रलोभन में पड़ जाने पर पतिव्रता स्त्रियाँ भी पतिव्रत धर्म का तिरस्कार कर देती हैं।

जिन प्रलोभन में पड़कर स्त्रियाँ अपना ध्येय भुलाती हैं उनमें आभूषणादि शृंगार सामग्री, पुरुष द्वारा सम्मान प्राप्ति और पुरुष पर आधिपत्य प्रमुख हैं। अपने ध्येय को ठुकराने वाली स्त्रियों में से अधिकांश इन्हीं प्रलोभनों में फँसकर अपना ध्येय भूलती हैं और अपने ध्येय को ठुकराती हैं। जिनमें दृढ़ता का अभाव है, धैर्य की कमी है, वे स्त्रियाँ इस प्रकार के प्रलोभनों के सम्मुख अपने ध्येय पर स्थिर नहीं रह सकती। वे उन प्रलोभनों के सम्मुख नतमस्तक हो जाती हैं। शिशुपाल की दूतियाँ इस बात को अनुभवपूर्वक जानती थी। इसलिए वे रुक्मिणी को इसी अस्त्र से वश में करने की इच्छा रखती थीं और ऐसी ही सामग्री जुटाकर ले जा रही थीं।

दूतियाँ राजमहल में रथ से उतर आभूषणादि के थाल हाथों में लेकर रुक्मिणी की माता के पास गई। उन्होंने रुक्मिणी की माता से कहा कि हम चंदेरीराज की ओर से राजकुमारी का शृंगार करने के लिए आई हैं। अतः हमें शृंगार करने की स्वीकृति दीजिए। रानी ने दूतियों का सत्कार करके उन्हें स्वीकृति दे दी। दूतियाँ प्रसन्न होती हुई रुक्मिणी के पास आईं। उन्होंने बड़ी ही नम्रतापूर्वक रुक्मिणी का अभिवादन किया और रुक्मिणी के सामने वस्त्राभूषणादि की प्रदर्शनी-सी लगाकर बैठ गईं। रुक्मिणी को इनके आने का अभिप्राय मालूम हो चुका था। इसलिए उसने न तो इनकी ओर देखा और न इनके लाए हुए वस्त्राभूषणादि के थालों की ओर। इससे दूतियों ने निराशा को दबाकर प्रयत्नशील रहना ही उचित समझा। वे रुक्मिणी के आस-पास बैठ गईं और कहने लगीं कि हमारे बड़े भाग्य, जो हमें आपकी सेवा प्राप्त हुई।

दूसरी— हमने आपकी जैसी प्रशंसा सुनी थी, आप तो उससे भी बहुत बढ़कर हैं। आप जैसी रूपवती हमारे देखने में तो नहीं आई।

तीसरी— जोड़ा भी अच्छा मिला है। संसार में

ऐसा जोड़ा बड़ी मुश्किल से मिला करता है।

चौथी—रुक्मकुमार हैं भी बुद्धिमान। उन्होंने अपनी प्यारी बहन के लिए बेजोड़ पति ढूँढ़ा है।

पाँचवीं—राजकुमारी के रूप की अभी क्या प्रशंसा करती हो, जरा शृंगार करने के पश्चात् आपका रूप देखो।

छठी—हाँ, ये ठीक कहा। राजकुमारी जी! हमारे महाराज ने हमें ये शृंगार-सामग्री देकर आपका शृंगार करने के लिए भेजा है। आप शृंगार करने की आज्ञा दीजिए।

दूतियों की बातें रुक्मिणी चुपचाप सुन रही थी और विचार कर रही थी कि मेरी स्त्री-बहनों में कैसी-कैसी निर्लज्जता है, जो अपनी एक बहन को शृंगार सामग्री का प्रलोभन देकर पथभ्रष्ट करना चाहती हैं। इस प्रकार का कार्य करने वाली नीच स्त्रियाँ बार-बार धिक्कारने योग्य हैं।

रुक्मिणी ने दूतियों की बात का कोई उत्तर न दिया। वह उसी प्रकार गंभीर बनी बैठी रही। रुक्मिणी से कोई उत्तर न पाकर एक दूती रुक्मिणी से कहने लगी—राजकुमारी जी! आपने हमारी प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं दिया। आप इस शृंगार-सामग्री की ओर तनिक दृष्टि तो करिए। यदि आपकी दृष्टि से इनमें कुछ कमी हो तो हम उसकी पूर्ति को तत्पर हैं।

रुक्मिणी ने इस बात का भी कोई उत्तर नहीं दिया। तब दूसरी दूती अन्य दूती की ओर देखती हुई कहने लगी—शृंगार सामग्री में तो कमी नहीं दिखती। ऐसे-ऐसे बहुमूल्य और सुंदर वस्त्राभूषण किसी दूसरे को तो देखने के लिए भी नहीं मिल सकते।

रुक्मिणी को फिर भी चुपचाप देखकर तीसरी दूती अपनी साथिनियों से कहने लगी—बहन! तुम भोली स्त्रियों की तरह बातें कर रही हो। क्या राजकुमारी इन वस्त्राभूषण के प्रलोभन में पड़कर अपने अधिकारों की बात भूल सकती हैं? आखिर तो राजकन्या हैं, बुद्धिमती हैं। कोई हम-तुम थोड़े ही हैं, जो वस्त्राभूषण के लिए अधिकार का बलिदान कर दें। राजकुमारी विचारती है कि मैं ऐसी सुंदरी और बुद्धिमती हूँ, फिर भी दूसरी पत्नी होने के कारण पटरानी पद से वंचित रहूँगी। यह विचार कर ही आप चुप हैं।

चौथी—यह कौनसी बात है? इसके लिए तो महाराज और रुक्मकुमार में पहले ही बातचीत हो गई है। महाराज ने रुक्मकुमार से प्रतिज्ञा की है कि मैं आपकी बहन को पटरानी बनाऊँगा और उन्हीं का पुत्र राज्य का अधिकारी होगा। यदि राजकुमारी चाहती हों तो हम महाराज से ऐसा प्रतिज्ञा-पत्र लिखवाकर ला सकती हैं। राजकुमारी जी! क्या आप यही चाहती हैं क्या?

यह बातचीत सुनकर रुक्मिणी विचारती है कि इनका महाराज बड़ा मूर्ख है, जो मुझे देखे बिना, मेरी बुद्धि जाने बिना मुझे पटरानी बनाने की प्रतिज्ञा कर चुका है। धिक्कार है ऐसे पुरुष को, जो मोहवश न्याय-अन्याय का भी विचार नहीं करता और मेरे लिए अपनी पत्नी के अधिकारों की हत्या करने को तैयार है। इस प्रकार के विचारों से रुक्मिणी के हृदय में शिशुपाल के प्रति और ज्यादा घृणा हो रही थी।

दूतियों को रुक्मिणी से जब इस बात का भी उत्तर न मिला, तब पाँचवीं दूती कहने लगी—सखी! जिस स्त्री के अधीन उसका पति होता है, उसके सामने तुच्छ अधिकार की क्या गणना है! पटरानी पद मिल गया, तब भी पति-प्रेम से वंचित रहने पर पटरानी पद भी दुःख रूप हो जाता है। महाराज इन्हें पटरानी तो बना दें, परंतु इनके आज्ञावर्ती न रहें तो वह पटरानी पद भी किस काम का? सुख तो पति अधीन रहे तभी है और तभी पटरानी पद एवं वस्त्राभूषणादि भी सुखदायी होते हैं।

छठी—हमारे महाराज ऐसे नहीं हैं, जो इस प्रकार धोखा दें। वे सदैव राजकुमारी के आज्ञावर्ती रहेंगे और आपकी सम्मति की कदापि अवहेलना नहीं करेंगे। यदि राजकुमारी को केवल यही विचार हो तो हमारे महाराज इस बात की लिखित और शपथपूर्वक प्रतिज्ञा कर सकते हैं। बोलो राजकुमारी, आप महाराज के कथन पर ही

विश्वास कर लेंगी या उनसे लिखित प्रतिज्ञापत्र लेंगी, कुछ बोलिए तो।

रुक्मिणी के हृदय में दूतियों की बातों से शिशुपाल के प्रति अधिकाधिक घृणा भरती जा रही थी। छठी दूती की बात सुनकर रुक्मिणी विचारने लगी कि क्या वह कोई पुरुष है, जो स्त्री का दासत्व स्वीकार करने के लिए तैयार है? पारस्परिक सहयोग ही दांपत्य सुख का कारण है, परंतु जो बिलकुल दास बनने को तैयार है, वह पति कैसे हो सकता है?

रुक्मिणी ने दूतियों से कहा कि मुझे तुम लोगों की बातें अच्छी नहीं लगती। तुम अपनी बातचीत बंद करो और यह पाप-सामग्री की प्रदर्शनी उठाकर यहाँ से चली जाओ तथा अपने महाराज से कह दो कि रुक्मिणी तुम्हें नहीं चाहती। यदि तुम वीरता का दावा रखते हो, तुम में पुरुषत्व है, तुम क्षत्रियोचित न्याय समझते हो तो रुक्मिणी को पाने की आशा छोड़कर घर लौट जाओ। मैं वस्त्राभूषण, पटरानी पद या तुम्हारे महाराज के आज्ञावर्ती रहने के प्रलोभन में नहीं पड़ सकती। मैं फटे-पुराने वस्त्र पहनकर अपनी लज्जा बचा लूँगी, परंतु उन वस्त्राभूषणों की ओर देखूँगी भी नहीं, जिनमें पाप भावना भरी हुई हैं। मैं पति की दासी बनकर जीवन बिताना चाहती हूँ, पटरानी बनने या पति को अपना सेवक बनाने की भावना मुझमें किंचित् भी नहीं है। यह इच्छा तो किन्हीं नीच स्त्रियों में ही हो सकती है और नीच स्त्रियाँ ही किसी प्रलोभन में पड़कर अपना धर्म खो सकती हैं। मुझसे तुम इस बात की आशा छोड़ दो और अपने महाराज से कह दो कि वे घर को लौट जाएँ। ऐसा करने पर उनकी बड़ाई होगी, उन्हें यश प्राप्त होगा और सज्जन लोग उनकी प्रशंसा करेंगे। मैं श्रीकृष्ण को अपना पति मान चुकी हूँ। इस कारण तुम्हारे महाराज के लिए पर-स्त्री हूँ। पराई स्त्री को अपनी स्त्री बनाने का प्रयत्न करना नीच पुरुषों का काम है। इस नीच मनोवृत्ति को त्यागने में ही तुम्हारे महाराज की शोभा है।

दूती—वाह राजकुमारी वाह! पहले तो आप बोली ही नहीं और बोली तो यह बोली। हमारे महाराज आपके यहाँ बिना बुलाए नहीं आए हैं। यहाँ से टीका गया था तब आए हैं। वे पृथ्वी पर साक्षात् इंद्र के समान हैं। ऐसी कौन अभागिनी स्त्री होगी जो उनकी पत्नी बनने का सौभाग्य ठुकराए? आप कुछ विचार कर तो बोली होती!

रुक्मिणी—ऐसे इंद्र के लिए तो ऐसी इंद्राणी की ही आवश्यकता है। इसलिए अपने महाराज से कहो कि वे किसी ऐसी इंद्राणी को ढूँढें। मुझे ऐसा सौभाग्य नहीं चाहिए।

दूती—राजकुमारी! जब टीका चढ़ा है और बारात सजकर आई है, तब विवाह तो अवश्य ही होगा। यदि आप सरलता, प्रसन्नता से न मानेंगी तो किसी दूसरे उपाय से मनाया जाएगा, परंतु विवाह अवश्य होगा। महाराज ने तो हमें यह विचार कर आपका शृंगार करने के लिए भेजा कि यदि आप सीधी तरह मान जाएँ तो बल प्रयोग न करना पड़े। सीधी तरह मान जाने में आपकी भी प्रतिष्ठा है।

रुक्मिणी—बस, अधिक कुछ मत कहो और यहाँ से चली जाओ। यदि तुम सीधी तरह न जाओगी तो तुम्हें बलात् निकलवा दूँगी।

दूतियाँ रुक्मिणी को कुछ भय दिखाती हुई कहने लगीं कि यदि आपको हमारे महाराज के साथ विवाह नहीं करना था तो यह बात अपने भाई से कहती, जिससे वह टीका भेजकर बारात तो न बुलवाते। उनसे तो कुछ कहा नहीं और हम पर क्रोध जताती हो। क्या हमारा कोई स्वामी ही नहीं है, जो आप हमारा तिरस्कार कर रही हो?

रुक्मिणी ने समझ लिया ये दूतियाँ यहाँ से सीधी तरह नहीं जाएँगी। ये तो प्रपंच के उद्देश्य से ही आई हैं। उसने अपनी दासियों को आज्ञा दी कि दूतियों को यहाँ से निकाल दो। इनकी यह सामग्री उठाकर फेंक दो और इनका ऐसा सत्कार भी कर दो जिससे भविष्य में इन्हें किसी स्त्री को ठगने का दुःसाहस नहीं हो। रुक्मिणी की आज्ञा पाते ही रुक्मिणी की दासियों ने उन दूतियों को पीटकर बाहर निकाल दिया और उनके लाए हुए

वस्त्राभूषणादि को थालों सहित उठाकर फेंक दिया। दूतियाँ रोती-चिल्लाती वस्त्राभूषणों को एकत्रित कर अपना-सा मुँह लिए चली गईं। उन्हें यह भय हो रहा था कि हमने शिशुपाल के सामने अपनी प्रशंसा की थी, परंतु अब मार खाकर भी हम उन्हें अपना मुँह कैसे दिखाएँगी? अंत में त्रिया चरित्र का अवलंबन लेकर वे रोती हुई शिशुपाल के सामने आईं। शिशुपाल उत्सुकतावश दूतियों की प्रतीक्षा कर रहा था। दूतियों के कथन से उसे रुक्मिणी की प्राप्ति की बहुत आशा हो गई थी, परंतु सहसा रुदन करती हुई दूतियों को सामने देखकर उसकी तात्कालिक आशा मिट गई। उसने आश्चर्यपूर्वक दूतियों से पूछा कि तुम तो रुक्मिणी को समझाने गई थीं, फिर इस प्रकार रोती हुई कैसे आईं? दूतियों ने शिशुपाल के सामने रुक्मिणी की अत्युक्तिपूर्ण शिकायत कीं। रुक्मिणी द्वारा अपना और अपनी दासियों का इस प्रकार अपमान सुनकर शिशुपाल को बहुत ही क्रोध आया। वह कहने लगा— एक लड़की का इतना दुःसाहस! अभी पकड़ मँगवाता हूँ और उसकी बुद्धि ठिकाने लाए देता हूँ। मेरे योद्धाओ! जाओ रुक्मिणी का महल घेर लो और उसे पकड़कर मेरे सामने उपस्थित करो।

साभार— श्री जवाहर किरणावली-5
(रुक्मिणी-विवाह)

—क्रमशः

भक्ति रस

विनय
मोक्ष का द्वार है

– बी. शांतिलाल पोकरणा, विजयनगर

विनय मोक्ष का द्वार है,
बिना विनय न हुआ भवपार है।
अहंकार शून्य के भावों से,
प्रतिफलित होता विनय।
विनय जीवन का शृंगार है।।

ज्ञान आराधना हो विनय से,
तभी आत्मज्ञान के विवेक को जगा पाओगे।
विनय है ज्ञान प्रकाश का पुँज,
तभी अंतरतम को प्रकाशित कर पाओगे।
विनय हृदय का हार है।।

जप-तप-ज्ञान प्राप्त होता विनय से,
विनय से सम्यक्त्व का भाव पाओगे।
विनय है मूल धर्म का,
धर्म को हर भव साथ पाओगे।
विनय जिनशासन की शान है।।

विनयवान शिरोमणि गणधर गौतम,
हर भव याद किए जाएँगे।
विनय है भवसागर का जहाज,
जिनवाणी का संबल ले, पार हो जाएँगे।
विनय गुणीजनों के प्रति मंगल भाव है।।
विनय मोक्ष का द्वार है।।

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

29-30 अगस्त 2024 अंक से आगे...

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

गति

प्र.2535 नरकगतिक और देवगतिक में 3 अज्ञान की भजना किस अपेक्षा से कही गई है?

उत्तर
1. जो असंज्ञी पंचेंद्रिय नरक और देव गति में जाते हैं, उनको बोध की मंदता के कारण बाटे बहते में विभंगज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है, किंतु
2. जो मिथ्यादृष्टि संज्ञी पंचेंद्रिय इन दोनों गतियों में जाते हैं, उन्हें बाटे बहते में ही विभंगज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

इसलिए 3 अज्ञान की भजना कही गई है।

इंद्रिय

प्र.2536 सइंद्रिय और अनिंद्रिय जीवों में कितने ज्ञान-अज्ञान पाए जाते हैं?

उत्तर
1. सइंद्रिय और पंचेंद्रिय में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. तीन विकलेंद्रिय में 2 ज्ञान 2 अज्ञान की नियमा।
3. एकेंद्रिय में 2 अज्ञान की नियमा।
4. अनिंद्रिय में केवलज्ञान की नियमा।

काय

प्र.2537 सकायिक यावत् अकायिक जीवों में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर
1. सकायिक और त्रसकायिक में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकाय में 2 अज्ञान की नियमा।
3. अकायिक (सिद्ध भगवान) में केवलज्ञान की नियमा।

सूक्ष्म बादर

प्र.2538 सूक्ष्म, बादर और नोसूक्ष्म-नोबादर में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर
1. सूक्ष्म में 2 अज्ञान की नियमा।
2. बादर में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
3. नोसूक्ष्म-नोबादर (सिद्ध भगवान) में केवलज्ञान की नियमा।

प्र.2539 सिद्ध भगवान को नोसूक्ष्म-नोबादर क्यों कहते हैं?

उत्तर सिद्ध भगवान के न तो सूक्ष्म नाम कर्म का उदय है, न बादर नाम कर्म का, इसलिए वे नोसूक्ष्म-नोबादर कहलाते हैं।

पर्याप्ति

प्र.2540 पर्याप्त जीवों में ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए। (अपर्याप्त का वर्णन थोकड़े में देखें)

उत्तर
1. पहली नरक से नवग्रैवेयक तक

3 ज्ञान 3 अज्ञान की नियमा।

2. 5 अनुत्तर विमान में 3 ज्ञान की नियमा।
3. 5 स्थावर, 3 विकलेंद्रिय और असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय में 2 अज्ञान की नियमा।
4. संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय में 3 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
5. मनुष्य में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

प्र.2541 नैरयिक, देवता में भव-प्रत्यय अवधि होता है, फिर प्रथम पृथ्वी के नैरयिकों में और भवनपति, वाणव्यंतर के अपर्याप्त में विभंगज्ञान की भजना क्यों है?

उत्तर इन तीन स्थानों में संज्ञी और असंज्ञी पंचेंद्रिय जाते हैं। असंज्ञी पंचेंद्रिय को पर्याप्त होने पर विभंगज्ञान होता है, जबकि संज्ञी पंचेंद्रिय को अपर्याप्त अवस्था में भी विभंगज्ञान होता है, इसलिए विभंगज्ञान की भजना कही गई है।

भवस्थ

प्र.2542 भवस्थ और अभवस्थ जीवों के ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. नरक और देव भवस्थ में 3 ज्ञान की नियमा 3 अज्ञान की भजना।
2. तिर्यंच भवस्थ में 3 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
3. मनुष्य भवस्थ में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
4. अभवस्थ (सिद्ध भगवान) में केवलज्ञान की नियमा।

प्र.2543 भवस्थ किसे कहते हैं?

उत्तर कर्मवश प्राणी जहाँ उत्पन्न होते हैं, उसे भव कहते हैं। भव में रहे हुए जीव भवस्थ कहलाते हैं।

प्र.2544 सिद्ध भगवान को अभवस्थ क्यों कहते हैं?

उत्तर सिद्ध भगवान कर्म रहित होने के कारण भव रहित होते हैं, इसलिए वे अभवस्थ कहलाते हैं।

भवसिद्धिक

प्र.2545 भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक और नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर
1. भवसिद्धिक में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. अभवसिद्धिक में 3 अज्ञान की भजना।
3. नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक (सिद्ध भगवान) में केवलज्ञान की नियमा।

संज्ञी

प्र.2546 संज्ञी आदि में ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. संज्ञी में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. असंज्ञी में 2 ज्ञान 2 अज्ञान की नियमा।
3. नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी में केवलज्ञान की नियमा।

ज्ञान लब्धि

प्र.2547 मति-श्रुतज्ञान लब्धि में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर मति-श्रुतज्ञान लब्धि में 4 ज्ञान की भजना (अनिश्चित) अर्थात् इनमें 2 या 3 या 4 ज्ञान होते हैं। सम्यग्दृष्टि छद्मस्थ में दोनों ज्ञान अवश्य होते हैं।

प्र.2548 मति-श्रुतज्ञान अलब्धि (अप्राप्ति) में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर मति-श्रुतज्ञान अलब्धि में 3 अज्ञान की भजना यानी 2 या 3 अज्ञान होते हैं अथवा केवलज्ञान की नियमा होती है।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- भीलवाड़ा में शिखर महोत्सव में बन रहे कीर्तिमान। पर्युषण पर्व में लगभग 1400 तेले सहित 82 अठाई, उपवास, बेला, तेला, दीर्घ तपस्याएँ, नवरंगी, पचरंगी, संवर, दया, पौषध, एकासन, आठों दिन 24 घंटे अखंड नवकार मंत्र जाप सहित त्याग-तप की अनुपम छटा रही। जैन-जैनेतर सभी कर रहे जीवन पावन। संवत्सरी पर 500 से अधिक पौषध संपन्न। अंतकृद्दशांग सूत्र का प्रतिदिन वाचन एवं विवेचन।
- बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर का आह्वान - प्रतिदिन 32 शास्त्रों की 75 हजार मूल गाथाओं का स्वाध्याय कर सुश्रावक-सुश्राविका बनने की ओर कदम बढ़ाएँ।
- श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. के मासखमण तप का पारणा, कांकरोली में विराजित साध्वी श्री रविप्रभा जी म.सा. के 54 उपवास सहित चारित्रात्माओं में त्याग-तप की अद्‌भुत लहर। तप अनुमोदनार्थ अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।
- श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति व समता युवा संघ का वार्षिक अधिवेशन 2-4 अक्टूबर 2024 को भीलवाड़ा में आयोजित होगा। इस अवसर पर संघ विकास सर्वांगीण विकास संयुक्त बैठक, महत्तम शिखर सम्मेलन, संयुक्त वार्षिक अधिवेशन, वार्षिक आमसभा एवं कार्यसमिति बैठक आदि कार्यक्रम संपन्न होंगे।
- महत्तम शिखर वर्ष के अंतर्गत 21-22 सितंबर 2024 को बेंगलुरु में महत्तम शिखर आयोजन समिति द्वारा द्वि-दिवसीय '**ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन**' में आगामी रूपरेखा के साथ विभिन्न विषयों पर हुआ मंथन।
- मुमुक्षु करिश्मा जी लुणिया की जैन भागवती दीक्षा 7 फरवरी 2025 हेतु घोषित।
- आलोचना शिविर, श्रावक के 12 व्रत शिविर, धर्मपाल बालिका शिविर, महिला त्रि-दिवसीय शिविर, संवर धार्मिक परीक्षा आदि धार्मिक आयोजन से ज्ञानार्जन की दिशा में बढ़ रहे सभी।
- 100 वर्षीय वीर दादी सुंदर देवी कटारिया, मैसूर ने लिया गुरुदर्शन का लाभ।
- महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना के संकल्प अनेक जनों ने लिए।
- उपाध्याय प्रवर द्वारा 108 अठाई तप करने का आह्वान।
- भीलवाड़ा जिला कलक्टर नमित जी मेहता, राजस्थान सरकार बाल विकास मंत्री मंजू जी बाघमार, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन जी राठौड़, भीलवाड़ा सांसद दामोदर जी अग्रवाल, विधायक अशोक जी कोठारी, भाजपा भीलवाड़ा जिलाध्यक्ष प्रशांत जी, पार्षद पाराशर जी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- सामूहिक क्षमापना पर विभिन्न संप्रदायों के प्रमुखों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर क्षमायाचना के भाव रखे।
- महावीर नगर, भीलवाड़ा में साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में पर्युषण पर्व में लगभग 500 एकासन, आयंबिल, 20 तेले, पाँच, अठाई व ग्यारह सहित तपस्याओं का ठाठ व प्रतिदिन 13 घंटे नवकार मंत्र जाप हुआ।

भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार

जहाँ राम गुरु की महर है। वहाँ संयम साधना की लहर है।।

युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के शिखर महोत्सव चातुर्मास में कीर्तिमानों की झड़ी

भीलवाड़ा में पर्युषण पर्व की अनुपम छटा, संतों में चौरंगी तप, साध्वियों में पचरंगी तप, श्रावक-श्राविकाओं में नवरंगी तप के साथ पर्युषण पर्व के शुभारंभ पर लगभग 1400 तेले, 82 अठाइयाँ, नौ एवं अन्य तपाराधना की धूम, 24 घंटे अखंड नवकार मंत्र जाप, 200 पच्चक्खाण, पर्युषण के रंग, ज्ञान-ध्यान के संग कार्यक्रम संपन्न

मुमुक्षु करिश्मा जी लुणिया की दीक्षा 7 फरवरी 2025 के लिए घोषित

अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी एवं प्रवचन पांडाल, प्राथमिक विद्यालय, धांधोलाई, भीलवाड़ा।

रामेशाचार्य तपोनिधि, श्रुत चारित्र महान।
शीश झुका वंदन करूँ, नाना गुण की खान।।
राजेश मुनिवर श्रुतनिधि, उपाध्याय गुणधाम।
नमन वाचनाचार्य को, बहुश्रुत हो अभिराम।।

पंचम आरे में चौथे आरे का अहसास कराने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-23 तथा शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा-43 के पावन सान्निध्य में आत्मशुद्धि का महान पर्व

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व अपूर्व धर्म-तप आराधना के साथ उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। देश-विदेश से हजारों श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर आराध्यदेव से एक नई ऊर्जा प्राप्त की। चारित्रात्माओं के अलावा श्रावक-श्राविका वर्ग में तपस्या की होड़ लग गई। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के आगमसम्मत, क्रांतिकारी, हृदयस्पर्शी प्रवचनों से धर्म प्रेमी जनता आत्मतृप्त हो गई। '**200 पच्चक्खाण**', '**पर्युषण के रंग ज्ञान-ध्यान के संग**' परीक्षा प्रश्न-पत्र आदि संपन्न हुए। भाइयों व बहनों में अलग-अलग 24 घंटे अखंड नवकार मंत्र का जाप हुआ। गुरुकृपा से संत वर्ग में चौरंगी तप, साध्वी वर्ग में पचरंगी तप, श्रावक-श्राविका वर्ग में नवरंगी तप, षट्रस त्याग तप के साथ ही अनेक मासखमण, 1400 तेले, 82 अठाइयाँ, नौ आदि प्रचुर मात्रा में तपाराधना से पर्युषण पर्व सार्थक हो गए। श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, बहू मंडल, बालिका मंडल एवं अरिहंत भवन आर.के. कॉलोनी, सुभाष नगर जैन स्थानक, सकल जैन समाज, भीलवाड़ा की धर्मनिष्ठा सराहनीय है।

क्षमा, सद्गुणों का भंडार है - आचार्य भगवन्

आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में - उपाध्याय प्रवर

जैन धर्म के सबसे बड़े पर्व पर्वाधिराज 'पर्युषण' का आगाज, समवसरण का अद्भुत नजारा

पर्युषण पर्व मानवता का पर्व है, पर्युषण पर्व उज्ज्वलता का पर्व है।
अपेक्षा है अंतःकरण सरल हो, पर्युषण पर्व आत्म आलोचन का पर्व है।।

1 सितंबर 2024। जैन धर्म का सबसे बड़ा आध्यात्मिक पर्व पर्युषण पर भगवान महावीर के 82वें पट्टधर, युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में धर्माराधना करने का परम सौभाग्य भीलवाड़ा संघ एवं देश-विदेश से आगत श्रद्धालु भाई-बहनों को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर आयोजित विशाल धर्मसभा में पर्व का मर्म उजागर करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने -

पर्युषण की आई रे बहार, भीलवाड़ा नगरी में।
जागो-जागो करे मनुहार, भीलवाड़ा नगरी में।।

भजन की मधुर स्वरलहरी के साथ अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**भादवे में यदि श्रावकों का मन नहीं खिला, पर्युषण में यदि जैनियों का मन नहीं खिला, तो वह जैनी कैसा? यह पर्व पर्युषण प्रीत लगाने वाला है। हमने राजकुमारों का वर्णन सुना है। गौतम आदि राजकुमारों की भगवान अरिष्टनेमि से ऐसी प्रीत लगी कि उनके भाव जाग गए कि मुझे राज्य, सुविधाएँ, मान-सम्मान आदि नहीं चाहिए। मुझे तो बस भगवान की शरण चाहिए। उन्होंने अपना वीरत्व जागृत किया और भगवान से प्रीत लगाई। वैसी ही प्रीत हमारी धर्म से लगनी चाहिए। कण-कण में धर्म के संस्कार गहरे होने चाहिए। पर्व ऐसे मनाना है कि हमारी आत्मा तृप्त हो जाए। पर्युषण में यदि प्रीत नहीं लगी तो कब लगेगी? यह पर्व पर्युषण महान पुण्यवानी के योग से मिला है। यह पर्व भौतिक नहीं, आध्यात्मिक पर्व है। यहाँ पर आत्मा का अन्वेषण,**

आत्मचिंतन करने का अवसर है। अधिक से अधिक त्याग-तपस्या करनी है, जिससे हमारा ममत्व कम हो जाए और क्रोध, मान, माया, लोभ की छाया भी हमारे भीतर प्रवेश न कर पाए। जिसका मन तड़क-भड़क में लगा रहेगा, उसको आत्म-साधना का सुंदर अवसर नहीं मिलेगा। जितनी तपस्या हो सके करें। मन में कोई खोट नहीं रखें। अभी भी खोट नहीं निकली तो कब निकलेगी? वर्तमान हमारे हाथ में है। वर्तमान को अच्छा बना लें। 200 पच्चक्खाण के माध्यम से हम अपना मोह, आसक्ति कम करें। पर्युषण हमें संदेश दे रहा है कि मन में जो भी वैर-विरोध है उसको मन से निकालो। जिनवाणी से मन को साफ-सुथरा बना लो। जीना है तो धर्म के लिए और मरना है तो धर्म के लिए।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु और गुण दोनों की समान राशि है। आचार्य भगवन् ने आध्यात्मिक आरोग्यम् में प्रथम बिंदु गुणदृष्टि का विकास, द्वितीय बिंदु गुणगान, तृतीय बिंदु गुण ग्रहण, चौथा बिंदु गुण विकास समाहित किया है। पहला सरल है, जो थोड़े प्रयत्न की अपेक्षा करता है। दूसरा, तीसरा भी कठिन नहीं है। चौथा बिंदु कठिन है। आचार्यों के गुणों को हम अपने भीतर उतारने का प्रयास करें। संयमी जीवन में जो कुछ भी करना है, कर्म निर्जरा के लिए करना है। हम मात्र गुणदर्शन तक सीमित नहीं रहें, अपितु गुणों का विकास करें। पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. ने बूँदी में प्रवचन सुना। यौवन से दमकते चेहरे के साथ आए तो व्यापार के लिए थे, पर भीतर की दशा बदल गई। मात्र सुनने के लिए प्रवचन नहीं सुना। जीवन बदलने के लिए हजारों क्षणों की जरूरत नहीं है। भीतर की शक्ति को केंद्रित कर अपमान, सहिष्णुता का कभी प्रतिकार नहीं करते हुए जिसके भीतर अपमान सहन करने की शक्ति बढ़ती है तो उसकी साधना बढ़ती जाती है। यह कब पैदा होती है? जब साधक यह देखता है कि मेरा सुख–दु:ख मुझ पर निर्भर है। कौन मुझे क्या समझ रहा है, यह मेरा सुख–दु:ख नहीं है। हमारा जीवन निर्जरा व साधना के लिए है। उनके चरण यश–कीर्ति के लिए नहीं, अपितु तप–साधना के लिए बढ़े थे। उनका जीवन निर्लिप्त था। उन्होंने मात्र 13 द्रव्यों से ही जीवन निर्वाह किया। बात द्रव्यों की नहीं, मन की संतुष्टि की है। कितनी ही चीजें खाएँ फिर भी अतृप्ति का भाव रहता है तो यह अच्छा सूचक नहीं है। सिद्धि को एक शब्द में कहें तो उसे तृप्ति कहेंगे। आचार्यश्री होली चातुर्मासार्थ जोधपुर पधार रहे थे। जोधपुर में पहले से जिनका चातुर्मास था उनका मन दु:खी हो रहा था कि इनका चातुर्मास होगा तो मुझे कौन पूछेगा। जब आचार्यश्री को इस बात का पता चला तो उन्होंने फलोदी में चातुर्मास किया। उन्हें यश–कीर्ति की चाह नहीं थी।''**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का सुंदर वाचन–विवेचन करते हुए फरमाया कि इस शास्त्र में चरम शरीरी उसी भव में मुक्ति प्राप्त करने वाली 90 आत्माओं का वर्णन किया गया है। कर्मक्षय की दिशा में यह सूत्र सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। तपस्याओं के माध्यम से उन्होंने अपनी आत्माओं को भावित किया। हम भी तप–त्याग के माध्यम से कर्मों को क्षय कर परम मंजिल को प्राप्त करें।

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा., साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. ने दीर्घ तपस्या कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया। साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि न किसी की निंदा करो और न किसी की निंदा सुनो तो ही पर्युषण पर्व मनाना सार्थक हो पाएगा। जिंदगी में एक अठाई या मासखमण नहीं किया तो क्या किया! आपश्रीजी ने ***'अहिंसा नो एरोड्रम तप नी प्लेन जाये छै'*** अहिंसा एवं तप से ओत–प्रोत गुजराती भजन प्रस्तुत किया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री राजन मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा. आदि

संतों ने ***'हैमगिरि जी म.सा. के मासखमण तप है आज, खिली है क्यारी तप की महिमा भारी'*** तप गीत प्रस्तुत किया। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि तप, संयम, स्वाध्याय से मोक्ष को पाना है। गुरुकृपा से ही आज यह तप पूर्ण हुआ है।

संघ मंत्री ने त्याग-पच्चक्खाण करने की प्रेरणा देते हुए इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने की अपील की। 1008 से अधिक तेले तप की आराधना में कई भाई-बहनों ने भाग लिया। अन्य कई प्रत्याख्यान हुए। आठ दिन व्यापार बंद रखने का संकल्प अनेक जनों ने लिया। मासखमण तपस्वी श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने पूर्व में एक से ग्यारह उपवास की लड़ी, सिद्धि तप व कई बेले तप गुरुकृपा से किए हैं। आठ दिन तक शीलव्रत, रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद त्याग सहित अनेक प्रत्याख्यान हुए। दो जैनेतर कैलाश जी शर्मा व श्रवण जी शर्मा ने तेले तप के प्रत्याख्यान लिए। भाई-बहनों में अलग-अलग आठों ही दिन चौबीस घंटे नवकार मंत्र का अखंड जाप हुआ। 200 प्रत्याख्यान भरने में लोगों ने अपूर्व उत्साह का परिचय दिया। आलोचना शिविर में साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने ***'गुरुवर तुमको पाकर आराधक बनना है'*** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि छोटी-बड़ी गलतियों का अवलोकन हमें करना चाहिए। आलोचना का अर्थ है, जो हमारे द्वारा आचरित है उसे देखना। उसे गुरु के समक्ष प्रकट करना। पुन: गलती नहीं दोहराने का लक्ष्य रखना। हमारा सुधरने का लक्ष्य होना चाहिए। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए। सायंकालीन प्रतिक्रमण में श्रावकों की उपस्थिति देखते ही बनती थी। प्रतिक्रमण पश्चात् संतों के सान्निध्य में प्रभु व गुरुभक्ति व संयम के गीतों ने सबको भावविभोर कर दिया। संवर में अपूर्व उत्साह परिलक्षित हुआ।

धर्म श्रद्धा से आनंद की प्राप्ति

2 सितंबर 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में ***'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'*** की मधुर स्वरलहरी से संपूर्ण माहौल पावन हो गया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए जगत् उद्धारक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना से उपस्थित अपार जनसमूह को भगवान महावीर की अमृतवाणी से परिचित कराते हुए फरमाया कि ''**हर कोई आत्मा कल्याण नहीं कर पाती। कल्याण करने के लिए भीतर में क्षमता होनी चाहिए। जो स्वयं आनंद में होगा वही दूसरों को आनंद दे पाएगा। हम जिनको वंदन करते हैं वे आनंद देने वाले हैं। आनंद को प्राप्त करने के लिए मन में कोई दूसरी कामना नहीं होनी चाहिए कि मेरा भौतिक कार्य पूरा हो जाए या अन्य कोई कामना पूर्ण हो जाए। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की प्राप्ति से आनंद प्राप्त होता है। आनंद हमारी आत्मा में भरा हुआ है। जो आत्मा में रमण करने वाला होता है उसी में ज्ञान, दर्शन, चारित्र की सही आराधना हो पाती है। तन जाए तो जाए, किंतु हमारा सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। जो झूठा होता है वह डरता है और जो झूठा नहीं होता उसको डर नहीं लगता। क्योंकि उसे मालूम होता है कि मेरी आत्मा सत्य है। मैं सत्य से साक्षात्कार कर रहा हूँ। हमारी श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए। धर्म की श्रद्धा से धर्म व आनंद की प्राप्ति होती है। पाँच इंद्रियों में रमा हुआ व्यक्ति उनसे विरक्त हो जाता है। आत्मरमण की अवस्था निर्भय की अवस्था है। एक-एक क्षण में नरभव बीत रहा है। निरंतर हमारा आयुष्य घट रहा है। अब तक धन बढ़ा या धर्म बढ़ा, यह आत्मचिंतन करें। पर्व पर्युषण का मौका मिला है। हम सही दिशा में आगे बढ़ें। आज साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. मासखमण पर आरूढ़ हुए हैं।**''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी तेजस्वी वाणी में '**आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में**' गीत प्रस्तुत करते हुए आचार्यों की गौरवशाली गाथा के हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुतिकरण में पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के प्रति समर्पित रंगू जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि ''**ठाकुर की कुदृष्टि रंगू जी पर पड़ गई। ठाकुर को अपनी शक्ति का अभिमान था। रंगू जी ने दूसरा विवाह करने का नहीं सोचा क्योंकि उन्होंने शील को महत्त्व दिया। शील के पालन के लिए वे खिड़की से कूदकर ऊँट पर सवार हो गईं। वह ऊँट रंगू जी को नीमच ले आया और ऊँट गायब हो गया। ब्रह्मचर्य का अद्भुत तेज होता है। हमारे कण-कण में ब्रह्मचर्य का प्रभाव होना चाहिए। ब्रह्मचर्य की शक्ति बहुत महान है। बाद में रंगू जी की दीक्षा हुई। धामनिया वाले बोड़ावत जी ने पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की खूब सेवा की। उन्हें वैराग्य जग गया। दृढ़-निश्चयी व्यक्ति संयम लेने से नहीं घबराता। शिवलाल जी ने भावना बनने के बाद धामनिया में दीक्षा ली। शुभ कार्य में किंचित् भी देरी नहीं करनी चाहिए। आज के लोग संयम लेने में देरी करते हैं। आचार्य श्री शिवलाल जी म.सा. की तप साधना अद्भुत थी। आचार्य श्री शिवलाल जी म.सा. के बाद श्री उदयसागर जी म.सा. आचार्य बने। उनका जीवन अनेक मौलिक गुणों से संपन्न था। उनमें से एक अनिवार्य गुण सभी में होना चाहिए। अंतर् की आवाज के सामने सभी आवाजों को गौण कर देना। पगड़ी गिरने पर अंतर् से आवाज आई कि गिरी हुई पाग नहीं पहननी है। मतलब अब शादी नहीं करनी है। यह घटना हमें सिखाती है कि अंतर् की आवाज को साकार करने में किंचित् भी देरी नहीं करनी। श्री उदयसागर जी म.सा. ने अपनी निर्मल संयमी बुद्धि से शास्त्रार्थ में एक महान आचार्य को पराजित कर दिया। जीवों को बचाने के लिए वे सर्दी में सुबह व गर्मी में दिन में विहार करते थे।**''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का सुंदर वाचन व विवेचन करते हुए सुपात्रदान की महिमा का वर्णन किया। साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जैसा बोएँगे वैसा फल पाएँगे। जैसी रुचि होती है वैसा कार्य होता है। हमें देव, गुरु, धर्म के प्रति अहोभाव रखना है तभी हमारा जीवन सार्थक होगा। साध्वी श्री सुनेहा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संयम शतक के आह्वान को 2025 से पूर्व सन् 2024 में ही पूर्ण करना है। साध्वीवर्याओं ने ***'कर्म खपाना है, मुक्ति को पाना है'*** सुंदर भाव गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने तपस्या में सभी को आगे आने का आह्वान किया। एक घंटा मौन रहने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने ग्रहण किया।

साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. के 30 उपवास पूर्ण हुए। आपश्री जी ने पूर्व में दो बार अठाई, 11, 9 एवं मासखमण आदि तप किए हैं। पाँच वर्षीय बालिका नूतन लुणावत, चेन्नई ने उपवास किया तथा लोच करवाया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री गौरव मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा. आदि संतरत्नों ने ***'अहो अहो मेरे भगवन् सुहाने दर्शन हो'*** भक्ति गीत प्रस्तुत किया। आलोचना शिविर में साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि लोभ पाप का बाप है। जैसे-जैसे लाभ बढ़ता जाता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता जाता है। क्या कभी अपने हाथ से दान देने की भावना बनी? उसमें भी गुप्तदान या नाम करने की भावना बनी? क्या हम सदैव फ्री वस्तु पाने की तलाश में रहते हैं? क्या पारिवारिक संपत्ति के बँटवारे में ज्यादा लेने की भावना रहती है? आत्मचिंतन करें। धार्मिक प्रश्न-पत्र जैन सिद्धांत बत्तीसी के आधार पर हुए। अखंड नवकार मंत्र के जाप में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

नवरंगी, पचरंगी तप के अलावा सामायिक संवर, दया, पौषध, एकासन, उपवास, बेला, तेला, अठाई आदि में अपूर्व उत्साह देखने को मिला। श्री विदेह मुनि जी म.सा. एवं श्री पल्लव श्री जी म.सा. के सांसारिक वीर दादीजी

100 वर्षीय सुंदर देवी कटारिया, मैसूर ने गुरुदर्शन कर जीवन पावन बनाया।

हर समस्या का समाधान है

3 सितंबर 2024। मंगलमय प्रार्थना द्वारा प्रभु एवं गुरुभक्ति पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित अपार जनमेदिनी से पूरित धर्मसभा को आगमों के मूल भावों से पावन करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''कोई भी कार्य असंभव नहीं है। इस युग में जहाँ वैज्ञानिक चंद्रयान से यात्रा कराने के लिए तैयार हैं। आकाश में उड़ रहे हैं। पाताल में जा रहे हैं। सारे कार्य संभव हैं, बशर्ते कि हमारी मति उसके अनुकूल हो जाए। बहुत से लोग अपनी जिंदगी को क्लिष्ट बना लेते हैं और दुःखी हो जाते हैं। यह दुःख मानसिक दुःख है। प्रत्येक समस्या का समाधान है। दुनिया में ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान न हो। दुःख की बात यह है कि जिस वस्तु की जरूरत नहीं है, फिर भी वो वस्तु हमें चाहिए। दूसरे के पास नया मोबाइल देखकर कहेंगे कि उसके पास ऐसा मोबाइल है तो मेरे पास भी होना चाहिए या अन्य अमुक वस्तु तो मेरे पास भी होनी चाहिए। जैसे-जैसे लाभ होगा, वैसे-वैसे लोभ बढ़ेगा। लोभ, लालच का अंत नहीं है। हमारा एक ही लक्ष्य रहता है कि मेरी चाह पूरी होनी चाहिए और जैसे ही हम वहाँ तक पहुँचेंगे तो दो कदम और आगे बढ़ाने की सोचेंगे, जिससे फिर नई समस्या खड़ी हो जाएगी। देवकी महारानी ने अरिष्टनेमि भगवान से अपनी समस्या का समाधान लिया। संतान के प्रति माता का दायित्व पूर्ण किया। कच्चे घड़े को जितना संस्कारित करना चाहेंगे उतना कर सकते हैं, किंतु पक्के घड़े को संस्कारित करना कठिन है। बच्चों को प्रारंभ से संस्कार देने चाहिए।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में गौरवशाली आचार्यों की जीवन गाथा का हृदयस्पर्शी वर्णन करते हुए फरमाया कि **''जहाँ भी गुण दिखें तो उन गुणों को अपनाएँ। गुणों को स्वयं में समाहित कर विकास किया जा सकता है। गुणों को ग्रहण करने में ही जीवन की सार्थकता है। हमारा अंतर्मन, अंतर् का पुरुषार्थ जब सबल होगा तो एक ही उद्देश्य रहेगा कि हमारा जीवन गुणी बने। पूज्य आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. ने स्वयं में तो गुण भरे ही, साथ ही अपने शिष्यों में भी गुणों को समाविष्ट किया। जो जीवन को बदलना चाहता है, जो अच्छा बनना चाहता है, उसे विनय भाव से शिक्षा लेनी चाहिए। हमारी जड़ों में, भावनाओं की तह में अच्छा दिखने की चाह है, लेकिन उतना ही अच्छा बनने की चाह होनी चाहिए। एक बार अपने मन में सोचना है कि जब कभी हमें कठोर शब्द कहे जाते हैं, उस समय हमारा मन कहने वाले के प्रति विनय, आदर से भरा होता है क्या? पूज्य श्री उदयसागर जी म.सा. के पश्चात् आचार्य श्री चौथमल जी म.सा. उनके पाट पर विराजे। शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद भी स्वयं प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य रखते थे। आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. संयम के प्रति जागरूक थे। ब्रह्मचर्य के विषय पर प्रवचन सुनने के बाद उनके मन में संकल्प हुआ कि मैं आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।''**

प्रतिदिन 9 नवकार,
9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं
के साथ
9 बार गुरुवंदना

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने पर्युषण पर्व के तीसरे दिन अंतकृद्दशांग सूत्र का हिंदी विवेचन करते हुए ***'जय-जयकार पर्युषण... आओ हम सब मिल आराधें'*** गीत के साथ फरमाया कि हम लौकिक देवी-देवताओं को पूजते हैं, पर अपनी पुण्यवानी होगी तो ही मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। आपश्रीजी ने सच्चे देव, गुरु, धर्म पर अटूट श्रद्धा रखने की प्रेरणा दी।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इस शिखर महोत्सव में गुरुकृपा से 1008 तेले के आह्वान पर लगभग 1400 तेले संपन्न हुए हैं। अब तेला तप के बाद अपनी शक्ति को जगाकर अठाई एवं मासखमण तप की आराधना करें।

90 साल जीने वाला
अगर 8 घंटे सोने में लगा देता है
तो 30 साल व्यर्थ चले जाते हैं।
6 घंटे सोने वाला 22.5 साल
सोने में बीता देता है।

महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 फरवरी 2025 तक प्रतिदिन 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना करने का संकल्प भी अनेक जनों ने लिया। संवर विषय पर धार्मिक परीक्षा का आयोजन किया गया। आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं का आगमसम्मत सटीक समाधान हुआ। पूज्य उपाध्याय प्रवर ने चारित्रात्माओं को सुंदर शिक्षा दी।

आलोचना शिविर में साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जो हमेशा हँसता रहता है वो कभी गंभीर नहीं होता है। आंतरिक प्रसन्नता होनी चाहिए। क्या आप लोगों की नकल करते हैं? क्या आवाजें निकालकर हँसते हैं? काम करने से बचने के लिए बीमारी का बहाना बनाते हैं? महत्त्वपूर्ण कार्य को छोड़कर दूसरे कार्यों में लग जाते हैं? आपका लक्ष्य काम करने का कम व दिखावा करने का ज्यादा रहता है? तो आत्मचिंतन करें।

देश-विदेश से दर्शनार्थी अपने आराध्य देव के सान्निध्य को पाकर तप साधना में लीन रहे। साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 ने महावीर भवन में धर्मप्रेमी जनता को पर्युषण पर्व में धर्मबोध प्रदान किया।

आत्मा ही परमात्मा है

4 सितंबर 2024। भोर की मंगल प्रार्थना में ***'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'*** के द्वारा प्रभु आराधना की गई। आचार्य भगवन् के पावन चरणों में पर्युषण पर्वाराधना मनाने हेतु देश के अनेक स्थानों से गुरुभक्त धर्मनगरी भीलवाड़ा में उपस्थित हुए। प्रात:काल से ही श्रावक-श्राविकाओं की अपार उपस्थिति प्रार्थना, प्रवचन के साथ धार्मिक आयोजनों में नजर आती है। हर कोई गुरुचरणों में धर्माराधना कर अपना जीवन धन्य बनाने हेतु लालायित लग रहा था। आज की धर्मसभा में भी अपार जनमेदिनी को देखकर गुरु के प्रति अहोभावों का प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा था। तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में उपस्थित जनों को धर्म की महिमा बताते हुए फरमाया कि ''**अभिनंदन भगवान के दर्शन आनंददायक होते हैं। मुझे प्यास है कि उनके दर्शन हो जाएँ। दर्शन दुर्लभ है। दर्शन की दुर्लभता क्यों है? जितने भी प्रचलित मत-मतांतर, समुदाय हैं, उनसे जब पूछते हैं तो वे अपनी बात को सही बताते हैं। परंतु उनको दर्शन नहीं हो पाते हैं। बाहर के मत-मतांतर में उलझने से दर्शन नहीं होंगे। दर्शन तो अपने भीतर उतरने से होंगे। हमारे भीतर विचारों की उलझनें, झँझट आदि भरे पड़े हैं। उन विचारों में हम अपने आप में खोए रहते हैं और दर्शन दुर्लभ हो जाते हैं। आत्मा ही परमात्मा है। जिसने आत्मा के दर्शन कर लिए उसको परमात्मा के दर्शन हो गए समझो। आत्मदर्शन के बिना यह साधना आगे नहीं बढ़ पाएगी। जिसने अपनी पहचान नहीं की वह भगवान की पहचान नहीं**

कर पाएगा। जब कषायों से अपनी आत्मा को अलग करके देखेंगे तो हम जान पाएँगे कि मैं कौन हूँ। उपाध्याय यशोविजय जी ने सामायिक स्थिरता का रूप बताया है। हमारे भीतर स्थिरता कितनी आई? मन, वचन, काया की स्थिरता कितनी आई? पूणिया श्रावक की सामायिक की कीमत तो दूर की बात है। दलाली में 52 डूँगरी धन कम पड़ गया। सामायिक में चंचलता नहीं आई। राजा श्रेणिक के पहुँचने के बाद भी सामायिक में चंचलता नहीं आई। संभव का विचार पैदा होना चाहिए। मन में किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं आना चाहिए। जैसी अपनी आत्मा है वैसी ही दूसरों की आत्मा को समझना चाहिए। नाना गुरु की अनमोल देन समता दर्शन और व्यवहार से विश्व की समस्याओं का समाधान हो सकता है।''
आपश्री जी ने गजसुकुमाल के जीवन पर भी मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने '**आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में**' के अंतर्गत आचार्यों की गौरवगाथा में पूज्य आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. के उत्कृष्ट संयमी जीवन, दृढ़ संकल्प, स्वाध्याय, साधना, ब्रह्मचर्य से सभी को प्रेरणा देते हुए अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. को अनेक शास्त्र कंठस्थ थे। वे निद्रा विजेता भी थे। शास्त्रों में तीन घंटे की नींद को पर्याप्त माना है। भगवान महावीर भी निद्रा विजेता थे। निद्रा पर विजय प्राप्त करने वाला बहुमूल्य समय बचाता है। 90 साल जीने वाला अगर 8 घंटे सोने में लगा देता है तो 30 साल व्यर्थ चले जाते हैं। 6 घंटे सोने वाला 22.5 साल सोने में बीता देता है। जिसकी धर्म-जिज्ञासा में रुचि है वह ज्ञानी है। आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. आचार्य पद पर होने के बाद भी ज्ञान अर्जित करने में लगे रहते थे। ज्ञान का अवरोधक अभिमान है। जहाँ विनय व समर्पण होता है वहाँ ज्ञान की धारा बहती है। आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. ने एक चौमासे में निश्चय किया कि 25 लाख गाथाएँ चितारेंगे। ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व के गुणों का बखान कर्मनिर्जरा का प्रसंग है।**'' आपश्रीजी ने प्रतिदिन 32 शास्त्रों की 75 हजार मूल गाथाओं का स्वाध्याय करने का आह्वान श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ से किया। तुरंत इसे लागू करने की स्वीकृति राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवनीत जी राखेचा, शिरपुर ने दी।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का विवेचन करते हुए फरमाया कि गजसुकुमाल मुनि के समान हमें भी साधना में शीलवान, क्षमाशील, सहनशील बनना है। कठिनाइयों, कष्टों से घबराना नहीं है, उनका मुकाबला करना है। श्रीकृष्ण महाराज के समान सहयोग की भावना रखनी है।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि 1008 तेले के लक्ष्य को प्राप्त करते हुए लगभग 1400 तेले संपन्न हुए। यह बड़े ही हर्ष की बात है। अब हमें 1008 पौषध, संवत्सरी के पावन अवसर पर करने हैं। आचार्य भगवन् के इस चातुर्मास को यादगार बनाना है। साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संतरत्नों ने '***आता रहूँगा दर पे तुम्हारे, देना न देना तुम्हारी मर्जी***' गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. के पाँच उपवास की जैसे ही आचार्य भगवन् ने घोषणा की, संपूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय की ध्वनि से सभा गूँज उठी। वायदा बाजार, डिब्बा, जुआ नहीं खेलने का संकल्प कई भाइयों ने लिया।

अतृप्ति के कारण संसार में होता है जन्म-मरण

5 सितंबर 2024। प्रात: '***शांतिनाथ की जय बोलो***' भजन के साथ मंगलमय प्रार्थना से आत्मतृप्ति हुई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने उपस्थित जनसमूह को आत्मतृप्ति का भेद बताते हुए अपनी अमृतवाणी में फरमाया कि ''**सुमतिनाथ भगवान के चरणों में अपने आपको अर्पित कर**

दो। उनके चरण दर्पण की भाँति विकार रहित हैं। दर्पण भेदभाव नहीं करता। जिन्होंने भी आत्म-अर्पण किया है उन्होंने अनुभव किया होगा कि उनकी मति तृप्त हो गई। उनकी तृष्णा समाप्त हो गई। उनकी तृष्णा, आकांक्षाएँ नष्ट हो जाती हैं। हम अतृप्त होते हैं तो संसार बढ़ाते रहते हैं। अतृप्ति के कारण हम संसार में जन्म-मरण लेते हैं। अतृप्ति के कारण हमसे संसार नहीं छूटता, साधु नहीं बन पाते और धर्म की उत्कृष्ट आराधना करने में समर्थ नहीं हो पाते। मेरु पर्वत जितना भंडार मिल जाए, फिर भी व्यक्ति की तृष्णा शांत होने वाली नहीं है। धन तो बढ़ गया, पर संतोष नहीं बढ़ा। मृगावती भगवान के दर्शन करके तृप्त हो गई। तृप्ति देने वाला गुण है समभाव। समभाव की मूर्ति को देखते हैं तो हम तृप्त हो जाते हैं। संतों के पास जाने पर तृप्ति लगती है और तनाव दूर हो जाता है, क्योंकि उनके चेहरे पर निर्लेपता का भाव झलकता है। और... और... का अंत नहीं है। कितना भी मिल जाए संतुष्ट नहीं होंगे। भगवान ने द्वारिका नगरी के विनाश का कारण द्वैपायन ऋषि, शराब व अग्नि को बताया। उपाय के रूप में बताया कि यदि रोज एक आयंबिल होता रहेगा तो द्वारिका का विनाश नहीं होगा। कृष्ण वासुदेव ने धर्मदलाली करते हुए घोषणा करवा दी कि कोई भी साधु बनना चाहे तो उसके पीछे के रुकावट के कारण दूर करने का प्रयास करूँगा और उनके पीछे उनके आश्रितों की सार-सँभाल की व्यवस्था राजघराने से होती रहेगी। जो भी दीक्षा लेना चाहे, ले ले। इस घोषणा को सुनकर बहुत से लोग भगवान अरिष्टनेमि के चरणों में समर्पित हुए। हम भावों की विशुद्धता कब प्रदर्शित करेंगे?''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्य ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''एक बार आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. प्रवचन फरमा रहे थे। अचानक आँखों की ज्योति मंद पड़ गई। आचार्यश्री ने फरमाया कि जिस दिन दैनिक नियम न कर सकूँ वह दिन मेरा अंतिम समय होगा। इसका तात्पर्य है कि जब तक मारणांतिक कष्ट ना आएँ तब तक दैनिक साधना करनी है। चाहे कैसी भी बीमारी हो जाए। साधना में निरंतरता बहुत बड़ी ताकत देने वाली है। हम दुनिया के चमत्कारों और अनेक अनुकूलताओं की इच्छा करते हैं। भौतिक संकट कोई संकट नहीं है। संकट तो राग–द्वेष हैं। हमारी साधना बहुत बड़ी ताकत है, बशर्ते की साधना निरंतर हो। आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. जन्मजात विशिष्ट गुणों के धारक थे। पुरुषार्थ से उन्होंने गुणों को पल्लवित व विकसित किया। दो साल की आयु में माताजी का स्वर्गवास, पाँच साल की आयु में पिताजी का स्वर्गवास। माता–पिता के निधन के पश्चात् मामाजी आपको अपने घर ले गए। 12–13 साल में मामाजी का स्वर्गवास। अब दुविधा ये कि मामाजी के बच्चों को सँभालूँ या संसार का त्याग करूँ। संसार त्यागकर दीक्षा ग्रहण की तो दीक्षा के पश्चात् गुरु का देवलोकगमन। सारी परिस्थितियाँ सहन कीं, पर हार नहीं मानी। सच के रास्ते पर दृढ़ता से कदम बढ़ाया। संकटों, असफलताओं से पराभूत होकर गलत रास्ते पर नहीं जाना। यहाँ इतने व्यक्ति हैं, पर कौन कह सकता है कि जीवन में असफलता नहीं झेली। माता–पिता, गुरु गए, पर हिम्मत नहीं गई। हाथ में जहरीला फोड़ा हो गया तो डॉक्टर ने कहा कि ऑपरेशन करते समय जहर फैल गया तो मौत भी हो सकती है। जवाहराचार्य जी ने हाथ आगे करके कहा आपको जो करना है, कर लीजिए। डॉक्टर ऑपरेशन कर रहे हैं और जवाहराचार्य जी का हाथ स्थिर रहा। वे एकल विहार के पक्षधर नहीं थे। आजकल थोथी एकता का जमाना है, पर वे सत्य व सिद्धांत पर अटल रहे।''**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का विवेचन करते हुए फरमाया कि कृष्ण वासुदेव ने धर्मदलाली

करते हुए तीर्थंकर गोत्र का बंध किया। हम स्वयं दीक्षा ले सकें तो बहुत अच्छी बात है, नहीं तो कम से कम औरों को प्रेरित करें और धर्मदलाली का लाभ लें। संयम लेने वालों के सहयोगी बनें। साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा. ने फरमाया कि सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। सुगुरु वह कड़ी हैं जो सुधर्म के प्रति हमारी आस्था दृढ़ीभूत करते हैं। अरिहंत भगवान के प्रति हमारी श्रद्धा बनाते हैं।

धन नहीं धर्म को महत्व दें

6 सितंबर 2024। प्रात:कालीन मंगल वेला में ***'अरिहंते सरणं पवज्जामि'*** प्रार्थना से अरिहंतों के प्रति श्रद्धा-निष्ठा अर्पित करने के पश्चात् राजकीय प्राथमिक विद्यालय में प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए उत्क्रांति प्रदाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**एक प्यास पानी की, एक धन की, एक पद-प्रतिष्ठा की और एक प्यास परमात्मा से मिलन की होती है। धन, पद-प्रतिष्ठा की प्यास कहीं न कहीं छिपी होती है। परिवार, समाज में जो हो रहा है उसके पीछे मुझे सत्ता मिलनी चाहिए, मुझे पद मिलना चाहिए आदि बातें मुख्य हैं। यह बात धन के मद में कही जाती है और क्वालिटी गिर जाती है। जब गुणात्मक मूल्यांकन के बजाय धन से मूल्यांकन होने लग जाता है तो अवमूल्यन अवश्य होगा। धनवालों को राजी नहीं रखेंगे तो समाज कैसे चलेगा, ऐसे विचार समाज की उन्नति में बाधक हैं। जिनको सामायिक पाठ भी याद नहीं, इससे कोई लेना-देना ही नहीं, केवल धन का गर्व और राजनीति के दाँव चलेंगे तो काम कैसे चलेगा? धर्म की नीति है दूसरों का स्वीकार करना और धन की नीति है दूसरों को उखाड़ना अर्थात् धन में दूसरों को अस्वीकार किया जाता है। व्यक्तिपरक की स्थिति खतरनाक हो जाती है। सुधारवाद गलत नहीं है, पर सिद्धांत के धरातल पर होना चाहिए। साधुओं एवं श्रावकों के सम्मेलन हुए, उसमें एक सिद्धांतवादी और दूसरा सुधारवादी। सिद्धांत का नाम अवश्य होना चाहिए। जीवन सत्यनिष्ठ बने। धन जाए तो जाए, परंतु मेरा सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। आज का परिवेश इससे उलटा है, चमड़ी जाए तो जाए पर दमड़ी नहीं जानी चाहिए।**'' सेठ सुदर्शन की निर्भयता, सत्यता, धर्मनिष्ठा का मार्मिक चित्रण आचार्य भगवन् ने फरमाया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**शिष्य का विनय गुरु के प्रति हो तो ताकत भीतर में प्रवेश करती है। अगर गुरुदेव मुँह मोड़ लें, नजर उठाकर न देखें तो आपकी समर्पणा कितनी रहेगी। उनका व्यवहार हमारे अनुकूल रहे या प्रतिकूल, लेकिन हमारी श्रद्धा-भक्ति अक्षुण्ण रहनी चाहिए। चलते प्रवचन में श्री गणेशलाल जी म.सा. को उनके गुरुदेव टोक देते, बिठा भी देते, फिर भी श्री गणेशलाल जी म.सा. के भीतर की भक्ति, अहोभाव, निष्ठा कभी कम नहीं हुए, अपितु और बढ़ते गए। गुरु का विनय एवं साधना कठिन इसलिए है कि हमने अपने भीतर विचारों की पकड़ बना रखी है। शास्त्रों का सार है कि शिष्य गुरु के वचनों की ओर अभिमुख रहे। गणेशाचार्य कड़क थे। साधु-साध्वी गलती करते तो डाँटने में संकोच नहीं करते। जो अपमान से दूर भागता है वो कभी साधना के शिखर पर नहीं चढ़ सकता। उसके लिए साधना दुष्कर है। जो अपमान के समय मन सहना सीख लेता है तो प्रसन्न रहता है। गणेशाचार्य अनुशासनप्रिय थे।**''

साध्वी श्री विरल श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् विशाल संघ के नायक होते हुए भी उनके चेहरे पर सदैव शांति रहती है। राम गुरु महान है, तपस्या की खान है। प्रशांतमना की उपाधि ऐसे ही नहीं मिलती है। हर

परिस्थिति में आचार्य भगवन् शांत-प्रशांत रहते हैं।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का सुंदर विवेचन करते हुए फरमाया कि दुनिया में कोई साथ मरने वाला नहीं है। जीव अकेला आया है और अकेला ही जाएगा। सदैव अच्छे कार्यों को अंजाम दें। संतों ने एवं साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने संवत्सरी के दिन 1008 पौषध एवं अधिकाधिक धर्म व तप करने की प्रेरणा दी। दोपहर में आलोचना शिविर व आचार्य भगवन् के सान्निध्य में जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम संपन्न हुए।

जिनेश्वर देवों की सेवा करना बहुत कठिन

7 सितंबर 2024। *'तुझसे लागी लगन ले लो अपनी शरण'* मधुर भजन का गायन प्रात:कालीन प्रार्थना में किया गया। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुओं के आत्मतत्त्व को जागृत करते हुए परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''पार्श्वनाथ भगवान के चरणों में वंदन करो। यह सुख-संपत्ति का हेतु है। सुख दो प्रकार का होता है - एक कल्पनाजन्य सुख और दूसरा यथार्थ सुख। जब हम असली प्राप्त करने में समर्थ नहीं होते तब नकली में सुख मानने लगते हैं। सुख हम सबको चाहिए इसलिए हम पदार्थों में सुख देखने लग जाते हैं। स्वयं पदार्थ के पास सुख नहीं है, वे हमें कैसे सुखी बना सकते हैं? केवल हमारी कल्पना उसे सुख मान लेती है। जैसे- किराए का घर है और विचार करते हैं कि अपना घर होगा तो सुखी हो जाएँगे। अपना घर हो गया, पर अभी भी तृष्णा बाकी है। कुछ न कुछ कमी रहेगी। 'और चाहिए' अर्थात् अभी प्यास है। 'अब नहीं चाहिए' अर्थात् तृप्ति हो गई है। सामान बिखरा हुआ नहीं रखना, कम सामान वाले मकान में मानस सही रहेगा। हमारा मन बाहर के पदार्थों से भरता जा रहा है तो आत्मा के बारे में अवसर कब मिलेगा? एकाग्र भाव से, सावधान मन से अवधानपूर्वक जिनेश्वर देवों के चरणों की सेवा करो। उसी में तृप्ति है। सावधानी से कोई भी काम करेंगे तो तृप्ति मिलेगी। सावधानी बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रश्न उठता है कि मन में एकाग्रता कैसे हो? पहले मन में रहे कचरे को साफ करना पड़ेगा, तब मन संतुलित होगा। मन में आकांक्षा भरी है तो मन काम नहीं करता है। आकांक्षा काम करती है। ऐसे में परिणाम कहाँ मिलेगा? तलवार की धार पर चलना फिर भी सरल है, पर जिनेश्वर देवों के चरणों की सेवा करना बहुत मुश्किल है। पुण्य कैसे कमाएँ? धर्माराधना करके पुण्य कमाया जा सकता है। वो पुण्य आगे धर्म दिलाने वाला बनता है। शुभ भावना भाने से पुण्य का बंध हो सकता है। सम्मान वाले वचन कहने से पुण्य का बंध हो सकता है। अपनी जगह दूसरों को देने से पुण्य का बंध होता है। थोड़ा सा कष्ट सहा और पुण्य अर्जित कर लिया। सद्भावना भानी चाहिए कि सारे प्राणी सुखी बनें, सभी को साता मिले। जितने बुरे विचार उतनी ही खराब गति। इसलिए दूसरों का भला चाहना। 'भावना दिन-रात मेरी सब सुखी संसार हो' सदैव यह चिंतन करें।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने गुरु की महिमा का बखान करते हुए अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु समाधि देने वाला शब्द है। मंगलकारी शब्द है। गुरु अर्थात् जो वस्तु जैसी है, उसे वैसी ही कहने वाला। स्मृतिशेष पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. का आत्मविश्वास बड़ा मजबूत था। वे अपना निर्णय स्वयं लेते थे। प्रज्ञा सम्यक् होती है तो जीवन विकास की ओर बढ़ता है। यदि प्रज्ञा में मलिनता हो जाती है तो ऐसी स्थिति में अच्छे-भले ज्ञान वाला**

व्यक्ति भी गलत कार्य करने हेतु तत्पर हो जाता है और कोई अच्छी बात कह रहा हो तो उसे स्वीकार करने की तत्परता नहीं बनती। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का हृदय कोमल था, पर निर्णय अटल था। उनके निर्णय सुविचार वाले होते थे। हमारी दृष्टि यदि हम पर है तो हमारे गुणों का विकास वेग से होता है। फिर जीव जो भी करता है अपने आप के लिए करता है। यदि हमारी आँखें अपने पर नहीं है, दूसरों पर है कि उसने ऐसा क्यों किया? कौन अच्छा है? कौन बुरा है? आदि बातें दिमाग में घूमती रहती हैं तो हमारे गुणों का विकास रुक जाता है। मुझे क्या करना है इसका पता मुझे होना चाहिए। यदि हमें पता है कि हमे कहाँ जाना है तो सारी दुनिया हमें रास्ता देती है।''

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का सुंदर वाचन व विवेचन फरमाया। साध्वी श्री छविप्रज्ञा जी म.सा. ने फरमाया कि इस संसार रूपी पिंजरे में हम विषय-कषायों के कारण कैद हैं और इसी कारण हम इस पिंजरे से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। यदि इनका दमन कर दें, इनको त्याग दें तो इस संसार रूपी पिंजरे से निकल सकते हैं। संतों ने ***'आता रहूँगा दर पे तुम्हारे'*** एवं साध्वीवर्याओं ने ***'आगम ने जब आकार लिया, गुरु राम उसे तब नाम दिया'*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए। आलोचना शिविर में साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

अपने दिल की गाँठ को हलका करना है

संवत्सरी महापर्व अपूर्व धर्माराधना के साथ संपन्न

संवत्सरी पर्व हमें जगाने आया है।
सालभर का लेखा-जोखा करने यह पर्व आया है।।

8 सितंबर 2024। जैन जगत् के सबसे बड़े पर्व संवत्सरी महापर्व की आराधना करने हेतु गुरुचरणों में जनसैलाब उमड़ पड़ा। 500 से भी अधिक पौषध के साथ ही बेला, तेला, 62 अठाई, 20 नौ की तपस्या व प्रचुर मात्रा में एकासना, आयंबिल, उपवास, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि की आराधना लोगों ने की। 8 दिवस अखंड नवकार मंत्र जाप पुरुष वर्ग, महिला वर्ग ने अलग-अलग किया। 200 पच्चक्खान, प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर प्रश्न परीक्षा संपन्न हुई। संतों ने चौरंगी, महासतियों ने पचरंगी तप व श्रावक-श्राविका वर्ग ने नवरंगी तप संपन्न किए।

रविवारीय समता शाखा के अंतर्गत समता आराधना में लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। प्रात: 8 बजे से 1:30 बजे तक धर्मसभा में अविरल ज्ञान की धारा प्रवाहित हुई। श्री राजन मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का सुंदर वाचन, विवेचन करते हुए फरमाया कि कर्म खपाना है, मुक्ति में जाना है, त्याग-तपस्या से जीवन को सजाना है। तन-मन शुद्धि के लिए तपस्या अवश्य करनी चाहिए। तपस्या मान-सम्मान, यश-कीर्ति के लिए नहीं, अपितु कर्म निर्जरा के लिए होनी चाहिए।

विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हमारे भीतर अनादिकाल से कुसंस्कार जुड़े हुए हैं, इसलिए कुछ न कुछ विचार हमारे मन में आ जाते हैं। वैसे ही छद्मस्थता के कारण, कर्मों के कारण, कुसंस्कारों के कारण हमारे मन में कभी भी दुर्विचार नहीं आए, यह असंभव है। हमारे नहीं चाहते हुए भी आएँगे, किंतु उसका एक उपाय है। यदि हमें हृदय को गुणसिंधु बनाना है, पवित्र बनाना है तो उन दुर्विचारों, दुर्गुणों को अपने भीतर मत जमने दो। विचार आए और चले गए, कोई घबराने की आवश्यकता नहीं है। विचारों को पकड़ो मत। संवत्सरी एक ऐसा पर्व है जिसमें हम अपने शल्य दूर कर सकते हैं, अपने विकारों को दूर कर सकते हैं। यह पर्व अपने दिल की गाँठ को हलका करता है। घर की**

साफ-सफाई में समय लगता है, वैसे ही क्षमायाचना करने से पहले आत्मा की सफाई कर ली जाए। खाली मुँह से खमाऊँ सा कहने से कुछ नहीं होगा। अगर हमारे भीतर कषाय भरा हुआ है, उसे बाहर निकालकर साफ नहीं किया जाए तब तक क्षमायाचना नहीं होगी। यह पर्व हमें सिखाता है रिश्ते-नाते बिगड़े हैं, प्रेम सूखा है, वात्सल्य का झरना रुका हुआ है, उसे वापस समाहित करो। अपने जीवन को सही रास्ते पर लाओ। अपने जीवन का खाता रोज मिलाना चाहिए कि आज दिनभर में क्या खोया, क्या पाया, मेरा कितना समय धर्म में गया और कितना व्यर्थ, कितना शांति में समय निकला और कितना क्रोध में, संसार के कार्य में कितना व धार्मिक कार्यों में कितना समय निकला। 'खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।' **मैं आपको खमाता हूँ, आप मुझे क्षमा करें। संवत्सरी पर्व मन को हलका करने का पर्व है। आचार्य पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. का जीवन बोलता हुआ जीवन था। आचार्य भगवन् ने खून-पसीना एक करके संघ का सींचन किया। आज जो भी फुलवारी-बगीचा हमें दिख रहा है, यह महापुरुषों के तेज का ही प्रभाव है।''**

'नाना तेरे गुण गुलशन में खिल रहे पुष्प महान, सौरभ पाता सकल जहान' गीत प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर करते हुए आगे फरमाया कि **''चार चीजों को ध्यान में लें तो साधना सध जाएगी। मन को पुष्ट करने के लिए स्वाध्याय करना, कर्मों का क्षय करने के लिए तपस्या करना, अपनी सुख-सुविधा को नष्ट करने के लिए सेवा-वैयावच्च करना और स्वच्छंदता का त्याग करने के लिए त्याग करना। मुनि को हमेशा विद्यार्थी रहना चाहिए। आज संवत्सरी का दिन है। अरिहंत, सिद्ध भगवान, सुधर्मा स्वामी से लेकर जो भी आचार्य पाट परंपरा है, उनका उपकार है। नाना गुरु का अनंत उपकार है। उपाध्याय प्रवर, सभी चारित्रात्माओं व श्रावक समाज - सभी से प्रातः अहोभाव प्रकट करता हूँ, क्षमायाचना करता हूँ।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी अमृतवाणी में फरमाया कि **''हमारी अंतरात्मा जिस कार्य को सही मानती है तो उस कार्य का निर्णय लेने में कभी नहीं चूकना चाहिए। आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयाम उत्क्रांति, व्यसनमुक्ति कार्यक्रम संपूर्ण समाज के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। आचार्य भगवन् ने श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के पद हेतु व शिखर सदस्यता के लिए आयाम दिया कि जो व्यसन का त्यागी होगा उसी को सदस्यता दी जाएगी। आचार्य भगवन् का जीवन विशिष्ट योग्यताओं से संपन्न है। गुरुदेव द्वारा लिए गए निर्णय से पूरा संघ एक धारा में जुड़ जाता है।''**

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिस तप में क्षमा और शांति-समाधि होती है, वह हमारे जीवन में उत्थान कर सकता है। हमें क्रोध, मान, माया, लोभ को गलाना है।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने ***'वंदन से कटते बंधन'*** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि ऐसा कौनसा गुण है जो वंदना से प्राप्त नहीं होता और ऐसा कौनसा अवगुण है जो वंदना से दूर नहीं होता। तपस्या वह नहीं है कि कितनी लंबी चली, तपस्या वह है कि कितनी गहरी है। तपस्या वह नहीं है कि कितने दिनों तक आहार छोड़ा, तपस्या वह है कि कितनी आसक्ति टूटी।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कल्पना चमत्कार करती है, कल्पना आविष्कार है। कल्पना में वह ताकत है कि वह पूरी दुनिया को हिला देती है।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने काव्य में रूप में अपने सुंदर भाव व्यक्त किए।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी जो-जो रात्रियाँ बीती हैं, जो-जो आने वाला समय है उसको देखो। हमारा बीता हुआ काल अनंत है, पर मोक्ष जाने के लिए भूतकाल की जरूरत नहीं है। जो बीत गया सो बीत गया। वर्तमान को सही बनाओ, क्योंकि वर्तमान में जीने वाला वर्धमान बन जाता है। संसार के कार्य बहुत किए हैं, अब मोक्ष के कार्य करने हैं। दुनिया में गुरुकृपा से बढ़कर कोई दुनिया चीज नहीं है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने ***'पूज्य गुरुवर जीवन को तेरे, करते हैं शत-शत नमन'*** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि महापुरुषों का चारित्र सिर्फ चारित्र नहीं है, वे तो गुणों का सागर बहा रहे हैं। क्षमायाचना तो हम हर साल कर रहे हैं, किंतु हमारे भीतर की गाँठें कितनी खुलीं?

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. ने फरमाया कि हमारा भारत देश पर्वों का देश है। हमारा पर्व '**पर्युषण**' सिर्फ पर्व ही नहीं, पर्वाधिराज पर्व है। आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की साधना हमारे ऊर्जा की स्रोत है। इनकी आज्ञा की आराधना में ही जीवन की धन्यता है।

साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हिम्मत की कीमत होती है। हमने एक बार हिम्मत करके संसार छोड़ दिया तो हमारी कीमत हो जाएगी।

साध्वी श्री रामरया श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हम अपना समर्पण गुरुदेव के चरणों में कर दें। सिर्फ एक गुण हमें तिराने के लिए काफी है और वह गुण है समर्पण।

श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री राजन मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री गौरव मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा., श्री रामयश मुनि जी म.सा., श्री रामहृदय मुनि जी म.सा., श्री रामसौरभ मुनि जी म.सा., श्री रामलक्ष्य मुनि जी म.सा., श्री रामनंदन मुनि जी म.सा. आदि संतों ने ***'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा, भगवान बना दो मुझे परमात्मा'*** गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया जी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

सभा में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन जी राठौड़, भीलवाड़ा सांसद दामोदर जी अग्रवाल, विधायक अशोक जी कोठारी, बीजेपी भीलवाड़ा जिलाध्यक्ष प्रशांत जी, भीलवाड़ा पार्षद पाराशर जी आदि ने गुरुदर्शन का लाभ लिया। इस शुभ अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन जी राठौड़ ने अपने भावोद्गार में कहा कि पूर्व में भी परम पूज्य गुरुदेव के पावन दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। आपकी दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। समाज को आपने मार्गदर्शन व अद्भुत प्रेरणा दी है। आपका हृदय सरल है, किंतु अनुशासन में कठोर है। मैं आज जो कुछ बना हूँ, आपके आशीर्वाद से बना हूँ। गुरुदेव के उपदेश व संस्कार नई पीढ़ी को आत्मसात करने चाहिए। पिपलिया कलां चातुर्मास की भावभरी विनती भी प्रस्तुत की गई।

जो भी गलतियाँ या गलतफहमियाँ हैं, उनको डिलीट कर दो

9 सितंबर 2024। सामूहिक क्षमायाचना कार्यक्रम आयोजित किया गया। विशाल धर्मसभा को संबोधित

करते हुए क्षमा के सागर आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**मति दो प्रकार की होती है - कुमति और सुमति। जिस घड़े में जो चीज भरी होगी, वैसी ही गंध आएगी। व्यक्ति ने जैसा खाया है, मुँह से वैसी गंध आने लगती है। वैसे ही हमारे अंत:करण में जो भी स्थिति होगी, वैसा प्रभाव नजर आएगा। एक बदमाश और एक संत का चेहरा देखेंगे तो भिन्नता का अनुभव हो जाएगा। चित्रकार ने दो चित्र बनाए - पहले शांत व्यक्ति का, फिर अशांत व्यक्ति का। व्यक्ति वो ही है, लेकिन भावनाएँ बदल गईं। भावनाएँ सही नहीं होंगी तो परिणाम दीर्घकालीन नहीं होगा। क्षमा का अर्थ होता है डिलीट। जो भी गलतियाँ हैं, गलतफहमियाँ हैं, उनको डिलीट कर दो। क्रोध, मान, माया, लोभ - ये सभी अपनी आत्मा के विकास को रोकने वाले हैं। क्षमा आदि सद्गुणों के पेड़ लग जाएँगे तो अपनी आत्मा का क्षरण होना बंद जाएगा। हमारी आत्मा का गुण शांति-समाधि है, जो हमेशा विद्यमान रहना चाहिए। क्षमा का पर्व बहुत महत्त्वपूर्ण पर्व है। जैन समाज मानता है कि क्षमा से महत्त्वपूर्ण और कोई हो ही नहीं सकता। प्रतिक्रमण करना और अनुभव करना कि मैंने क्या-क्या अतिक्रमण किया है। दोषों को दूर कर सही जीवन जीना होगा। अन्य किसी संस्कृति में ऐसा प्रसंग नहीं मिलेगा।**''

संघ अध्यक्ष सहित कई लोगों ने चतुर्विध संघ से क्षमायाचना की। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने ***'हृदय के शुद्ध भावों से क्षमा करना-क्षमा करना'*** स्वर लहरी के साथ सभी से क्षमायाचना की। अनेक क्षेत्रों के संघ प्रतिनिधियों ने वर्षभर में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना एवं खमत खामणा की। ***'खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे'*** आदि स्वर पूरी सभा में गूँज रहे थे।

उपाध्याय प्रवर द्वारा 108 अठाई करने का आह्वान

सामूहिक क्षमायाचना

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी वाणी में फरमाया कि ''**गुरुदेव के आज सोमवार का मौन है। विभिन्न संघों के पदाधिकारी यहाँ उपस्थित हैं। सबने भावनाएँ व्यक्त कीं। आचार्य भगवन् ने पर्युषण पर्व के दौरान फरमाया है कि हमने कितने संवर, दया, पौषध, उपवास, तेला, अठाई, मासखमण, षट्रस आदि की है। अभी हमें बहुत कुछ करना है। 108 अठाई का लक्ष्य दिया है। सभी संघ इसमें प्रयत्न करें। जैन धर्म के महत्त्वपूर्ण बिंदु हैं। हमारा पर्व आध्यात्मिक पर्व है। जैन धर्म की महिमा को बढ़ाने का प्रयास करें। जिनशासन के विकास की ओर ध्यान देना है। यह वैज्ञानिक धर्म है। सभी से क्षमायाचना।**''

अभिरामम् आनंदम्, समता सर्व मंगल, परिपत्र आदि संघ प्रमुखों को संघ द्वारा प्रदान किए गए। महिला मंडल ने दीपावली के अवसर पर 108 अठाई करवाने का संकल्प लिया। अन्य विभिन्न संकल्प हुए। आए हुए प्रतिनिधियों ने आचार्य भगवन् के भीलवाड़ा चातुर्मास को अलौकिक व अविस्मरणीय बताया तथा पुन: भीलवाड़ा के उपक्षेत्रों को स्पर्शने की विनती की। साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में अपूर्व धर्माराधना की, जिसकी जानकारी महामंत्री ने दी।

महावीर भवन में भी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर अपूर्व धर्माराधना

परम पूज्य आचार्य भगवन् ने महत्ती कृपा कर पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व पर महावीर भवन, भीलवाड़ा शहर

में संघ की विनती को स्वीकार कर अपनी आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री माधुर्य श्री जी म.सा., साध्वी श्री विमुक्ति श्री जी म.सा., साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामनिधि श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 को भेजने की कृपा की।

साध्वीवृंद के सान्निध्य में अंतकृद्दशांग सूत्र का 8 दिन तक वाचन हुआ। 90 महान आत्माओं का वर्णन किया गया। ज्ञान, ध्यान, त्याग, तपस्याओं सहित अनेक तपाराधनाएँ हुईं। लगभग 500 एकासन, आयंबिल, 20 तेले एक साथ, पाँच की तपस्या एवं 4 अठाई तप, ग्यारह एक के प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर को बहनों ने धार्मिक प्रतियोगिता एवं चारित्रात्माओं का सान्निध्य प्राप्त किया। सायंकाल रोजाना 90 भाइयों के प्रतिक्रमण, बहनों के प्रतिक्रमण अलग-अलग संपन्न हुए। पौषध आदि का लाभ लिया। 13 घंटे का रोजाना अखंड नमस्कार महामंत्र का जाप हुआ। संघ में लगभग 350 से 450 भाई-बहनों ने आठों दिन बराबर प्रवचन का लाभ लिया। 9 सितंबर को प्रात: 7 बजे साध्वीवृंदों से सामूहिक क्षमायाचना की।

सभी चारित्रात्माओं व उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं से क्षमायाचना की। भीलवाड़ा के विभिन्न क्षेत्रों से संघ प्रमुखों ने सामूहिक क्षमायाचना आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व चारित्रात्माओं से कीं। अरिहंत हॉस्पिटल से ज्ञानप्रकाश जी सांखला, मूर्तिपूजक संघ से तेज सिंह जी नाहर, आजाद नगर संघ की ओर से जैन साहब, तेरापंथ समाज की ओर से जसराज जी चौरड़िया, जैन कॉन्फ्रेंस से पुष्पा जी गोखरू एवं संघ पदाधिकारियों सहित अनेक लोगों ने उपस्थित हो क्षमायाचना की।

मान-सम्मान से कल्याण होने वाला नहीं है

10 सितंबर 2024। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**प्राणी की वृत्ति के अनुसार दो भेद होते हैं - एक इंद्रियरामी और दूसरा आत्मारामी। इंद्रियरामी का अर्थ है इंद्रियों के विषय में रमण करने वाला, विषयों को आनंद मानने वाला, जिसे विषय प्रिय होते हैं, विषयों में अनुरक्त रहने वाला। आत्मारामी का अर्थ है आत्मा में रमण करने वाला। यह अर्थ हमने कई बार सुने हैं, लेकिन जब तक ये हमारी अनुभूति का विषय नहीं बनता, तब तक हम इनसे छूट नहीं पाते। इतने प्रवचन सुने हैं, सामायिक की है, दर्शन किए हैं आदि क्या-क्या नहीं किया! रह-रहकर उसी दिशा में दौड़ क्यों हो रही है? यह विचार हमारे मन में अवश्य आना चाहिए। हमें दूसरों से नहीं, स्वयं की वृत्तियों से ही युद्ध करना है। मान की कल्पनाएँ जग रही हैं, प्रशंसा पाने की चाह जग रही है आदि विचार-वृत्तियों को पछाड़ना बहुत कठिन है। मान-सम्मान आदि भावनाएँ हमें कुएँ में डालने वाली हैं। इससे हमारा कल्याण होने वाला नहीं है। हमारी साधना का लाभ हमें क्या मिल रहा है? एक बार की सत्संग महान लाभ देने वाली हो जाती है। भव-भव के दु:ख खत्म करने वाली हो जाती है। इससे हृदय सरल हो जाता है, जकड़न चली जाती है। जज्बा, हिम्मत होनी चाहिए, तब धर्माराधना हो सकती है।**''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सार के प्रति जागृत बनें, निस्सार घटता जाएगा। भगवान के प्रवचन सुनकर लगता है कि मोह, मदिरा के समान है, उसे छोड़ दें। कब छूटेगा? जब उसमें निस्सारता लगेगी, तब मन उसे जल्दी छोड़ देता है।

दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। श्रावक के 12 व्रतों के शिविर में साध्वी श्री छविप्रज्ञा जी म.सा. ने व्रतों की महत्ता पर प्रकाश डाला। भीलवाड़ा कलक्टर नमित जी मेहता ने गुरुदर्शन सेवा व विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

सहजता-सरलता है आत्मिक गुण

11 सितंबर 2024। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**इंद्रियों के विषयों में जो रमण करता है, वह इंद्रियरामी और आत्मा में जो रमण करे, वह आत्मारामी। इंद्रियरामी मूर्त है और आत्मारामी अमूर्त है। ज्ञान हमें आँखों से नहीं दिखाई देता। ज्ञान का अनुभव हो सकता है। जैसे ज्ञान आँखों से दिखाई नहीं देता, वैसे ही आत्मा को हम निकालकर देख नहीं सकते। इंद्रियाँ मूर्त पदार्थ को ग्रहण करती हैं। रंग, रूप, स्वाद - ये सब पौद्गलिक विषय हैं। उत्तम क्षमा, मृदुलता, सहजता, सरलता - ये आत्मिक गुण हैं। ये चीजें निकालकर बताई नहीं जा सकतीं। इनका हम अनुभव कर सकते हैं। संसार के सारे जीव अधिकांश इंद्रियरामी हैं। उनको यदि इंद्रियों की सारी सुख-सुविधाएँ मिल जाएँ तो खुश रहेंगे। अच्छा खाना मिल गया, अच्छा परिवार मिल गया, विनीत पुत्र मिल गया तो हम बड़े खुश रहेंगे। ऐसे सुख में रहने वाला जीव मानता है कि मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ। एक अपेक्षा से सौभाग्यशाली हो सकता है, किंतु धर्म की तरफ अभिमुख नहीं है तो उसका सौभाग्य क्षणिक है। ये सारी सुविधाएँ किस समय लुप्त हो जाएँगी, पता ही नहीं चलेगा। जो रोडपति है वह करोड़पति बन जाएगा और करोड़पति है वह रोडपति बन जाएगा। एक क्षण में किसी के पाप और किसी के पुण्य उदय में आ सकते हैं। पुण्य का उदय होता है तो सारी सुख-सुविधाएँ होती हैं और पाप का उदय होता है तो जो सुख-सुविधाएँ होती हैं, वे चली जाती हैं।**'' संयति राजा चारित्र का आचार्य भगवन् ने सुंदर विवेचन किया।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने ***'कर्मों के खेल निराले हैं'*** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि देव, गुरु, धर्म पर हमारी आस्था गहरी होनी चाहिए। अन्य देवी-देवताओं के चक्कर में नहीं पड़ें। एकमात्र धर्म ही हमें तिराने वाला है।

धर्मपाल बालिका, महिला त्रिदिवसीय शिविर में श्री यत्नेश मुनि जी म.सा., साध्वी श्री छविप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा. ने नवकार महामंत्र, सामायिक सूत्र, जैन सिद्धांत बत्तीसी, देव, गुरु, धर्म आदि कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान कीं। श्रावक के 12 व्रत शिविर में साध्वी श्री छविप्रज्ञा जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया। दोपहर में आचार्यश्री के पावन सान्निध्य में जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम हुआ। आचार्य भगवन् ने कांकरोली में विराजित साध्वी श्री रविप्रभा जी म.सा. के 54 उपवास के जैसे ही शुभ समाचार दिए चहुँ ओर खुशी की लहर छा गई।

जहाँ मन में नियंत्रण नहीं, वहाँ कर्मों का बंध होगा

12 सितंबर 2024। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए संयम सुमेरु, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**अनादिकाल से हम असंयम में चल रहे हैं। जिस स्थान पर आदमी रहता है, उससे उसको लगाव हो जाता है। हमारा बहुत सारा समय असंयम में बीता, इसलिए असंयम से छुटकारा पाना हमारे लिए कठिन हो रहा है। जहाँ मन में नियंत्रण नहीं है, वहाँ असंयम होगा, वहाँ कर्मों का बंध**

होगा। पाँच इंद्रियों पर जिसने नियंत्रण कर लिया, काम-भोग पर नियंत्रण कर दिया, फिर उसके बाद पुनः आदान श्रोती में गर्द हो गया है। कर्मों का आदान आस्रव से होता है। पाँच इंद्रियों को भी आस्रव का स्थान माना गया है। संसार के लोग पाँच इंद्रियों के विषयों में अनुरक्त हैं। जैसे ही हमारे भीतर आकर्षण, कौतुहल पैदा होता है, उसको प्राप्त करने की अभिलाषा होती है और प्राप्त कर भी लिया तो उसको मेरा बनाने की इच्छा हो जाती है तथा इच्छा हो जाती है कि मेरा ही बना रहे, मेरे से छूटे नहीं। इस आकर्षण से अशांति पैदा होती है। बाहर के पुद्गलों की चाह भी अशांति का कारण है। समभाव को प्रकट कर लिया तो कर्मों को भागना पड़ेगा।'' आचार्य भगवन् ने संयति राजा के चारित्र भाग का सुंदर विवेचन फरमाया।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम संसार में रहें, पर चिपकें नहीं। किसी से आसक्ति नहीं रखें। राग-द्वेष आत्मा को मलिन करते हैं। ज्ञाता-द्रष्टा भाव रखें।

धर्मपाल शिविर में भाग लेने वाले भाई-बहनों ने व्यसनमुक्ति व अन्य कई संकल्प लिए। श्रावक के 12 व्रत शिविर में साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा. ने सुंदर समझाइश दी। धर्मपाल शिविर में श्री गौरव मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा., साध्वी श्री छविप्रज्ञा जी म.सा., साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा. ने धर्मबोध प्रदान किया। आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए।

राजस्थान सरकार की बाल विकास मंत्री मंजू जी बाघमार एवं विधायक अशोक जी कोठारी ने गुरुदर्शन कर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

सत्य की आराधना करने वाला शाश्वत पद को प्राप्त कर लेता है

13 सितंबर 2024। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. द्वारा प्रातः मंगलमय प्रार्थना पश्चात् समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि सत्यनारायण जी शर्मा द्वारा करवाई गई। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम श्रद्धेय परमागम रहस्यज्ञाता, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''आचार्य नानेश ने समीक्षण ध्यान पद्धति दी। समीक्षण ध्यान, वृत्ति-संशोधन का है। गलत वृत्तियों का संशोधन आवश्यक है। यदि हम परेशान होने को तैयार नहीं है तो हमें कोई परेशान नहीं कर सकता। श्रद्धा-सिद्धांत से विपरीत बात सुनने को तैयार नहीं होते। मगध सम्राट श्रेणिक अनन्य श्रद्धावान थे। विपरीत बात सुनते तो स्वीकार नहीं करते, अपितु परिहार करते। जैसी संगत वैसी रंगत होती है। परमार्थ का सेवन करने वालों की संगत करें। जो शराबी के साथ रहेगा, वह भी एक समय पीने लग जाएगा। जो जुआ खेलने वाले के साथ रहेगा, वह भी एक दिन जुआ खेलने लग जाएगा। साधु के साथ रहने वाले के भीतर वैराग्य जग सकता है। श्रद्धा व्यक्ति के प्रति नहीं, सिद्धांतों के प्रति होनी चाहिए। व्यक्ति आते हैं, चले जाते हैं, जो नहीं बदलते, सिद्ध हैं, वह है सिद्धांत। अहिंसा, सत्य हमेशा वही रहेंगे। जो भगवान ऋषभदेव के समय था, वो ही भगवान महावीर के समय रहेगा। सत्य त्रैकालिक है, सदा शाश्वत है। उसकी आराधना करने वाला शाश्वत पद को प्राप्त कर लेता है। मन साधने के बाद कोई साधना कठिन नहीं है।''**

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर की तरह हम भी सहनशील बनें। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ***'करुणा के सागर गुरुवर तुम हो'*** भजन प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लुणिया की जैन भागवती दीक्षा 7 फरवरी 2025 के लिए घोषित

परम कृपालु आचार्य भगवन् ने **22 वर्षीय मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लुणिया, नोखामंडी** की जैन भागवती दीक्षा हेतु **7 फरवरी 2025** के लिए जैसे ही उद्घोषणा की, पूरी सभा जय-जयकारों व हर्ष-हर्ष, जय-जय की ध्वनि से गूँज उठी।

पूर्व में इस परिवार से श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. जिनशासन की शोभा बढ़ा रहे हैं। वीर दादी द्रौपदी बाई लुणिया, वीर माता-पिता ममता जी गौतम जी लुणिया सहित परिवारजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित हो दीक्षा हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता युवा संघ, समता बालिका मंडल, भीलवाड़ा द्वारा मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लुणिया व परिजनों का शानदार स्वागत तिलक, माला, शॉल आदि द्वारा किया गया। मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लुणिया ने अपने भावोद्गार में कहा कि मेरी खुशी के लिए परिजनों ने अपनी खुशी को गौण किया और दीक्षा की सहर्ष अनुमति प्रदान की। अत: मैं परिवारजनों की सदैव ऋणी रहूँगी। आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा से आज मैं संयम पथ पर आगे बढ़ने जा रही हूँ। आप सभी के आशीर्वाद से मैं अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करूँ, यही मंगलकामनाएँ हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि राम गुरु के शासन में दीक्षाओं का ठाठ लगा हुआ है। ये उनके उत्कृष्ट संयम का प्रतिफल है। हम सब संयम शतम में अपना योगदान जरूर देवें।

निंदा-प्रशंसा को जीतने वाला जिन बन जाता है

14 सितंबर 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना एवं समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि पश्चात् आयोजित धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति अनुपम दृश्य परिलक्षित कर रही थी। धवल अहिंसा सेना के मध्य जिन नहीं पर जिन सरीखे, केवली नहीं पर केवली सरीखे परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर उच्च पाट पर विराजित हो जन-जन के नेत्रों को अपने साताकारी दर्शनों से पावनता प्रदान कर रहे थे। आपश्रीजी ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**जिन कौन बनता है? जो राग-द्वेष को, अपनी वृत्तियों को, क्रोध, मान, माया, लोभ को जीत लेता है। दूसरों को जीतना जितना आसान होता है स्वयं को जीतना उतना ही मुश्किल है। युद्ध करो परन्तु स्वयं से, अपनी वृत्तियों से। अपने मन को जीत लोगे, पाँच इंद्रियों को जीत लोगे तो जीत सार्थक है। कोई विषय प्रभावित करेगा तो हर्ष भी दे सकता है और गम भी दे सकता है। हम निष्प्रभावी रहें तो कोई कुछ नहीं देगा। वीतरागता होगी तो हर गम में समान रहने से मन शांत रहेगा। निंदा, प्रशंसा में समभाव रहे। जब अपने पर भरोसा नहीं तो बाहर की बातें प्रभावित करेगी। निंदा से क्या मेरे गुणों की हानि हो जाएगी या प्रशंसा करने से मैं प्रशंसनीय बन जाऊँगा? प्रशंसा से प्रशंसनीय नहीं बनेंगे, प्रशंसनीय बनेंगे सत्कार्यों से। सामने प्रशंसा और पीछे निंदा करने वालों का विश्वास नहीं करना। कोई कितनी भी निंदा करे या प्रशंसा करे, मेरा कोई बिगाड़ नहीं होने वाला। निंदा, प्रशंसा पर जो विजय प्राप्त करता है वही जिन बनता है।**

जिन बनने के लिए आत्मारामी बनना जरूरी है।'' तत्पश्चात् संपूर्ण सभा ***'मन अरिहंत-अरिहंत गाए जा, विषयों की आग बुझाए जा'*** कीर्तन में तल्लीन हो गई।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् अपने ज्ञान व गुणों का खजाना लुटाने आए हैं। जितना लेना है ले लो, हृदय में बसा लो। ये खजाना हमें निर्भयता, सरलता, सहनशीलता व विनम्रता देने वाला है। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

परम गुरुभक्त जेठमल जी कुमठ (नोखामंडी/चेन्नई) एवं परम गुरुभक्त बाबूलाल जी जैन (बजरिया, सवाई माधोपुर) के निधन पर इनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। गंगाशहर-भीनासर संघ ने आचार्य भगवन् के आगामी 2025 के चातुर्मास एवं दीक्षा आदि विभिन्न प्रसंगों की पुरजोर विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। कोटा व मुंबई संघ ने भी श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत की।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

15 सितंबर 2024। आज रविवारीय समता शाखा के विशेष अवसर का लाभ उठाने हेतु जनसैलाब उमड़ पड़ा। प्रवचन में विशाल जनसमुदाय को विषयों एवं कषायों से दूर रहने की प्रेरणा देते हुए महत्तम महापुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जो क्रिया चतुर्गति को साधने वाली होती है वो अध्यात्म नहीं, अपितु क्रोध, मान, माया, लोभ से प्रेरित चतुर्गति में भटकाने वाली होगी। अपने हित को साधने वाली क्रिया अध्यात्म कहलाएगी। आत्मारामी की अवस्था आत्मरमण करने वाली होती है। इस अवस्था में आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ समाप्त हो जाती हैं। कोई शोक नहीं, मौज नहीं, बस जीवन निर्वाह की भावना होती है। इंद्रियरामी अवस्था शोक-मौज की अवस्था है। आकांक्षी अपेक्षा वाला होता है। उपदेश एक निमित्त मात्र है। मूल बात है जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। जैसी दृष्टि होगी वैसा व्यवहार होगा। दृष्टि में धन बसा हुआ है तो उठना, बैठना, सोचना, बोलना सब में धन ही धन परिलक्षित होगा। धर्म की दृष्टि आत्माभिमुख बनाने वाली होती है। आत्माभिमुख बनने से मन में आत्मा का ध्यान बना रहेगा। साधु बनने मात्र से समस्या का समाधान नहीं होता। समाधान दृष्टि बदलने से होता है। दृष्टि बदलने का मतलब है मेरा कोई नहीं, मैं किसी का नहीं। माता-पिता, धन-दौलत छोड़ना आसान है, लेकिन यश-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान छोड़ना बहुत कठिन है। भगवान कहते हैं कि जैसा बाहर वैसा अंदर हो। अंदर और बाहर का भेद बंध पैदा करता है और आत्मा से मुलाकात नहीं करने देता। संयोग का वियोग निश्चित है।**''

साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् स्वयं छहकाय को अभयदान दे रहे हैं और अभयदान देने वालों की संख्या निरंतर बढ़ा रहे हैं। पूर्ण समर्पण करना है तो गुरु राम के चरणों में करें। संयम का गुण हम अपने हृदय में प्रकट करें। संघ मंत्री ने त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 फरवरी 2025 तक 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरु वंदना करने का नियम सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने लिया। नीमच, जावरा संघ ने आचार्य भगवन् के वर्ष 2025 के चातुर्मास एवं अन्य विभिन्न प्रसंगों की विनंती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। भीलवाड़ा अध्यात्म एवं राम भक्ति के रंग में लीन है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्री इभ्य मुनि जी म.सा.	8 उपवास	साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा.	7 उपवास
(इस चातुर्मास में अब तक 5 अठाई तप किए)		साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा.	6 उपवास
श्री धीरज मुनि जी म.सा.	9 उपवास	साध्वी श्री रविप्रभा जी म.सा. (जारी)	54 उपवास
श्री नमन मुनि जी म.सा.	8 उपवास	साध्वी श्री खंतिप्रिया जी म.सा.	6 उपवास
श्री गगन मुनि जी म.सा.	8 उपवास	साध्वी श्री राममित्रा श्री जी म.सा.	6 उपवास
साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा.	30 उपवास	साध्वी श्री रामबिंदु श्री जी म.सा.	8 उपवास
साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा.	8 उपवास	साध्वी श्री रामदीपिका श्री जी म.सा.	8 उपवास
साध्वी श्री वीतराग श्री जी म.सा.	9 उपवास		

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	सुरेश जी ममता जी जैन-महिदपुर, मनोहर जी आंचलिया-सूरत, हेरीलाल जी सुशीला बाई सहलोत, राजेंद्र जी चौधरी-भीलवाड़ा, सुशीला जी खारीवाल, गोपाल जी गंगा जी धर्मपाल जैन-गुराड़िया, कुसुम जी जैन-कोटा, शांतिलाल जी सिंघवी-बड़ामहुआ, सुभाष जी नांदेचा-बदनावर, शंभूलाल जी सांखला-हथियाना, राजमल जी ऊषा देवी विनायकिया-दोंडाइचा, शोभा जी चतुरमूथा-दोंडाइचा, सुंदरलाल जी संतोष देवी गेलड़ा-कोलकाता/बीकानेर, कमलेश जी श्रद्धा जी मालू-प्रतापगढ़, जीवन सिंह जी रोशन देवी मेहता-उदयपुर, हीरचंद विमला देवी चतुरमूथा-दौलतगंज, विनोद जी जैन-निंबोध, बाबूलाल जी गन्ना-भीम, हंसराज जी अरुणा देवी बंबकी-बाकोली/रत्नागिरि, पवन कुमार जैन-दिल्ली, गहरीलाल जी टुकलिया-करेड़ा, धर्मचंद जी जैन, रामभगत जी रानू जी पिपली, सुवालाल जी दुग्गड़-गुवाहाटी, रामचंद्र जी धर्मपाल जैन-बोरखेड़ा
गाथा का स्वाध्याय	**वर्ष में 2 लाख –** चंदा बाई बोहरा-बखतगढ़
उपवास	**35 –** वीर पिता इंदरराज जी बोथरा-सूरत
	33 – वीर पिता वर्धमान जी कटारिया-भीलवाड़ा (मौन सहित)
	32 – वीर भ्राता पुलकित जी गुलगुलिया-पुणे (35 के प्रत्याख्यान)
	31 – कैलाश बाई बलाई-बाड़ी, कंचन जी बुलिया-भीलवाड़ा, ललिता जी दुगड़-भीलवाड़ा, शोभा जी संखलेचा, भावना जी पिछोलिया-गंगापुर, चंचल देवी गोलछा-उदयपुर
	मासखमण – रीता जी गोखरू-भीलवाड़ा, विजयराज जी सांड-देशनोक, दिनेश जी गाँधी-केसूंदा, सरिता जी मुकीम-दिल्ली
	26 – भावना जी पितलिया-उल्लई/गंगापुर (31 के प्रत्याख्यान)
	16 – ममता जी ओस्तवाल-भीलवाड़ा
	15 – मोतीलाल जी गोलछा-भीलवाड़ा, मंजू जी भड़कत्या, भीलवाड़ा, करिश्मा जी मारू-भीलवाड़ा, धर्मेश जी कोठारी-भीलवाड़ा, सूर्यप्रकाश जी मूलावत-भीलवाड़ा, विजयश्री

	जी लालानी-भीलवाड़ा, नीतू जी लालानी-भीलवाड़ा, संजय जी भूरा-भीलवाड़ा, महिपाल जारोली-मोरवन
	11 – डॉ. मोहित जी सेठिया, रतन जी देसरड़ा-भीलवाड़ा, राखी जी सांखला-डौंडीलोहारा
	9 – प्रकाश देवी बुरड़-खेजड़ी, कांता बाई जैन-उदयपुर, निवेदन जी लोढ़ा-मंगलवाड़, **भीलवाड़ा से –** घेवरलाल जी टुकलिया, शांता देवी छीतरमल जी सूर्या, अंजू जी कांकरिया, रेखा जी मोगरा, रतनलाल जी डूंगरवाल, संगीता जी कटारिया, अनिता जी सिंघवी (मौन सहित), आशा जी बाफना, नीलू जी ओरड़िया, अंशुल जी बाघमार, मंजू जी कोचेटा, निधि जी सांड
	अठाई – लक्ष्य जी सेठिया-गंगाशहर, पारसमल जी गुलगुलिया-पूना, अवनी जी पगारिया-जावरा, शांतिलाल जी श्रीश्रीमाल, रोशन बाई श्रीश्रीमाल, अंकिता जी भंडारी, पारस देवी सूर्या-देवरिया, इंदिरा जी कन्हैयालाल जी बैद-बीकानेर, बालचंद जी कोठारी-कोलकाता (प्रतिपूर्ण पौषध सहित), मंजू जी पटवा-गुवाहाटी, अंकुश जी अर्पिता जी खिमेसरा, सुनीता जी विराणी, हर्षा जी जैन, उन्नति जी पानगड़िया, नीता जी पारख-अजमेर, रिधम जी सिंघवी, लक्ष्मीलाल जी करणपुरिया-उदयपुर, सिमरन जैन-भीम, **भीलवाड़ा से –** पवन जी सिंघवी, सुश्री स्वप्निल जी कोठारी, संपत जी बाफना, मितेश जी गोलछा, अंकित जी मारू, अंकित जी पोखरणा, अशोक जी सांखला, प्रखर जी बोथरा, रेनू जी प्रवीण जी चंडालिया, सुनीता जी बिराणी, अनिता जी लालानी, श्वेता जी लालानी, किरण जी मनीष जी सेठी, अरविंद जी रांका, सुशीला देवी भूरा, माना देवी भूरा, पूजा देवी भूरा, सुहानी जी डाँगी, विनीता जी सूर्या, पायल जी कोठारी, शोभिका जी खजाँची, सुशीला देवी संघवी, हर्षद जी पोखरणा, अरिहंत जी नागोरी, सीमा जी डाँगी, हर्ष जी पगारिया, नीलू जी दरड़ा, लाड बाई लोढ़ा, गौरव जी सुराणा, दीपक जी बेताला

अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी...

-महेश नाहटा

कई साधक कहते हैं कि हम तरह-तरह की क्रियाएँ करके भगवान की चरण सेवा करेंगे। इस प्रकार की कोरी क्रियाएँ करते हुए भगवान की चरण सेवा करने वाले वास्तव में भगवान की चरण सेवा को समझते ही नहीं हैं। वे फल की इच्छा तो करते हैं, लेकिन वैसी क्रिया का भला क्या फल होगा? जब वैसी क्रियाओं से आत्मशुद्धि नहीं होगी तो बिना आत्मशुद्धि के वे मोक्ष के अधिकारी कैसे बन सकते हैं? जबकि वस्तुस्थिति यह है कि एक साधक की समस्त क्रियाओं और समस्त तपाराधना का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति होना चाहिए। क्रियाओं और तपाराधना का फल होना चाहिए कर्मों की निर्जरा, जिसके फलस्वरूप संपूर्णतया कर्मों के क्षय कर लेने पर मोक्ष की सिद्धि हो जाए।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

महत्तम महोत्सव में रम जाना है, इसे महत्तम बनाना है

पिंकी – दादी! आज मैं श्रमणोपासक पढ़ रही थी, बहुत Interesting लग रही थी। हम बच्चों के लिए दी गईं सारी कहानियाँ, Fact आदि मैंने पढ़ लिए।

दादी – बहुत अच्छे बेटा, पढ़ना तो बहुत अच्छी आदत है और धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से हमारे ज्ञान-ध्यान में वृद्धि होती है और फिर श्रमणोपासक में तो चारित्रात्माओं और हमारे संघ की सारी गतिविधियों की जानकारी मिलती रहती है।

पिंकी – हाँ दादी, पर एक सेक्शन था, जिसमें किसी महोत्सव के बारे में लिखा था। वह महोत्सव 31 महीने तक मनाया गया, पर मुझे कुछ अच्छे से समझ नहीं आया। क्या आप जानते है उस महोत्सव के बारे में?

दादी – हाँ पिंकी, मैं जानती हूँ और मैं भी बढ़-चढ़कर उसमें हिस्सा ले रही हूँ। आखिर आराध्य भगवन् के संयम जीवन के सुवर्ण दीक्षा महोत्सव की जो बात थी।

पिंकी – रुकिए दादी, मैं बबलू और मम्मी-पापा को भी बुलाती हूँ। हम सब साथ मिलकर सुनेंगे।

दादी – सब साथ बैठकर महत्तम महोत्सव के बारे में सुनने के लिए तैयार हो गए और दादी ने अपनी बात की शुरुआत की।

दादी – बात है 12 फरवरी 2022 की। किशनगढ़ (राजस्थान) में **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ** द्वारा गुरुचरणों में यह विनती रखी गई कि आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर एक महोत्सव मनाया जाए। जिसमें पूरा संघ गुरुचरणों में कुछ न कुछ भेंट अर्पित कर सके।

बबलू – दादी! तो क्या श्रीसंघ की विनती स्वीकार हो गई?

मम्मी – हाँ, पूरा साधुमार्गी संघ उल्लास और पुरुषार्थ के साथ इसे मनाने के लिए तत्पर था।

पापा – इसके बारे में काफी चर्चा हुई कि कैसे मनाया जाए, जो रीति-नीति के विरुद्ध न हो। एक युगपुरुष की स्वर्णिम संयम यात्रा को समझने की, जानने की बात थी।

दादी – फिर 17 मार्च 2022 को गंगाशहर-भीनासर (राजस्थान) की धरा पर शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. एवं श्री आदित्य मुनि जी म.सा. के मुखारविंद से महोत्सव में सिर्फ साधुमार्गी संघ ही नहीं अपितु

सकल जैन समाज को जोड़ते हुए पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाने का आह्वान हुआ, जिसका शुभारंभ आषाढ़ी पूर्णिमा वि.स. 2079 को होगा ऐसा भी बताया गया।

पिंकी – आषाढ़ी पूर्णिमा 2079 मतलब ?

दादी – बताते हैं... अभी तो बस सफर का आगाज हुआ है।

बबलू – दादी Please, महत्तम का मतलब भी बताइए न !

पिंकी – मैंने अभी गूगल किया। उसमें महत्तम का मतलब Greatest होता है।

दादी – पिंकी, सही कह रही है। ये महोत्सव ऐसा महोत्सव है जो इस लोक का सर्वोत्तम बनने जा रहा है और सभी उत्साह से इस महोत्सव में भाग लेने को आतु थे।

मम्मी – हाँ मम्मी जी, इसीलिए तो इस महोत्सव का एक लोगो भी डिजाइन किया गया है, जिसका तात्पर्य है हर व्यक्ति को जोड़ते हुए संपूर्ण लोक को राममय बनाना। इस लोगो की लॉचिंग हजारों श्रावक-श्राविकाओं की प्रत्यक्ष उपस्थिति में केकड़ी की चिंतन बैठक में 18 मार्च 2022 को हुई।

दादी – अब बारी थी टीम बनाने की, क्योंकि जैसे नाम '**महत्तम**' है वैसे ही कार्य करने हेतु कार्यकताओं की भी विशाल टीम की भी आवश्यकता थी।

पापा – अब बारी थी '**संघैः शक्ति कलोयुगे**' को चरितार्थ करने की। मुझे अच्छे से याद है कि राष्ट्रीय, आंचलिक और स्थानीय पदाधिकारियों के समन्वय से महत्तम की एक नई टीम बनाई गई। इसमें सभी आयु के श्रावक-श्राविकाओं के लिए ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग और विभिन्न प्रकल्प तैयार किए गए।

पिंकी – कुल कितने प्रकल्प थे पापा ?

दादी – हुक्मगच्छ के नवम् पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के संयमी जीवन के 50 वर्षों की खुशबू बिखेरते हुए सुवर्ण महोत्सव में 9 प्रवृत्तियाँ बनाई गईं। इस प्रकार प्लानिंग की –

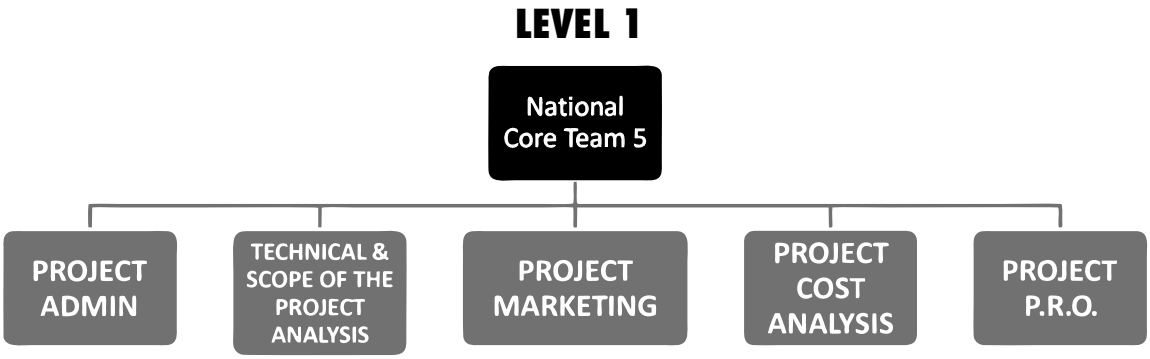

- टीम लेवल 1 – **एडमिन** (राष्ट्रीय संयोजक)
- **टेक्निकल** (संघ की रीति-नीति की अपेक्षा प्रकल्पों का...)
- **मार्केटिंग** (प्रकल्पों को विविध माध्यमों से जन-जन तक पहुँचाना)

- **P.R.O.** (सभी पदाधिकारियों से समन्वय बनाते हुए स्थानीय और आने वाली समस्याओं का निवारण करना)
- **फाइनेंस** (प्रवृत्ति) प्रकल्प में लगने वाले वित्त का लेखा-जोखा रखना

इसी आधार पर सभी प्रवृत्तियों की भी 5 व्यक्तियों की कोर टीम बनाई गई, जो थी लेवल 2 प्लानिंग टीम और सभी प्रकल्पों के लीड्स भी बनाए गए। इस प्रकार कुल 9 × 5 = 45 कोर टीम सदस्य और प्रकल्प के लगभग **45 लीड्स** बने, जिन्होंने प्लानिंग की शुरुआत की।

LEVEL 2

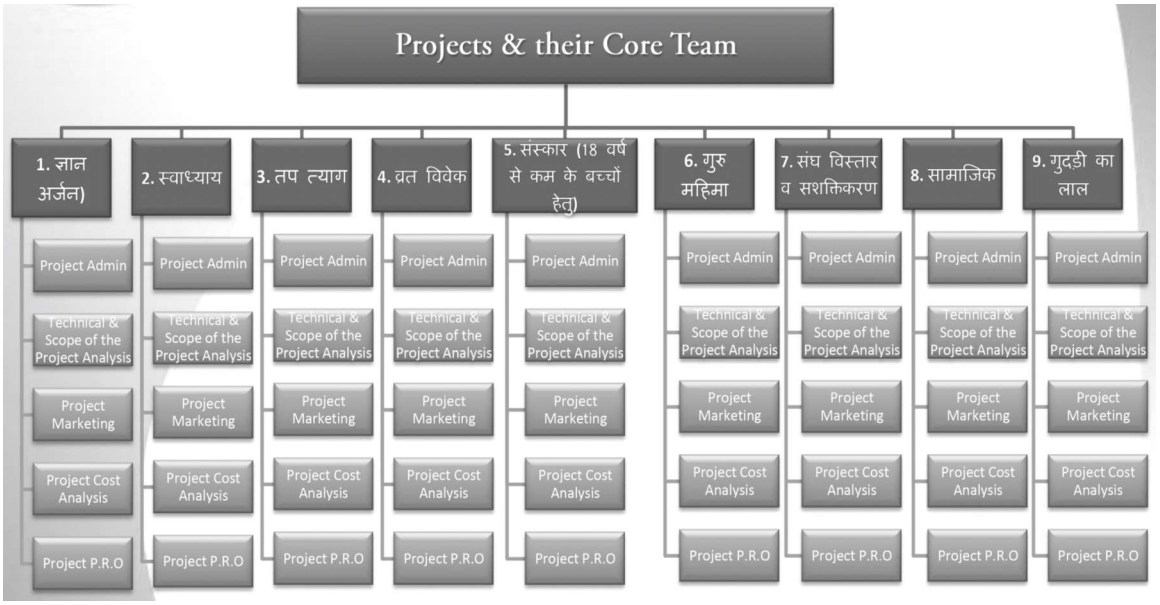

महत्तम महोत्सव की पहचान और एक ब्रांड बनाने के लिए कलर थीम भी डिजाइन की गई, जिसे डी.टी.पी., फ्लायर, लेटर हेड, बैनर, वीडियो आदि में उपयोग लिया गया।

इस थीम की लॉंचिंग सभी राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, महत्तम कोर टीम और लेवल 2 की टीम की वर्चुअल उपस्थिति में जूम पर संपन्न हुई।

फिर शुरु हुई प्रवृत्तियों की प्लानिंग, परीक्षाएँ, पाठ्यक्रम का सिलसिला और इसे बेहतर रूप से समझने के लिए **इंद्रधनुष-1** प्लानर बनाया गया, जिसमें सभी प्रकल्पों का विवरण, उनका लक्ष्य, परीक्षा तिथि आदि की जानकारी दी गई।

मैंनें कहीं पढ़ा है Vision without execution is hallucination. Planning तो हो गई, पर इसे execute करने के लिए भी तो टीम बनाई गई होगी।

दादी - बिलकुल, लगभग 2500 कार्यकर्ताओं की टीम बनाई गई। लेवल 1, लेवल 2 (प्लानिंग), लेवल 3 (जोनल), लेवल 4 (अंचल) और लेवल 5 (स्थानीय) स्तर पर टीम का गठन किया गया।

सभी ने अथक पुरुषार्थ से कार्य को गति प्रदान करने में कोई कमी नहीं रखी।

LEVEL 3 : Zone Wise Team Details

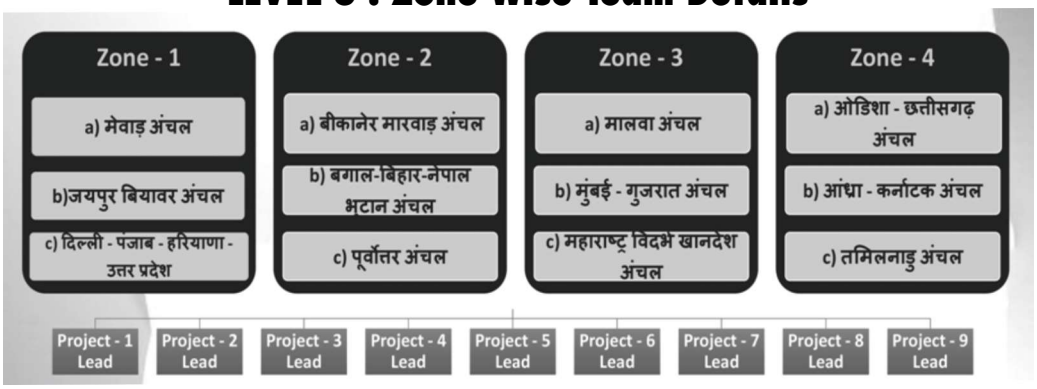

● **Note :** Each Zone has one project Lead.

LEVEL 4 : Anchal Wise Team Details

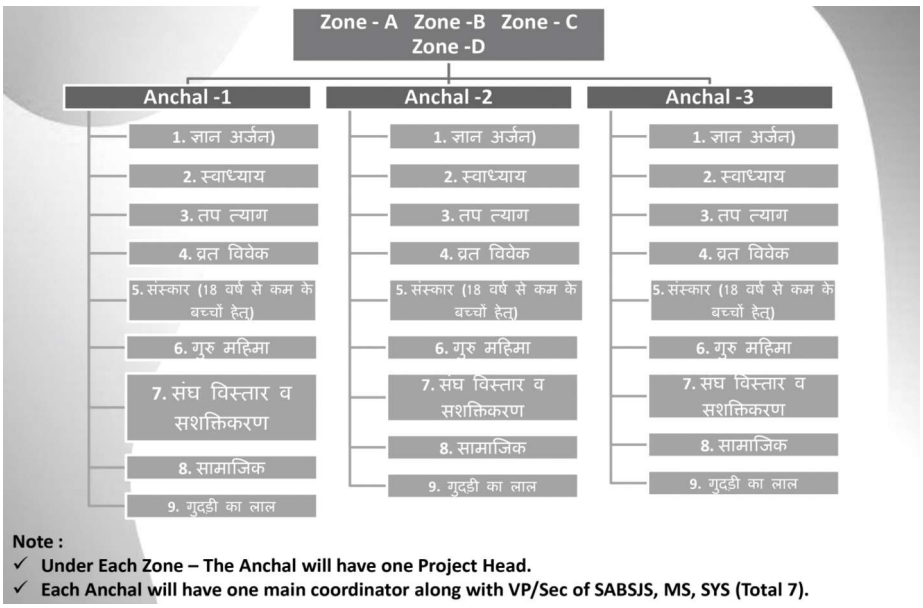

Note :
- ✓ **Under Each Zone – The Anchal will have one Project Head.**
- ✓ **Each Anchal will have one main coordinator along with VP/Sec of SABSJS, MS, SYS (Total 7).**

LEVEL 5 : Anchal Wise into their Respective Sangh

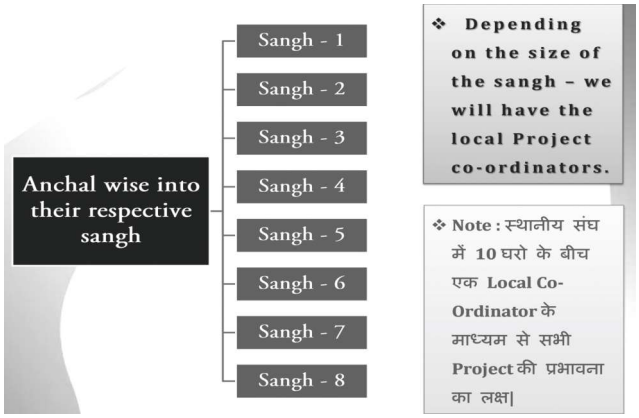

मम्मी – अरे पिंकी बेटा, क्या सोच रही हो?

पिंकी – मम्मा! मैंनें पढ़ा था कि महत्तम महोत्सव में कुल 9 प्रवृत्तियाँ है, पर 9 प्रवृत्तियों को ही क्यों लिया गया? क्या इसके पीछे कोई विशेष कारण है? कहीं ऐसा तो नहीं कि आचार्य भगवन् हुक्मगच्छ के नवम् पट्टधर हैं। इसीलिए 9 प्रवृत्तियों को बनाया गया?

दादी – बहुत अच्छा सवाल है पिंकी! महत्तम की 9 प्रवृत्तियाँ अपने आप में कुछ विशेष हैं।

आगम, तत्त्व और थोकड़ों का जहाँ मिलेगा ज्ञान,
प्रवृत्ति ज्ञानार्जन है उसका नाम।
स्वयं को स्वयं से मिलवाने का जो देती अवसर,
स्वाध्याय प्रवृत्ति से क्या कोई बेहतर।
आचार्य भगवन् तपस्या और व्रत-पच्चक्खाण पर देते जोर,
विवेकवान, जागृत और आत्मार्थी यही कांक्षा हो तो पुरजोर।
अनुशासन और विनय की प्रवृत्ति है संस्कार,
जुड़ गए बच्चे जो करेंगे संघ और समाज के भविष्य को तैयार।
गुणों की खान हैं गुरुवर हमारे, जन-जन में राम की प्रवृत्ति से जुड़ें,
युवा शक्ति का जब होगा संगठन, सामाजिक कार्यों से खिलेगा हर मन।
जुड़ेगा संघ बढ़ेगा संघ तभी तो होगा संघ का विस्तार व सशक्तिकरण,
साधुमार्गी संघ है प्रतिभा का खजाना,
नेतृत्व गुण की जो रखे क्षमता गुदड़ी के लाल से जुड़ जाना।
ऐसी 9 प्रवृत्तियों के मोती ढूँढ़कर लाए हैं,
चरणों में आराध्यदेव के देने सौगात सब मिल आए हैं।।

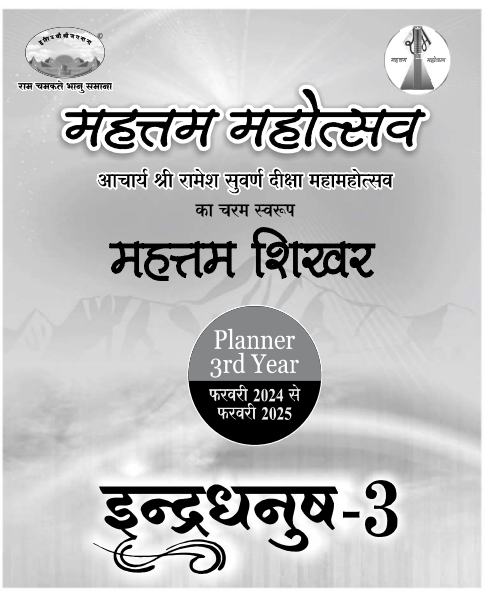

बबलू – दादी, I am excited so much. सभी प्रवृत्तियों के बारे में बताइए न!

दादी – हाँ बेटा, जरूर। सभी प्रवृत्तियाँ, उनके प्रकल्प के विषय में सारी जानकारी मैं जरूर बताऊँगी, परंतु अभी मेरे सामायिक करने का समय हो रहा है। तब तक तुम भी अपनी पढ़ाई कर लो। हम सभी अपने-अपने काम निपटा करके फिर से बैठेंगे और आगे की बात करेंगे।

शेष अगले अंक में...

अपने आचार्यदेव को जानें

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष को '**महत्तम शिखर**' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पाठकों को आचार्यश्री के जीवन से परिचित कराने के लिए उनका जीवन चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह चित्रण 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से प्रारंभ हुआ है, जो 12 माह तक श्रमणोपासक के समाचार अंकों में प्रकाशित किया जाएगा। इसके अंतर्गत आचार्यदेव का संपूर्ण जीवन- **बाल्यकाल, युवावस्था, मुनि प्रवर, युवाचार्य एवं आचार्य अवस्था** आदि विभिन्न पड़ावों का वर्णन किया जाएगा। इन पड़ावों के आधार पर पाठकों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाएँगे, जिनके उत्तर पाठकों को भरकर भिजवाने होंगे। इस शृंखला के अंतिम पड़ाव के रूप में **फरवरी 2025** के अंक में वर्षभर में दिए गए संपूर्ण चित्रण पर एक मुख्य प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें वर्षभर में प्रकाशित विभिन्न पड़ावों पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। अत: पाठकों से आग्रह है कि 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाशित संपूर्ण सामग्री संग्रहित करके रखें।

गुरु का विरह

नाना गुरु का देवलोकगमन

युवाचार्यश्री, आचार्य श्री नानेश की नेश्राय में उसी तरह निश्चिंत थे जिस तरह पिता की छत्रछाया में पुत्र। सारा कार्यभार युवाचार्यश्री जी पर था, परंतु आचार्यश्री की उपस्थिति उनके लिए पूर्ण संबल थी। युवाचार्यश्री बेबाक होकर धर्म जागरणा हेतु विचरण कर रहे थे। उनकी दृढ़ता और आचार्य श्री नानेश की दूरदर्शिता पर जनता नतमस्तक थी।

मेवाड़ के उदयपुर में होली चातुर्मास पश्चात् दीक्षा प्रसंग हेतु नीमच पधारे। नीमच में दीक्षा प्रसंग पूर्ण कर चातुर्मासार्थ रतलाम पधारना हुआ। गुरुकृपा और अथक पुरुषार्थ से रतलाम में 51 मासखमण संपन्न हुए। रतलाम चातुर्मास अपूर्व तप-त्याग के साथ व्यतीत हुआ।

दीक्षा के बाद प्रथम बार युवाचार्यश्री एवं आचार्यश्री लंबे समय के लिए दूर रहे। दीक्षा से युवाचार्य तक के 17 चातुर्मास गुरुदेव के साथ ही हुए थे। उन्हें गुरु सेवा जैसा रस किसी भी कार्य में नहीं आता। चातुर्मास पूर्ण होते ही युवाचार्यश्री गुरुचरणों में ब्यावर पधार गए। जब स्वयं आचार्यश्री जी युवाचार्यश्री को कुछ आगे तक लेने आए तो भक्ति व आशीर्वाद का अपूर्व संगम परिलक्षित हो रहा था। उस दृश्य का शब्दांकन करने की शक्ति मेरे शब्दों में नहीं है।

आगे युवाचार्यश्री का आचार्यश्री के चरणों में रहने का ही भाव था। युवाचार्यश्री का ध्यान सदैव आचार्यश्री के स्वास्थ्य की ओर ही बना रहता।

ब्यावर से भीलवाड़ा होते हुए चितौड़ में दीक्षा प्रसंग पर पूर्व प्रधानमंत्री माननीय श्री एच.डी. देवेगौड़ा जी की उपस्थिति स्वर्णिम थी। उस स्वर्णिम उपस्थिति में भी अप्रतिम था कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने मुँहपत्ती बाँधकर अपना वक्तव्य दिया, साथ ही पूरे कार्यक्रम में मुँहपत्ती लगाकर रखी।

यहाँ से आचार्य श्री नानेश के स्वास्थ्य में गिरावट आने लगी। डॉक्टर ने चैकअप कर परामर्श दिया कि स्थिति ज्यादा खराब है, शीघ्रातिशीघ्र वाहन द्वारा उदयपुर ले जाया जाए ताकि सुचारू इलाज हो सके। युवाचार्यश्री जिनवचनों पर तटस्थ रहे और वाहन में ले जाने से मना कर दिया। मुनियों ने अपने सशक्त कँधों पर डोली उठाकर कुछ ही दिनों में उदयपुर पहुँचा दिया। युवाचार्यश्री संघ व्यवस्था संबंधी सभी जिम्मेदारियों के निर्वहन के साथ-साथ आचार्यश्री की सेवा में भी तत्पर खड़े रहते थे।

आचार्यश्री के प्रवचन के अंतिम उद्‌गार—''मेरे समान ही युवाचार्यश्री जी की आराधना करना। युवाचार्यश्री के अनुशासन में रहना। उनकी विनय, भक्ति और आज्ञा की अनुपालना करना। उनके आदेशानुसार प्रवृत्ति करना। उन्हें मेरे समान ही समझना।

27 अक्टूबर 1999 को डॉक्टरों ने कहा—ड्रिप चढ़ानी पड़ेगी, परंतु किसी सुधार की उम्मीद नहीं लगती। ऐसे में मुनिवर्ग की सहमति से प्रात: 9 बजकर 45 मिनट पर तत्कालीन युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. (वर्तमान आचार्य भगवन्‌) ने चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आचार्य श्री नानेश के संकेतों एवं भावों को ध्यान में रखकर उनको पूर्ण चेतनावस्था में संलेखनापूर्वक तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान कराया। इसी क्रम में सायं 5 बजकर 25 मिनट पर चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान कराए। रात्रि 10 बजकर 41 मिनट पर संथारा सीझ गया और आचार्यश्री की आत्मा उच्च देवलोक हेतु प्रयाण कर गई। उपस्थित मुनियों ने युवाचार्यश्री को आचार्य पद की चादर धारण कराई।

********** प्रश्नावली **********

संक्षिप्त में उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1. जब स्वयं आचार्यश्री जी युवाचार्यश्री को कुछ आगे तक लेने आए तो क्या परिलक्षित हो रहा था?

प्रश्न 2. रतलाम में कितने मासखमण संपन्न हुए?

प्रश्न 3. 'मेरे समान ही युवाचार्यश्री जी की आराधना करना' - यह पंक्ति कहाँ से ली गई है?

प्रश्न 4. जनता किस पर नतमस्तक थी?

प्रश्न 5. नीमच में दीक्षा प्रसंग पश्चात्‌ चातुर्मासार्थ कहाँ पधारना हुआ?

प्रश्न 6. दीक्षा से युवाचार्य तक के कितने चातुर्मास गुरुदेव के साथ ही हुए थे?

प्रश्न 7. आचार्य श्री नानेश को संथारा किस दिन एवं किस समय कराया गया?

प्रश्न 8. चित्तौड़ में दीक्षा प्रसंग पर कौन से पूर्व प्रधानमंत्री गुरुचरणों में उपस्थित हुए?

प्रश्न 9. उदयपुर में होली चातुर्मास पश्चात्‌ दीक्षा प्रसंग कहाँ पर था?

प्रश्न 10. युवाचार्यश्री, आचार्य श्री नानेश की नेश्राय में किस प्रकार निश्चिंत थे?

उत्तर भिजवाने हेतु WhatsApp No. : 9314055390
Email : shramanopasak @sadhumargi.com

अंतिम तिथि
25 अक्टूबर 2024

विविध समाचार

राम चमकते भानु समाना

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

उदयपुर, हिरण मगरी सेक्टर-5। शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्या श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 4 से 8 अगस्त तक महिला मंडल द्वारा '**म्हारा नैणां में बस जाओ महावीर**' महिला शिविर आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 85 महिलाओं ने भाग लिया। शिविर के माध्यम से भगवान महावीर के स्वप्न, बल और रूप के बारे में कथानक आदि के माध्यम से विस्तार से समझाया गया। प्रत्येक दिन शिविर पश्चात् साध्वीवर्याओं द्वारा प्रश्नोत्तरी का आयोजन होता। सभी महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था।

– पी.के. डागा

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

बालेसर दुर्गावत्ता। शासन दीपिका साध्वी श्री महक श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास में अभूतपूर्व धर्माराधना गतिमान है। पर्युषण पर्व में भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति में साध्वीश्री जी ने श्रेणिक कुमार का जीवन चारित्र फरमाया। प्रतिदिन प्रातः से सायं तक नवकार मंत्र जाप चलता। सभी सामूहिक रूप से इसका लाभ लेते। अन्य समुदायों के भाई-बहनों ने भी लाभ लिया। **– नरेश कोचर**

बीकानेर। शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा., कविरत्न श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 सेठिया कोठड़ी में एवं पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-15 समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। आपश्री जी के चातुर्मास में तपाराधना एवं धर्म-ध्यान का ठाठ लगा हुआ है। प्रातः श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. प्रार्थना फरमाते हैं।

पर्युषण पर्व में शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा. ने सातों ही दिन क्रमशः '**ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र**', '**मोक्ष मार्ग की पहली सीढ़ी सम्यग्दर्शन**', '**सद्चारित्र श्रेष्ठ है**', '**तप बड़ो रे संसार में**', '**मन चंगा तो कठौती में गंगा**', '**संस्कार क्रांति**', '**क्षमा वीरस्य भूषण**' आदि विषयों पर प्रवचन फरमाए।

श्री राकेश मुनि जी म.सा. ने '**श्रावक के वचन व्यवहार**' पर मार्मिक उद्बोधन में उदाहरणों एवं प्रसंगों से विषय विवेचन किया। श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने नवाचार्यों के प्रेरक जीवन पर प्रभावी प्रकाश डाला। श्री मंगल मुनि जी म.सा. ने '**काविलीयं अज्झयणं**' से कपिल द्वारा दो माशा सोने के लोभ से संपूर्ण राज्य माँगने के भावों में पश्चात्ताप विषय पर प्रवचन फरमाया।

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज खाली होने का दिन है। भीतर में रहे विषय-विकारों एवं कषायों की ग्रंथि हटाने की घड़ी आई है। नर भव पाया है तो जीती हुई बाजी हार न जावें। ग्रंथि रह गई तो हमारी हार है। क्षमापना से पूर्व हम स्वयं को टटोलकर निर्णय लें कि आगे से कोई गलत कर्म नहीं करेंगे।

साध्वी श्री प्रथमा श्री जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का वाचन कर अर्थ फरमाया। साध्वी श्री लवियशा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध से बचें। ये सत्य, शील, विनय को हनन कर देता है। क्रोध नहीं आए, ऐसा प्रयास करें। साध्वी श्री भवपार श्री जी म.सा. ने फरमाया कि समय किसी का इंतजार नहीं करता। बीता हुआ समय लौटकर आने वाला नहीं है। आत्मा को आत्मज्ञान में लगावें। साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संसार में भटकने का कारण है कि हम सम्यक् निर्णय नहीं ले पाते। जिस पद पर हैं उस अनुरूप कर्तव्य पालन करें।

साध्वी श्री ज्योत्सना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणिप्रभा जी म.सा. के सान्निध्य में प्रतिदिन दोपहर में धार्मिक कार्यक्रम हुए। भाइयों-बहनों ने आठों ही दिन नवकार मंत्र का 12 घंटे जाप किया। तप के क्रम में 33 तेले, प्रतिदिन दया, दयाभाव, एकासन की सामूहिक आराधना आदि हुए। **पंद्रह-** खुशबू जी ढड्ढा, **नौ-** रुचिता जी चौरड़िया, कनक देवी बच्छावत, जितेंद्र जी बुच्चा, **अठाई-** संतोष जी सुराणा, राष्ट्रीय महामंत्री सुरेश जी बच्छावत, सुनीता जी पारख, मनीष जी पुगलिया, अशोक जी सेठिया, नवीन जी कोठारी, मोनिका जी कोठारी, अरिहंत जी चौपड़ा, पुखराज जी बुच्चा, भव्य जी मुकीम, निधि जी बाँठिया, विनीत जी बाँठिया आदि के तपस्याएँ संपन्न हुईं। वीर पिता इंद्रराज जी बोथरा ने 45 उपवास के प्रत्याख्यान लिए एवं शांता देवी संकलेचा के 27 की तपस्या जारी है। तप अनुमोदना पर चौबीसी कार्यक्रम रखा गया। स्थानीय संघ एवं महिला मंडल द्वारा अभिनंदन किया गया।

- सुरेंद्र पारख

देशनोक। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6 का भव्य चातुर्मास श्री जैन जवाहर मंडल में गतिमान है। एकासन, आयंबिल, उपवास की लड़ी निरंतर चल रही है। प्रवचन में साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जो कर्म हमने बाँधे हैं, उनको भोगे बिना छुटकारा मिलने वाला नहीं है। कर्म बाँधते समय सोचते नहीं और भोगते समय रोते हैं।

साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. '**जीव का परम कल्याण होने वाले बोल**' को बड़े ही सुंदर तरीके से उदाहरण सहित फरमाया। साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में महिलाओं का पंच दिवसीय ज्ञान आराधना शिविर आयोजित किया गया, जिसमें साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. ने अध्ययन करवाया। दोपहर में कर्मग्रंथ की विशेष कक्षा चल रही है। बालक-बालिकाओं का दो दिवसीय शिविर भी लगाया गया, जिसमें लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया। बालक मयंक भूरा ने अठाई तप कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया, जिसकी संघ द्वारा त्याग-तप के साथ अनुमोदना की गई। दो धर्मचक्र तप हुए।

- आशीष बुच्चा

गंगाशहर-भीनासर। युगद्रष्टा, युगपुरुष, ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य जी के पुण्यधाम श्री जवाहर विद्यापीठ में शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मास सानंद गतिमान है। चातुर्मास प्रारंभ से ही एकासना, आयंबिल, उपवास की लगभग 18 कड़ियाँ निरंतर गतिमान हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना श्री विनय मुनि जी म.सा. द्वारा कराई जाती है। भाई-बहनों की धार्मिक कक्षा में जैन तत्त्व निर्णय पुस्तक सहित ज्ञानार्जन का लाभ मिल रहा है। श्री विनय मुनि जी म.सा. बहुत ही सुंदर विवेचन फरमाते हैं। विद्यार्थियों की प्रत्येक 15 दिन से परीक्षा होती है। वरीयता क्रम में आने वालों को सम्मानित किया जा रहा है।

प्रवचन सभा में श्री मधुर मुनि जी म.सा. जिनवाणी के अनुसार प्रवचन फरमाते हुए प्रेरणाएँ दे रहे हैं। तत्पश्चात् श्री विनय मुनि जी म.सा. श्रावक के 21 गुणों की शानदार विवेचना फरमाते हैं। साथ ही प्रेरणादायक कथानुभाग भी चल रहा है, जिसे सुनकर भाई-बहन मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। विशेष अवसरों एवं रविवार को श्री गौतम मुनि जी म.सा. जिनवाणी का

रसपान कराते हैं। रात्रि प्रतिक्रमण, संवर, पौषध हो रहे हैं। प्रत्येक पूर्णिमा एवं अमावस्या को श्री विनय मुनि जी म.सा. स्वाध्याय करवाते हैं, जिसमें भाइयों की अच्छी उपस्थिति रहती है। प्रत्येक रविवार को दया, दयाभाव का कार्यक्रम चल रहा है। अनेक भाई-बहन 5-5 सामायिक करने का लाभ ले रहे हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व चारित्रात्माओं के सान्निध्य में धर्म-ध्यान, तप-त्याग के साथ मनाया गया। पर्युषण प्रारंभ से ही 24 घंटे नवकार मंत्र जाप भाई-बहनों में अलग-अलग रखा गया। प्रवचन में श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र की व्याख्या फरमाते हुए अनेक प्रेरणाएँ दी। श्री विनय मुनि जी म.सा. ने आठों ही दिवस अलग-अलग मार्मिक विषयों पर प्रवचन फरमाया।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. की ओजस्वी वाणी में प्रवाहित आगमसम्मत उद्बोधनों को सभी अपने जीवन के साथ जोड़कर चलने का प्रयास कर रहे हैं। प्रवचन पश्चात् पर्युषण के रंग ज्ञान-ध्यान के संग परीक्षा में अच्छी उपस्थिति रहती। सभी परीक्षार्थियों का संघ द्वारा उत्साहवर्द्धन किया गया। दोपहर में पट्टावली वाचन एवं प्रत्येक दिन अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिनमें श्री प्रशम मुनि जी म.सा., श्री जयेश मुनि जी म.सा. का सान्निध्य मिला। सायंकालीन प्रतिक्रमण में उपस्थिति देखकर मन हर्षित हो जाता है। रात्रि संवर एवं पौषध भी पर्याप्त मात्रा में हो रहे हैं। नवरंगी कार्यक्रम का लाभ भाई-बहनों ने लिया। आठों दिन दया एवं दयाभाव का कार्यक्रम हुआ।

दिनांक 9 सितंबर को सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में मनाया गया। प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् सभा संचालन करते हुए संघ मंत्री सहित सभी इकाइयों के अध्यक्षों ने भावाभिव्यक्ति में क्षमायाचना के भाव उपस्थित किए। श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने क्षमायाचना का महत्व बताते हुए क्षमापना की विशेष प्रेरणा दी। उपस्थित सभी ने एक-दूसरे से क्षमायाचना का प्रसंग उपस्थित किया।

तप क्रम में **31–** तारा देवी सेठिया, मयंक जी सोनावत, **16–** शकुंतला जी सोनावत, **15–** अशोक जी डागा, **14–** शांति देवी भूरा (जारी), **13–** जतन देवी पटवा, **11–** मंजू देवी सुराणा, राकेश जी बैद, सपना जी भूरा, **10–** जया जी श्रीश्रीमाल, **9–** विमला देवी सिपानी, प्रेम देवी बैद, माया जी दफ्तरी, मुकेश जी सेठिया, सौम्य बोरड़ (जारी), **अठाई–** अर्पित जी सेठिया, ध्रुव जी बाँठिया, दिलीप जी सेठिया, पलक जी डागा, प्रियंका जी भूरा, महेंद्र जी सोनावत, भावना बोथरा, किरण देवी सेठिया, सुंदरलाल जी सुराणा, तारा देवी सेठिया, लीला देवी पींचा, अनिता जी डागा, रेणुका जी गिड़िया, सुनीता जी बोथरा, कीर्ति जी बोथरा, शिल्पा जी बोथरा, जयश्री जी कावड़िया, ऋषभ जी आसानी, खुशी दुगड़, गणेशमल जी भूरा, खुशी डागा, विमला देवी डागा, चिराग जी सामसुखा, ओम जी सेठिया आदि ने किए। तपस्याओं के साथ अनेक चौला, पंचौला, तेला, बेला, उपवास, एकासना, आयंबिल आदि तपस्याएँ गतिशील हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 सुख-सातापूर्वक शिवा बस्ती महिला समता भवन में विराजमान हैं। आपश्री के सान्निध्य में तप-त्याग का ठाठ लगा हुआ है। आपश्री श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणाएँ देकर धर्म की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

– चंचल कुमार बोथरा

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। पर्याय ज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में समता भवन में पयुर्षण पर्व का आगाज तप-त्याग एवं नवकार मंत्र जाप के साथ हुआ। शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने पयुर्षण पर्व का महत्त्व बताते हुए

फरमाया कि आत्मा के कल्याण के लिए मनुष्य भव बहुत महत्त्वपूर्ण है। पर्युषण पर्व एक नया संदेश लेकर आते हैं। अपनी आत्मा को तराशने के लिए गुणों की दृष्टि होनी चाहिए। हमें इस पर्युषण पर्व में अपनी आत्मा में गुणों का रंग भरना है।

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने भजन ***'पयुर्षण का पर्व आया है, सबका मन हर्षाया है'*** के साथ फरमाया कि धर्म से जुड़ाव में डर नहीं होना चाहिए। धर्म तो यही कहता है कि सब सुखी रहें। हमें ऐसे जीना है जैसे हर पल आखिरी हो।

साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जिस प्रकार व्यक्ति अपने जीवन का बीमा करवाता है, पर वह उसके काम नहीं आता। अगर वह अपनी आत्मा को सुरक्षित रखने के लिए कर्मों को हटाने का बीमा करवाए तो कर्मों की निर्जरा जन्म के साथ भी और मरने के बाद भी होती रहती है। जैसी सिद्ध प्रभु की आत्मा है वैसी ही हमारी भी आत्मा है। इस पर्व पर अपनी आत्मा को पापों व वासना के पुद्गलों से बचाने का प्रयास करें।

साध्वी श्री प्रखर श्री जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र के वाचन के साथ फरमाया कि इन आगमों में ऐसी विशिष्ट आत्माओं का वर्णन है, जो अपने पुरुषार्थ से सारे कर्मों का क्षय करके उसी भव में सिद्ध अवस्था में चले गए। हम भी उन आत्माओं से प्रेरणा लेकर अपने कर्मों का क्षय करें।

सभा के अंत में सभी को चातुर्मास के प्रथम दिन से तेला करने की प्रेरणा दी गई एवं प्रत्याख्यान करवाए गए।

पर्युषण पर्व के पाँचवें दिन मुमुक्षु हर्षाली जी कोठारी, ब्यावर ने प्रवचन सभा में अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि अहोभाग्य से जैन धर्म मिला है। 3 दिसंबर को मेरी जैन भागवती दीक्षा संभावित है। उसी दिन मेरा नया जन्म होगा। सभी की यही भावना बननी चाहिए कि हमारा पहला लक्ष्य सिद्ध गति में जाने का हो। माता-पिता की विशेष कृपा है कि मुझे गुरुचरणों में समर्पित कर रहे हैं। अत्र विराजित चारित्रात्माओं ने आशीर्वाद प्रदान कर मुझे मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ने में मदद कर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। **– नोरतमल बाबेल**

✧✧✧✧ छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ✧✧✧✧

धमतरी। शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में आयोजित गुणानुवाद सभा में संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. के महाप्रयाण पर श्रद्धाभाव अर्पित किए गए। श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि विनय, विवेक साधु जीवन की मुख्यधारा हैं। साधक इनसे जुड़ा रहे और मान, बड़ाई, ईर्ष्या से दूर रहे तो संसार सागर पार कर शाश्वत सुखों को प्राप्त कर सकता है।

वक्ताओं के क्रम में अनेक गणमान्यजनों ने अपनी भावाभिव्यक्ति में संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. के अनेक गुणों का गुणगान किया। सभा के अंत में 4-4 लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि दी गई।

11 अगस्त को आयोजित सामूहिक दया कार्यक्रम में 35 दया सानंद संपन्न हुई। दिनांक 10 से 12 अगस्त तक आयोजित तीन दिवसीय महिला दिशाबोध शिविर में लगभग 70 महिलाओं ने भाग लेकर '**अहोदानम्**' विषय पर ज्ञानार्जन किया। सभी शिविरार्थियों को श्री साधुमार्गी जैन संघ की ओर से सम्मानित किया गया। शिविर में महिला मंडल का पूर्ण सहयोग रहा। शिविर समापन पर शिविरार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए।

संथारा साधिका साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. के महाप्रयाण का समाचार ज्ञात होने पर 15 अगस्त को चारित्रात्माओं के सान्निध्य में गुणानुवाद किया गया। श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने साध्वीश्री जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए इनके महाप्रयाण को शासन की अपूरणीय क्षति बताया। सामूहिक 4-4 लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में 25-26 अगस्त को बच्चों का शिविर श्री महाकौशल शिविर ट्रस्ट एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। प्रातः समता शाखा के पश्चात् एक अलग कार्यक्रम में शिविर के उद्घाटन के अवसर पर अनेक गणमान्य संघ प्रमुख उपस्थित थे। दो दिवसीय शिविर में म.सा. द्वारा सरलता, विनय, अनुशासन, सामायिक एवं अन्य विषयों पर सरल भाषा में मार्गदर्शन किया गया। मूलचंद जी सेठिया, रूपेश जी छाजेड़, रायपुर, कु. पलक डोसी, सरोना, कु. वीनल पारख, भखारा, भारती जी पारख, दुर्ग एवं पायल जी कुचेरिया, कुसुमकसा ने अपनी अमूल्य अध्यापन सेवाएँ दीं। शिविर में जगदलपुर, भखारा, नगरी, डोंडीलोहारा, रानीतराई, डोंगरगढ़ एवं स्थानीय बच्चों सहित 113 बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। राखेचा भवन में आयोजित समापन समारोह का शुभारंभ समता बालिका मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मंच पर शिविर अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष, संरक्षक सहित स्थानकवासी एवं साधुमार्गी संघ पदाधिकारी आदि अनेक गणमान्यजन विराजमान थे। शिविर ट्रस्ट अध्यक्ष ने शिविरार्थियों को मंगलकामनाएँ दी। शिविरार्थियों ने शिविर अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में शिविर अध्यापकों एवं शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। **– दीपक बाफना**

नगरी। मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा के भव्य वरघोड़ा एवं बहुमान कार्यक्रम के साथ समता भवन का भव्य उद्घाटन समारोह अपूर्व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। सकल जैन श्रीसंघ एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 6 अगस्त को मंडी प्रांगण में आयोजित अभिनंदन कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, क्षेत्रीय विधायक श्री अंबिका जी मार्कान, सकल जैन समाज अध्यक्ष, साधुमार्गी जैन संघ अध्यक्ष सहित अनेक गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

मुमुक्षु बहन ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं परिवारजनों की कृपा से मैं संयम पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। यह स्वागत मेरा नहीं अपितु त्याग-वैराग्य का है। इसे आचार्य भगवन् के चरणों में समर्पित करती हूँ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में मुमुक्षु बहन के त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए वीर परिवार को शुभकामनाएँ दी एवं गुरु गुणगान किए।

अनेक संस्थाओं ने मुमुक्षु बहन का भावभीना स्वागत-अभिनंदन किया। अभिनंदन पश्चात् भव्य वरघोड़ा निकाला गया। वरघोड़ा शहर के विभिन्न मुख्य मार्गों से होते हुए जैन धर्म का परचम फहरा रहा था। मार्ग में अनेक स्थानों पर मुमुक्षु बहन का आत्मीय बहुमान किया गया।

इसी क्रम में समता भवन का भव्य उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं उपस्थित अन्य पदाधिकारियों के करकमलों से नवकार मंत्र जाप के साथ संपन्न हुआ। स्थानीय संघ प्रमुख ने आभार ज्ञापन किया। छत्तीसगढ़ के अनेक क्षेत्रों से सैकड़ों गुरुभक्त उपस्थित थे।

– रूपेश छाजेड़

“

प्रभु महावीर ने कहा है कि सभी आत्माओं को स्व-आत्मतुल्य समझो। जैसा आचरण स्वयं को अच्छा नहीं लगता वैसा दूसरों के प्रति भी मत करो। कोई शक्ति संपन्न व्यक्ति ऐसा आचरण नहीं करता कि कोई उसको मारने वाला आ जाए तो वह अपने आपको बचाने का प्रयास नहीं करे, वह हर संभव प्रयास करेगा। अतः वह अपने आपको बचाने और दूसरों को नहीं बचाने के कारण **‘आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्’** का आचरण नहीं कर पाता। इस प्रकार जो अहिंसा की विधि रूप प्रवृत्ति प्राणियों की रक्षा करने को धर्म नहीं मानता, वह धर्म में अधर्म बुद्धि रखने वाला है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

केंद्रीय प्रवासी दल द्वारा अगस्त माह में दो अंचलों का सघन प्रवास

अनेक स्थानों पर संघ विकास के आयाम स्थापित

छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल

केंद्रीय प्रवासी दल की चार दिवसीय छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल प्रवास यात्रा 5 से 8 अगस्त 2024 को हुई। इस प्रवास में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं मंत्री सहित संघ आबद्धता सह-संयोजक, आंचलिक संयोजक एवं क्षेत्रीय पदाधिकारी उपस्थित थे। प्रवास क्षेत्र के स्थानीय संघ अध्यक्ष, मंत्री, कार्यसमिति सदस्य व कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रवास क्षेत्र – रायपुर, अर्जुनी, महासमुंद, धमतरी, नगरी, सरोना, बालोद, दल्लीराजहरा, दुर्ग, बेरला आदि।

सभी प्रवास क्षेत्रों में संघ प्रवृत्तियों, संघ आबद्धता, महत्तम शिखर महोत्सव, संघ आजीवन, साधारण, प्रभावक, महाप्रभावक एवं श्रमणोपासक सदस्यता, अभिरामम् आनंदम्, इदं न मम, विहार सेवा, समता भवन निर्माण सहित आचार्य भगवन् द्वारा फरमाए गए आयामों की विशिष्ट प्रभावना की गई। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने संघ विकास में स्थानीय संघ की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

प्रवास का शुभारंभ रायपुर में चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन से हुआ। तत्पश्चात् प्रवासी दल अर्जुनी पहुँचा, जहाँ से दानपेटी योजना के अंचल संयोजक प्रवासी दल में शामिल हुए। स्थानीय संघ के साथ आयोजित बैठक में संघ उन्नयन व उत्थान की सारगर्भित चर्चा के साथ **इदं न मम सदस्यता** हेतु महानुभावों ने स्वीकृति प्रदान की। प्रवास के अगले पड़ाव में महासमुंद संघ के साथ बैठक का आयोजन कर संघ गतिविधियों में जनभागीदारी पर चर्चा के पश्चात् प्रवासी दल धमतरी के लिए रवाना हुआ। धमतरी में युवा संघ सदस्यों के साथ आयोजित बैठक में आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों को जन-जन तक पहुँचाने एवं महत्तम शिखर महोत्सव की जानकारी दी गई। धमतरी में रात्रि विश्राम के पश्चात् अगले दिवस नगरी में आयोजित मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा के अभिनंदन समारोह में उपस्थित होने का सौभाग्य मिला। कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सकल जैन समाज में **'अभिरामम्'** पुस्तक पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिता की प्रभावना की। इस अवसर पर नगरी में नवनिर्मित समता भवन का लोकार्पण नवकार महामंत्र के जाप के साथ संपन्न हुआ। स्थानीय संघ एवं स्व. श्री बिरधीचंद जी नाहटा की पावन स्मृति में **नाहटा परिवार** द्वारा महत्तम महोत्सव में सहयोग राशि की घोषणा की गई।

नगरी में दोनों कार्यक्रम संपन्न करने के पश्चात् प्रवासी दल बालोद पहुँचा, जहाँ स्थानीय संघ के साथ व्यापक विचार-विमर्श किया गया एवं संघ प्रवृत्तियों को संघ के अंतिम सदस्य तक पहुँचाने की प्रभावना की गई। रात्रि विश्राम बालोद में ही किया गया।

प्रवास के तृतीय दिवस बालोद में चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन पश्चात् दल्लीराजहरा की ओर प्रस्थान हुआ। यहाँ स्थानीय संघ के साथ आयोजित बैठक में सार्थक चर्चा व सुझाव आदान-प्रदान के साथ संघ प्रवृत्तियों के प्रचार-प्रसार का आह्वान किया गया। इस दौरान **महत्तम महोत्सव** एवं **इदं न मम सदस्यता** हेतु महानुभावों ने स्वीकृति प्रदान की। बालोद के पश्चात् दुर्ग संघ के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में **सुश्राविका सुंदर बाई कोटड़िया, कोंडागाँव** ने **महाप्रभावक सदस्यता** हेतु स्वीकृति प्रदान की। प्रवासी दल के आह्वान पर **महत्तम महोत्सव** एवं **इदं न मम सदस्यता** हेतु महानुभावों ने स्वीकृति प्रदान की। यहाँ से प्रवासी दल बेरला पहुँचा, जहाँ स्थानीय संघ के साथ आयोजित बैठक में सभी के आत्मीय स्वागत के पश्चात् विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई एवं संघ गतिविधियों में सहयोग की अपील की गई।

बेरला में रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रवास के अंतिम दिवस प्रवासी दल रायपुर पहुँचा। यहाँ वृंदावन हॉल में आयोजित बैठक में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने संघ की विकास यात्रा में स्थानीय संघ की भागीदारी विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए संघ सेवा में आगे आने की प्रेरणा दी। यहाँ साधुमार्गी संघ के होनहार, मेधावी विद्यार्थियों एवं दानपेटी योजना में सहयोग देने वालों को सम्मानित किया गया। यहाँ से प्रवासी दल के सभी सदस्य अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना हुए एवं प्रवास पूर्ण हुआ।

प्रवास के साथ मार्गवर्ती क्षेत्रों में चातुर्मासार्थ विराजित शासन दीपक श्री अक्षय मुनि म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-6, शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकलशीला जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशप्रज्ञा जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के दर्शन वंदन, प्रवचन का लाभ सहज ही प्राप्त हुआ।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- महाप्रभावक सदस्यता हेतु स्वीकृति प्राप्त
- महत्तम महोत्सव हेतु 6 घोषणाएँ
- इदं न मम सदस्यता हेतु 22 घोषणाएँ
- संघ सहयोग हेतु 3 घोषणाएँ
- नगरी समता भवन का राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा लोकार्पण

- अंचल राष्ट्रीय मंत्री

बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड एवं आंशिक ओड़िशा अंचल

केंद्रीय प्रवासी दल की पाँच दिवसीय बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल प्रवास यात्रा 20 से 24 अगस्त 2024 को हुई। प्रवास यात्रा में संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों सहित प्रवृत्ति संयोजक, महिला समिति की राष्ट्रीय महामंत्री, आंचलिक उपाध्यक्ष-मंत्री, युवा संघ के आंचलिक उपाध्यक्ष-मंत्री एवं अंचल के कार्यसमिति सदस्य उपस्थित थे।

प्रवास क्षेत्र - टाटानगर, खड़गपुर, घुसकड़ा,

बोलपुर, सैंथिया, रामपुरहाट, बरहमपुर, बेलडांगा, हावड़ा, कोलकाता आदि।

सभी प्रवास क्षेत्रों में संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों, संघ प्रभावक, महाप्रभावक, श्रमणोपासक सदस्यता, अभिरामम् आनंदम्, महत्तम शिखर वर्ष, संघ आबद्धता, इदं न मम सहित आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त विभिन्न आयामों की पुरजोर प्रभावना की गई। प्रवासी दल ने संघ की प्रगति में प्रत्येक साधुमार्गी परिवार के सहयोग हेतु आह्वान किया।

कोलकाता में निवासरत संघ के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सरदारमल जी कांकरिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष से शिष्टाचार भेंट हुई। वीर पिता अबीरचंद जी सेठिया, लालचंद जी डागा, वीर परिवार के सिद्धार्थ जी सेठिया आदि संघनिष्ठ परिवारों से स्नेह मिलन का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रवास के दौरान शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा आदि ठाणा-4 के दर्शन, वदंन एवं मार्गदर्शन का लाभ सहज ही प्राप्त हुआ।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- महाप्रभावक सदस्य – 3
- नए संघ (महिला समिति) का गठन – 1
- स्थानीय संघ में मनोनयन – 1
- संघ आबद्धता – 1
- इदं न मम सदस्यता – 8
- महत्तम महोत्सव सहयोग – 22

- अंचल राष्ट्रीय मंत्री

संसार के अंदर विविध दर्शन देखते हैं और विविध तत्त्वों का अध्ययन करते हैं, इसलिए कि सत्य के स्वरूप को प्राप्त कर लें। शास्त्रों व ग्रंथों का भी अध्ययन किया जाता है। वे आगम अक्षर-अक्षर के रूप में सत्य होते हैं, फिर भी सत्य को उन अक्षरों के अर्थ में गहरे डूबकर ही खोजा जा सकता है। कोरे अक्षरों में ही भटकने से आत्मशुद्धि का ज्ञान प्रगतिशील नहीं होता और वह ज्ञान प्राप्त नहीं होता तो वह आत्म-स्वरूप को भी पहचान नहीं पाता तथा आत्म-स्वरूप को पहचाने बिना परमात्म-स्वरूप का दर्शन कहाँ? इस हैरानी को लेकर वह बार-बार दौड़ता है, फिर भी उसको अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिलती है। यह मन की दौड़ होती तो है परमात्मा का दर्शन करने के लिए, लेकिन जब दर्शन नहीं कर पाता है तो हतोत्साहित हो जाता है। जैसे मयूर नाचता है, अपने सुंदर पंखों को देखकर बहुत हर्षित होता है और सोचता है कि मैं कैसा सुंदर दिखता हूँ एवं कितना सुंदर नाचता हूँ! लेकिन जब वह अपने पैरों की तरफ देखता है तो हैरानी महसूस करता है। वैसे ही भगवान के भक्त भगवान को पाने के लिए बहुत दौड़ लगाते हैं, लेकिन जब वे भगवान के दर्शन नहीं कर पाते अर्थात् आत्मा से साक्षात्कार नहीं कर पाते हैं तो उनका उत्साह शिथिल हो जाता है। तब मन में प्रश्न उठता है कि परमात्मा कहाँ है और उनसे मिलन कैसे हो सकेगा?

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

प्रोफेशनल्स के सर्वांगीण विकास को समर्पित दो दिवसीय आवासीय शिविर संपन्न

शिविर में आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं का मिला सान्निध्य

100 से अधिक प्रोफेशनल्स में लिया भाग

साइबर सिक्योरिटी, हेल्थ एंड वेलनेस, वेल्थ मैनेजमेंट, नेटवर्किंग एंड कनेक्ट विद पीयर्स, ए.आई. टेक्निक, रिलेशनशिप मैनेजमेंट आदि विषयों को धार्मिकता के साथ समझने का मिला अवसर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के तत्त्वावधान में साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम का दो दिवसीय आवासीय शिविर प्रोफेशनल सदस्यों के आध्यात्मिक व व्यक्तित्व विकास हेतु 10-11 अगस्त को भीलवाड़ा में आयोजित किया गया। शिविर की टैगलाइन 'I^3 : Illuminate Innovate Inspire...' से सभी में ऊर्जा का संचार हो गया। शिविर में देश के विभिन्न क्षेत्रों से 100 प्रोफेशनल सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं चारित्रात्माओं के सान्निध्य का लाभ ले विभिन्न विषयों को तार्किकता से जीवन में उतारने का प्रयास किया।

इस दो दिवसीय शिविर का शुभारंभ आचार्य भगवन् के प्रवचन से हुआ। प्रवचन पश्चात् अरिहंत भवन में आयोजित प्रथम सत्र में साध्वीवर्याओं ने आचार्य भगवन् द्वारा मार्गदर्शित रॉकेट प्रोग्राम का तलस्पर्शी विश्लेषण के साथ धार्मिक विकास एवं आत्मकल्याण हेतु प्रातःकालीन व सायंकालीन साधना व भोजन से पूर्व '**खामेमि सव्वजीवे**' पाठ के उच्चारण की अनुपम विधि का अभ्यास करवाया। साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री रामनेहा श्री जी म.सा. ने प्रातःकालीन साधना में सर्वार्थसिद्धि, स्वानुभूति, स्वानुविरति, सुप्रवृत्ति और संप्रनति एवं रात्रिकालीन साधना में स्वसंवृत्ति, सन्नियंत्रण, अनुगृहीति आदि क्रियाओं को विस्तार से समझाकर अभ्यास करवाया।

भिक्षु विहार में आयोजित द्वितीय सत्र में साइबर सिक्योरिटी के विशेषज्ञ विक्रम जी सिंघवी ने साइबर क्राइम से सुरक्षा की जानकारी दी। तृतीय सत्र चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में संपन्न होने के

पश्चात् चतुर्थ सत्र में रूपा रावत जी सिंघवी द्वारा स्वास्थ्य और खुशी विषय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी के साथ सजग किया गया। पंचम सत्र में डॉ. नितिन जी तांतेड़ ने धन प्रबंधन विषय का विवेचन करते हुए दीर्घकालिक निवेश एवं समय के साथ '**पॉवर ऑफ मल्टिप्लिकेशन**' से वेल्थ बढ़ाने के बारे में समझाया।

रात में टीम '**थव थुई मंगलं**' द्वारा '**इकोस ऑफ डिवोसन**' भक्ति संगीत व गीतों ने सभी को ऊर्जा प्रदान कर आनंद से भर दिया। तत्पश्चात् रात्रि में '**नेटवर्किंग एंड कनेक्ट विद पीयर्स**' कार्यक्रम हुआ। इसी के साथ प्रथम दिवस के सभी सत्र संपन्न हुए।

शिविर के **द्वितीय दिवस** का शुभारंभ प्रार्थना एवं समता शाखा पश्चात् आचार्य भगवन् द्वारा फरमाए गए प्रवचन से हुआ। इसके पश्चात् आयोजित प्रथम सत्र में नवीन कुमार जी भंसाली द्वारा '**कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.)**' पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई।

द्वितीय सत्र में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. द्वारा दिया गया उद्‌बोधन जीवन में आध्यात्मिक एवं ज्ञानालोक का संचार करने वाला था। निरंतरता पर प्रभावपूर्ण बल देते हुए आपश्री जी ने अनेक उदाहरणों द्वारा निरूपित किया कि धार्मिक क्रियाओं की निरंतरता जीवन को सफल एवं आत्मा को चरमोत्कर्ष तक ले जाने वाली होगी।

आज के दिवस के अंतिम सत्र में सामाजिक ताने-बाने में उल्लास भरने के उद्देश्य से '**रिलेशनशिप मैनेजमेंट**' विषय पर प्रवीणा जी सेठिया ने सामूहिक एक्टिविटी कराते हुए प्रत्येक रिलेशन का विशिष्ट महत्त्व बताया।

इस दो दिवसीय शिविर समापन पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के आशीर्वचन, प्रवचन एवं चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में अत्याधुनिक विषय संदर्भित जानकारी एवं ज्ञानवृद्धि के साथ यह शिविर अपूर्व उल्लास व उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

- साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम टीम

> आचार्यदेव (आचार्य श्री नानेश) किसी बड़े स्कूल में नहीं पढ़े थे। दाँता छोटा-सा गाँव है - 'क का केवलिया' वह भी केलू से घोट लिया। अध्यापक महोदय भी ऐसे कि कभी आ पाते थे कभी नहीं, अत: वे स्वयं पढ़ते थे। हम जानते हैं कि अध्ययन कुछ संस्कारों के माध्यम से भी होता है और ऐसा अध्ययन अद्‌भुत होता है। आचार्य भगवन् गाँव के किसी भी व्यक्ति को दु:खी नहीं देख सकते थे। एक वृद्ध महिला को कुएँ से घड़ा भरकर लाते देख आचार्य भगवन् ने स्वयं घड़ा उसके घर पहुँचा दिया। दु:खी से उनकी हमदर्दी रहती थी। दु:खी के दु:ख में वे भी दु:ख का अनुभव करते थे। उन्होंने जीवन में नाम की कभी कामना नहीं की, यद्यपि संघ के लिए निरंतर कार्य किया, इतना कार्य कि जिसका हम मूल्यांकन नहीं कर सकते।
>
> ***- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.***

अंतरराष्ट्रीय फिजियोथेरेपी डे पर परिचर्चा एवं कार्यशाला आयोजित

परिचर्चा :- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव (महत्तम महोत्सव) के अंतर्गत स्थायी सेवा प्रकल्प के रूप में स्थापित '**समता समग्र आरोग्यम्**' फिजियोथेरेपी सेंटर द्वारा 8 सितंबर को वर्ल्ड फिजियोथेरेपी डे के अवसर पर आकाशवाणी बीकानेर में एक परिचर्चा आयोजित की गई। परिचर्चा में भाग लेते हुए फिजियोथेरेपी सेंटर की प्रभारी डॉ. नेहा जी जैन ने कहा कि सकल जैन समाज के कल्याणार्थ संघ द्वारा अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक प्रवृत्तियों का संचालन हो रहा है। इसी क्रम में '**समता समग्र आरोग्यम्**' के माध्यम से प्रशिक्षित चिकित्सकों द्वारा मरीजों को फिजियोथेरेपी की निःशुल्क सेवा प्रदान की जा रही है। यह राजस्थान का एकमात्र संस्थान है, जो निःशुल्क सेवा प्रदान कर रहा है। 16 अप्रैल 2023 को सेंटर के उद्घाटन से अब तक विभिन्न व्याधियों से ग्रसित लगभग 5000 मरीज इस सेवा से लाभान्वित हो चुके हैं। प्रतिदिन औसतन 100 मरीजों को अत्याधुनिक मशीनों द्वारा चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवाई जाती है। हमारा संघ भविष्य में इस प्रकल्प के वृहद् रूप में '**महत्तम हेल्थ वेलनेस सेंटर**' हेतु दृढ़संकल्पित है। इस नवीन केंद्र की नींव शीघ्र ही भीनासर स्थित आनंद सागर में स्थापित करने हेतु कार्य गतिशील है।

कार्यशाला :- फिजियोथेरेपी डे के इसी पावन अवसर पर बीकानेर स्थित **अपना घर आश्रम** में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, केंद्रीय कार्यालय के जनरल मैनेजर सहित सेंटर की प्रभारी डॉक्टर एवं अन्य जनों ने भाग लिया। निराश्रित लोगों के लिए आयोजित इस कार्यशाला में सेंटर की प्रभारी डॉक्टर ने वर्तमान समय में शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं के निजात हेतु फिजियोथेरेपी को एक कारगर चिकित्सा प्रणाली बताते हुए कहा कि हमारे सेंटर से हजारों जरूरतमंद मरीजों को तकलीफों से निजात मिली है। एलोपैथी चिकित्सा पद्धति के साइड इफेक्ट हो सकते हैं, लेकिन फिजियोथेरेपी चिकित्सा द्वारा शरीर स्वयं ही अक्षमता

को दूर करने के लिए तैयार होता है। इस पद्धति में बिना दवा के इलाज किया जाता है। उपस्थित फिजियोथेरेपी डॉक्टर्स ने इस चिकित्सा पद्धति के सामान्य व्यायाम सिखाए एवं स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी टिप्स बताए। कार्यालय जनरल मैनेजर ने अपना घर आश्रम के संचालक मंडल से निवेदन किया कि आप जरूरतमंदों को हमारे केंद्र में लेकर आएँ। वहाँ शारीरिक एवं मानसिक आधि-व्याधि में लाभ प्राप्त होगा।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने सेवा के इस प्रकल्प को अधिकाधिक जरूरतमंद लोगों तक ले जाने का संकल्प दोहराया एवं आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव (महत्तम महोत्सव) के उपलक्ष्य में सामाजिक प्रकल्प के अंतर्गत स्थापित समता समग्र आरोग्यम् के वृहद् रूप '**महत्तम हेल्थ वेलनेस सेंटर**' हेतु किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। अपना घर आश्रम संचालक मंडल द्वारा आगंतुक महानुभावों का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

- डॉ. नेहा जैन

विशाल धर्मपाल शिविर संपन्न

भीलवाड़ा। धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति द्वारा 11 से 13 सितंबर को भीलवाड़ा में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 135 बच्चों व बहनों का शिविर आयोजित किया गया। शिविर में श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री गौरव मुनि जी म.सा., श्री राजन मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा. आदि ठाणा ने बहुत ही सारगर्भित ज्ञानार्जन कराया।

शिविर के अंतिम दिवस आयोजित समापन समारोह में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, दानपेटी योजना संयोजक, स्थानीय संघ अध्यक्ष, धर्मपाल प्रवृत्ति संयोजक सहित अनेक गणमान्य पदाधिकारियों की गौरवमय उपस्थिति रही। धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति के राष्ट्रीय संयोजक ने अपने प्रतिवेदन में धर्मपाल क्षेत्र में संचालित गतिविधियों के साथ धर्मपालों के आध्यात्मिक व सामाजिक जागरण हेतु किए जा रहे प्रयासों का विवरण प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने धर्मपाल क्षेत्र के विकास पर हर्ष व्यक्त करते हुए सभी को गुरु व संघ समर्पणा का महत्त्व बताया। धर्मपाल बच्चों ने आकर्षण प्रस्तुतियाँ दीं। धर्मपाल समिति एवं भीलवाड़ा संघ द्वारा शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

- महेश नाहटा

विविध भेंट मार्फत

01 अगस्त से 31 अगस्त 2024

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है –

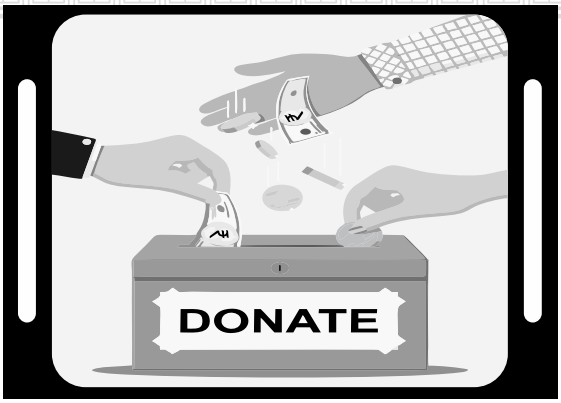

❊❊ संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त) ❊❊

25,00,000/– कमला बाई चोरड़िया परिवार (सुरेश जी दिलीप जी चोरड़िया), बालाघाट (श्री मांगीलाल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

❊ संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त) ❊

6,60,000/– गुलाब देवी भंसाली, कोलकाता
4,40,000/– प्रेमचंद जी कोठारी, चेन्नई
2,50,000/– गुलाब देवी बोथरा, पंचकुला
2,40,000/– सुंदर बाई कोटड़िया, कोंडागाँव
2,20,021/– पीयूष जी बैद, कोलकाता
2,20,000/– महेंद्र जी सोनावत, भीनासर
2,20,000/– पदम कुमार जी बाँठिया, चेन्नई
2,20,000/– संजय जी सिद्धार्थ जी मालू, कोलकाता
2,19,000/– उदयराज जी पारख, रायपुर
1,00,000/– जमना देवी लूणावत, नोखा गाँव

❊❊❊ महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त) ❊❊❊

11,00,000/– रिखबचंद जी बैद, दिल्ली
5,00,000/– सुमन देवी मनोहरलाल जी कटारिया, रतलाम
5,00,000/– अमृत कुमारी जी उगमराज जी मूथा, चेन्नई
5,00,000/– दौलतराज जी खिंवसरा, चेन्नई
5,00,000/– उमराव सिंह जी ओस्तवाल, मुंबई
5,00,000/– अशोक कुमार जी सिपानी, चेन्नई
2,00,000/– घेवरचंद केशरीचंद गोलछा ट्रस्ट, गुवाहाटी/नोखा
2,00,000/– कांता देवी मदनलाल जी कुकड़ा, चेन्नई
1,51,000/– मनोहर कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम
1,50,000/– संजय जी सिद्धार्थ जी मालू, कोलकाता
51,000/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, मयिलाडुतुरै/मायावरम
51,000/– मोहनलाल जी गुणधर, दल्लीराजहरा
51,000/– अबीरचंद जी सेठिया, कोलकाता
51,000/– उम्मेदचंद जी नरेशचंद जी सांखला, दुर्ग
51,000/– दीपचंद जी हरीश जी सांखला, बालोद
51,000/– अजीत जी नागोरी, चेन्नई
50,100/– विनय जी नाहटा, नगरी
11,000/– राजेंद्र कुमार जी खींचा, सिरकाली
11,000/– कमलचंद जी किशोर कुमार जी डागा, दिल्ली
11,000/– मनोहरलाल जी नाहटा, बालोद
5,555/– खेमन जी जैन, होशियारपुर

❊❊❊ समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त) ❊❊❊

50,00,000/– गुप्तदान

समता भवन, हावड़ा

11,00,000/– समता युवा संघ, हावड़ा

समता भवन, रायपुर

3,00,000/– गौतमचंद जी ताराचंद जी बरड़िया, रायपुर

समता भवन, रावतसर

1,25,000/- शिरेमल जी उत्तमचंद जी पुष्पा बाई मांडोत, सोजत सिटी/बेंगलुरु

50,000/- निर्मल कुमार जी मोगरा, बेंगलुरु

समता भवन, संगरिया

1,25,000/- सिरेमल जी उत्तमचंद जी पुष्पा बाई मांडोत, सोजत सिटी/बेंगलुरु

समता भवन, लूणकरणसर

1,25,000/- सिरेमल जी उत्तमचंद जी पुष्पा बाई मांडोत, सोजत सिटी/बेंगलुरु

समता भवन, कांकरोली

1,25,000/- सिरेमल जी उत्तमचंद जी पुष्पा बाई मांडोत, सोजत सिटी/बेंगलुरु

******* इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त) *******

66,000/- चंदनमल जी पिरोदिया, रतलाम

51,000/- चंपालाल जी संजय जी बैद, कोलकाता

51,000/- लालचंद जी डागा, कोलकाता

51,000/- धर्मचंद जी नंदावत, मैसूर

50,000/- भूरालाल जी जीवनमल जी गन्ना, नवसारी

36,700/- पद्मा देवी प्रकाशचंद जी दुग्गड़, जगदलपुर

33,000/- रिखबचंद जी कोचर, गाजियाबाद

25,500/- आशीष जी कोठारी, बेंगलुरु

15,300/- केवलचंद जी संखलेचा, मेहंदीपथार

11,111/- मूलचंद जी मुकेश जी छाजेड़, साजा

11,000/- रतनलाल जी शांतिलाल जी पारख, दल्लीराजहरा

11,000/- ललित कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम

11,000/- अन्नराज जी संजय जी बाँठिया, दल्लीराजहरा

11,000/- मोहनलाल जी पारख, नोखा

10,200/- मोहनलाल जी गौतमचंद जी कोटड़िया, संबलपुर

10,000/- विजय कुमार जी बोथरा, बेलडांगा

7,100/- अरुण जी कन्हैयालाल जी खुरड़िया, अहमदाबाद

5,100/- केशरीचंद जी दुग्गड़, धूपगुड़ी

5,100/- प्रदीप कुमार जी बरड़िया, बेंगलुरु

5,100/- नवीन जी गेलड़ा, बेंगलुरु

5,100/- मेघराज जी भंवरलाल जी नाहटा, बालोद

5,100/- प्रकाश जी तरुण जी नाहटा, बालोद

5,100/- मनोहरी देवी सुंदर लाल जी डागा, नोखा

5,100/- भंवरलाल जी संदेश कुमार जी टाटिया, अर्जुनी

5,000/- महावीरचंद जी सुराणा, पांचू

5,000/- कैलाशचंद जी खींचा, ब्यावर

5,000/- गौरव जी खींचा, ब्यावर

5,000/- अमित जी बोथरा, बेलडांगा

4,000/- गुप्तदान, कोलकाता

3,500/- सुनीता जी तुषार जी बरमेचा, उलुंदूरपेट

3,110/- गुप्तदान, जगदलपुर

3,100/- रेखचंद जी ढेलड़िया, शेरगढ़

2,500/- चंद्रलता जी मेहता, दूदू, जयपुर

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- भंवरी देवी सेठिया, कोलकाता, हमीरमल जी नाहटा, बालोद, निर्मल जी देवेन जी नाहटा, बालोद, मोहनलाल जी जैन, जयपुर, हनुमान प्रसाद जी जैन, जयपुर, जीवनलाल जी सागरमल जी गोखरू, कानवन, सुरेश जी सुराणा, बेलडांगा, **शेरगढ़ से-** केवलचंद जी चोपड़ा, दुर्गालाल जी सगतमल जी चोपड़ा, दुर्गालाल जी नागराज जी चोपड़ा, जोगराज जी ढेलड़िया, गौतमचंद जी ढेलड़िया, विजयराज जी गुलेच्छा

2,000/- अमित जी डूंगरवाल, छोटीसादड़ी

1,665/- कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा

1,500/- नितेश जी बरड़िया, खरियार रोड

1,200/- विजय कुमार जी संचेती, रायपुर

1,121/- गुप्तदान, जगदलपुर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विनीत जी सुनीत जी सुजीत जी सेठिया, कटक, हनुमानमल जी

गोलछा, जलपाईगुड़ी, रमेश कुमार जी रामपुरिया, बनमनखी, विमल कुमार जी सुगनमल जी जैन, कानवन, प्रिया जी कर्णावत, अजमेर, **शेरगढ़ से–** भगवानचंद जी ढेलड़िया, मेघराज जी ढेलड़िया, सुनील कुमार जी नाहटा, नागराज जी गुलेच्छा

1,040/– कैलाशचंद्र जी नाहर, जावरा

1,000/– नेमीचंद जी डूंगरवाल, छोटीसादड़ी

1,000/– मधु जी शीतल कुमार जी भाणावत, उदयपुर

555/– सुशील जी पोखरना, उदयपुर

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– खुशबू जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चेतनमल जी नवनीत जी नागोरी, उदयपुर, लूणचंद जी नाहटा, शेरगढ़, लालचंद जी भंसाली, शेरगढ़, प्रकाश जी खींचा, ब्यावर, शोभा जी विमल जी जैन, कुस्तला/सवाई माधोपुर, सुरेशचंद जी जैन, सवाई माधोपुर, नीरू जी जैन, बजरिया, रतनलाल जी जैन, जयपुर, बाबूलाल जी ऋषभ जी जैन, सवाई माधोपुर, सूरज जी दीपक जी मेहता, बड़ीसादड़ी

******* दानपेटी योजना *******

50,000/– जेठी देवी कुमुद देवी सिपानी, बेंगलुरु

21,000/– गणेशमल जी पींचा, जोरावरपुरा

13,000/– माणकचंद जी धूड़मल जी डागा, बेंगलुरु

5,400/– विनोद कुमार जी कांकरिया, मेट्टुपालयम

5,100/– अमृतलाल जी पींचा, जोरावरपुरा

5,100/– गौतमचंद जी लुणिया, जोरावरपुरा

5,100/– श्री श्वेतांबर जैन पद्मावती पोरवाल संघ, इंदौर

5,100/– लक्ष्मीपत जी बोथरा, गंगाशहर

5,000/– नीतू जी पीयूष जी डागा, बेंगलुरु

4,000/– बाबूलाल जी किशन कुमार जी गांधी, बेंगलुरु

3,100/– आसकरण जी पींचा, जोरावरपुरा

3,000/– विनीत जी सुनीत जी सुजीत जी सेठिया, कटक

2,500/– कमला देवी चंपालाल जी बोथरा, गंगाशहर

2,500/– सुंदरलाल जी कंचन देवी छल्लाणी, गंगाशहर

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– श्यालमल जी फलोदिया, गुरुग्राम, **जोरावरपुरा से–** रुखमा देवी बोहरा, हनुमानमल जी पींचा, विनोद कुमार जी सुराणा, **बेंगलुरु से–** धर्मचंद लक्ष्मीलाल एंड ब्रदर्स बंबकी, कमलेश कुमार जी दक, कनकमल जी नंदावत, संपतलाल जी गिलुंडिया, कांतिलाल जी लसोड़, गणपत जी मेहता

1,531/– मनोहरलाल जी मेहता, बेंगलुरु

1,500/– भंवरी देवी सेठिया, कोलकाता

1,300/– प्रकाशचंद जी कोठारी, बेंगलुरु

1,111/– अशोक जी दर्शन जी लवेश जी नागोरी, बेंगलुरु

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– केशरीचंद जी दुग्गड़, धूपगुड़ी, दानमल जी गणेशमल जी मिन्नी, मुंबई/नाज़ीरहाट, पूनमचंद जी फलोदिया, भीनासर, **जोरावरपुरा से–** मंगलचंद जी लालानी, दीपचंद जी छाजेड़, ताराचंद जी बिनायकिया, पुखराज जी पींचा, बिलमचंद जी बिनायकिया, करणीदान जी बोथरा, ओमप्रकाश कुंभट, **बेंगलुरु से–** पुष्पा देवी कमलेश जी मुणोत, विकास कुमार जी पितलिया, घीसूलाल जी गालुड़िया, नवीन कुमार सिंघवी, प्रकाशचंद जी सुशील जी बरमेचा, निर्मल कुमार जी मोगरा, कोमल जी गांधी, पारसमल श्रीमाल, सुरेंद्र कुमार जी कोठारी, हेमंत कुमार जी दक, राजेंद्र कुमार जी अभिषेक जी खिंवेसरा, **देशनोक से–** मेघराज जी कातेला, खींवराज जी भूरा, केशरीचंद जी कातेला, **गंगाशहर से–** रूपचंद जी अरिहंत जी सेठिया, प्रेमचंद जी सुरेंद्र जी हरीश जी सोनावत, सुशील कुमार जी सोनावत, शिखरचंद जी महेंद्र कुमार जी भूरा, मोतीलाल जी रूपचंद जी सेठिया, देवचंद नवीन सुराणा, निर्मल कुमार डागा

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– जगदीशलाल जी जिनेंद्र जी भंडारी, बोहेड़ा, प्रकाश जी सौरभ जी धींग, बोहेड़ा, भीमराज जी बोहरा, जोरावरपुरा, माणकचंद जी बोहरा, जोरावरपुरा, नानालाल जी नंदावत, बेंगलुरु, कन्हैयालाल जी बैद, देशनोक,

हुलासमल जी संपतलाल जी भूरा, देशनोक
700/– सुरेश जी बडोला, बेंगलुरु
700/– संपतलाल जी बरड़िया, देशनोक
650/– निर्मल कुमार जी संचेती, देशनोक
600/– मुन्नीलाल जी पूनमचंद जी सुराणा, गंगाशहर
570/– उत्तमचंद जी नाहटा, देशनोक

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पन्नालाल जी मुणोत, जलगाँव, महावीर जी गिलुंडिया, बेंगलुरु, सिद्धार्थ जी श्रीमाल, बेंगलुरु, रमेश कुमार जी रामपुरिया, बनमनखी, शिखरचंद जी अभय कुमार जी सेठिया, गंगाशहर, धर्मचंद जी नवीन कुमार जी बोथरा, गंगाशहर, कुंदनमल जी मिन्नी, भीनासर, **बोहेड़ा से**– चांदमल जी प्रवीण जी भंडारी, अशोक जी मनीष जी भंडारी, संजय कुमार (टीनू) जी धींग, हरीश कुमार जी संजय जी धींग, बाबूलाल जी लोकेश जी धींग, अशोक जी मेहता, राजेश जी मनोज जी धींग, किशनलाल जी भूपेंद्र जी भंडारी, राजेश जी रितिक जी धींग, मांगीलाल जी प्रवीण जी मेहता, प्रकाश जी मल्हारा, महावीर जी रांका, महेंद्र जी चोरड़िया, राजेश जी लोकेश जी जारोली, श्यामलाल जी मंगल जी रांका, रामलाल जी जीवन जी जैन, माणक जी प्रदीप जी लसोड़, दिनेश जी अनिल जी भंडारी, मदनलाल जी धींग, संपतलाल जी बसंतीलाल जी भादाविया, **नोखा एवं जोरावरपुरा से**– हंसराज जी बुच्चा, प्रेमचंद जी गोलछा, मोहनलाल जी बोहरा, कन्हैयालाल जी कुंभट, प्रकाशचंद जी बोथरा, हुलासचंद जी संचेती, उगराज जी संचेती, ओमप्रकाश जी गोलछा, रेवंतमल जी नाहर, रतनलाल जी चौपड़ा, आनंदमल जी सुराणा, बाबूलाल जी नितेश कुमार जी कांकरिया, मांगीलाल जी बोहरा, **चिकमंगलूर से**– अरुण जी सिपानी, निर्मल कुमार जी सेठिया, किरणचंद जी गुलगुलिया, किशोर कुमार जी बोथरा, प्रकाशचंद जी भूरा, सुशील जी लुणावत, **देशनोक से**– राजकरण जी संदीप जी डागा, शांतिलाल जी भूरा, दीपचंद जी ओमप्रकाश जी भूरा, धूड़चंद जी भूरा, मांगीलाल जी सौरभ जी भूरा, श्रीचंद जी भूरा, दीपचंद जी पानमल जी भूरा, बाबूलाल जी धूड़चंद जी भूरा, विमल कुमार जी भूरा, भंवरलाल जी संपत जी कातेला, गुप्तदान, राजेंद्र जी कातेला, शांतिलाल जी ओमप्रकाश जी आंचलिया, प्रेमरतन जी दोशी, मेघराज जी मालू, रामचंद्र जी निर्मल जी कातेला, इंद्रचंद जी मोहनी प्रसाद जी भूरा, शांतिलाल जी नाहटा, सुंदरलाल जी सुराणा, हुलासमल जी सुराणा, प्रकाशचंद जी राकेशचंद जी सुराणा, हनुमानमल जी हीरावत, छगनमल जी प्रकाशचंद जी दोशी, आईमल जी मोतीलाल जी बुच्चा, ताराचंद जी नाहर, तेजकरण जी भंवरलाल जी भूरा, बजरंगलाल जी भूरा, रामचंद्र जी आंचलिया, हनुमानमल जी विमलकिशोर भूरा, भींवराज जी कातेला, चंपालाल जी भंवरलाल जी बरड़िया, इंद्रचंद जी महावीर जी भूरा, इंद्रचंद जी भंवरलाल जी भूरा, कन्हैयालाल जी सुनील कुमार जी आंचलिया, लूणकरण जी चंपालाल जी आंचलिया, सुंदरलाल जी नाहटा, किशनलाल जी मूलचंद जी सांड, मूलचंद जी सांड, हनुमानमल जी प्रवीण जी कातेला, भरत जी विजय जी नाहटा, बच्छराज जी राजेंद्र कुमार जी धारीवाल, बालचंद जी नाहटा, आसकरण जी भंवरलाल जी नाहटा, पूनमचंद जी धारीवाल परिवार

*********** जीवदया ***********

16,000/– पूनमचंद जी बोथरा, गोलकगंज (श्री पूरणमल जी की पुण्यस्मृति में)
16,000/– कोमल सिंह जी मेहता, बड़ीसादड़ी
11,111/– गोटीलाल जी सूर्या, देवरिया
11,000/– अजीत जी कन्हैयालाल जी खुरड़िया, उदयपुर
11,000/– गुप्तदान
10,000/– गीता देवी बलवंत जी अनिला जी आरव जी अर्हम जी कोठारी, खैरोदा

5,100/- जतन देवी ईश्वरचंद जी बोथरा, गुवाहाटी/गंगाशहर (चंचल जी बोथरा की 50वीं वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में)

5,100/- केशरीचंद जी दुग्गड़, धूपगुड़ी

5,100/- आशकरण जी पींचा, जोरावरपुरा

5,100/- सुवा बाई कोचर, कटंगी/बालाघाट

5,100/- समता महिला मंडल, फारबिसगंज

5,100/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, फारबिसगंज

5,100/- अशोक कुमार जी सुकलेचा, बेंगलूरु

5,000/- हुलासी देवी बोथरा, जोरावरपुरा

3,100/- ताराचंद जी धीरज जी सुराणा, गंगाशहर/सूरत (श्री हजारीमल जी की पुण्यस्मृति में)

2,860/- गुप्तदान, गंगाशहर

2,600/- नवीन जी गोलछा, बीकानेर

2,500/- मनीष जी गोलछा, बीकानेर

2,100/- लूणकरण जी दफ्तरी, गंगाशहर/दिल्ली

2,000/- जानी बाई, रतलाम

2,000/- के. वसंत दुग्गड़, विल्लुपुरम

1,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- पीयूष जी अहान जी मांडोत, पुणे, भंवरी देवी सेठिया, कोलकाता, कंचन कँवर जी मूथा, ब्यावर, महावीर जी मेहता, बेंगलुरु

1,221/- मूलचंद जी मुकेश कुमार जी छाजेड़, साजा

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- राजेंद्र जी कुशल जी बोलिया, भीलवाड़ा, ताराचंद जी महेंद्र कुमार जी बिनायाकिया, जोरावरपुरा, जयप्रकाश एम. आंचलिया, नासिक, सुरेंद्र कुमार जी कोठारी, बेंगलुरु, अभिलाषा जी जितेश जी चोरड़िया, नई दिल्ली (श्री सोहनलाल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में), मिश्रीलाल जी नाहर, चरमा

1,001/- गुप्तदान

1,000/- विनीत जी सुनीत जी सुजीत जी सेठिया, कटक

700/- हनुमान प्रसाद जी जैन, जयपुर

555/- गुप्तदान

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- रुक्मणि देवी जैन, सवाई माधोपुर, गुप्तदान, गुप्तदान, रमेश जी ऋतु जी ध्रुवकरण जी मेहता, बेंगलुरु, राजेंद्र कुमार जी भूरा, गुलाबबाग, करणीदान जी बोथरा, नोखा (गौरव बोथरा के सी.ए. फाइनल के उपलक्ष्य में), गुप्तदान, बीकानेर, भगवतीलाल जी रौनक जी रातड़िया, कानोड़, गौतमचंद जी अजीत कुमार जी जैन, श्यामपुरा

******** संघ सहयोग ********

1,00,000/- घेवरचंद केशरीचंद गोलछा ट्रस्ट, गुवाहाटी

2,000/- के. वसंत दुग्गड़, विल्लुपुरम

1,100/- अशोक जी राजकुमार जी सुनील जी अनिल जी बोथरा, गुवाहाटी/मानकाचर (श्री उदयचंद जी की पुण्यस्मृति में)

1,100/- राजेंद्र कुमार जी नारायणचंद जी भूरा, गुलाबबाग

800/- गुप्तदान

****** विहार सेवा सदस्यता ******

1,00,000/- अशोक जी राजकुमार जी सुनील जी अनिल जी बोथरा, गुवाहाटी/मानकाचर (श्री उदयचंद जी की पुण्यस्मृति में)

60,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, सैंथिया

*** समता सरिता सेवा (विहार सेवा) ***

50,000/- सज्जनलाल जी भंडारी, दलौदा

5,100/- मदन देवी पारसमल जी चोपड़ा, किशनगढ़

5,000/- गौतम जी दिनेश जी हितेश जी रांका, अहमदाबाद

1,500/- भंवरी देवी सेठिया, कोलकाता

1,100/- गुप्तदान

***** समता जनकल्याण प्रन्यास *****

2,00,000/- घेवरचंद केशरीचंद गोलछा ट्रस्ट, गुवाहाटी/नोखा

5,100/- शशिकला जी सुखलेचा, बेंगलुरु

********* समता प्रचार संघ *********

21,000/– सुनील कुमार जी जैन, गोलूवाला, विजय कुमार जी लुणावत, हनुमानगढ़

21,000/– निर्मल जी संघवी, इंदौर

21,000/– संतोष जी किशोरीलाल जी जैन, जगदलपुर

21,000/– सूरज देवी मांगीलाल जी कांकरिया, गोगेलाव/पीलीबंगा

21,000/– प्रणीता जी अजीत जी चोपड़ा, इंदौर

21,000/– सुभाषचंद्र जी गोखरू, कानवन

21,000/– ज्ञानचंद जी डूंगरवाल (जैन), बांसवाड़ा

21,000/– शुभम जी जैन, दिल्ली

21,000/– दिलीपचंद जी डागा, बेंगलुरु

****** साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग ******

11,000/– समता युवा संघ, बीकानेर (कन्हैयालाल जी बैद, बीकानेर)

****** समता साहित्य स्टॉल अनुदान ******

11,000/– ऊषा देवी गौतमचंद जी सांखला, दुर्ग

11,000/– इंदिरा बाई अन्नराज जी बाँठिया, दल्लीराजहरा

10,000/– दुल्हराज शांतिलाल रांका, जयनगर

5,100/– मदन देवी पारसमल जी चोपड़ा, किशनगढ़

5,000/– मोतीभाऊ मुणोत, जलगाँव

5,000/– निर्मल जी गुलेच्छा, ब्यावर

5,000/– यशवंत जी बलवंत जी जैनेंद्र जी बंब, टोंक/सिंगापुर

5,000/– माली बाई सांखला, सिकंदराबाद

5,000/– सुशील कुमार जी मेहता, ब्यावर

5,000/– कौशल जी दुगड़, गंगाशहर

4,000/– विजय कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम

3,100/– प्रकाशचंद्र जी जैन, मंदसौर

2,500/– जयवंतमल जी बोथरा, बुरहानपुर

2,100/– क्षितिज जी कर्णावट, अजमेर

2,100/– ईश्वरचंद जी मोतीलाल जी भूरा, देशनोक/सूरत

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– कुंता देवी बाबूलाल जी दसोरिया, इंदौर, रुचि जी नीलेश जी जैन, मंदसौर, इशान जी चौधरी, बेगूँ, चंद्रप्रकाश जी नगरीवाला, प्रतापगढ़, गुप्तदान, रोशनलाल जी चपलोत, निम्बाहेड़ा/मुंबई, अशोक कुमार जी छाजेड़, रायपुर

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– छोटूलाल जी छाजेड़, पाली, राजेंद्र कुमार जी नारायणचंद जी भूरा, गुलाबबाग, शांतिलाल जी पिछोलिया, गंगापुर, राजेश जी मोहनलाल जी बड़ोला, मुंबई, ललिता देवी मांडोत, जसोल, वीरता देवी बाँठिया, बाड़मेर

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– अजय कुमार जी पारख, राजनांदगाँव, जतनलाल जी नागोरी, भीलवाड़ा, भोजराज जी सेठिया, दिनहट्टा, मालचंद जी दुधेड़िया, शिलांग

******* समता संस्कार पाठशाला *******

5,000/– विनोद कुमार जी जैन, रतलाम

1,100/– भंवरी देवी सेठिया, कोलकाता

1,000/– अरुण जी मुणत, रतलाम

********* श्रमणोपासक भेंट *********

1,500/– भंवरी देवी सेठिया, कोलकाता

1,100/– पदमराज जी प्रदीप जी मेहता, जोधपुर (श्री पंकज जी मेहता की पुण्यस्मृति में)

500/– बुद्धिप्रकाश जी राजेश कुमार जी जैन, सवाई माधोपुर

500/– जितेश जी जैन, श्यामपुरावाले (श्री गणपतलाल जी जैन की पुण्यस्मृति में)

***** सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति) *****

6,000/– गुप्तदान, बीकानेर

2,100/– पुष्पा जी गोठी, ब्यावर

2,100/– कुसुम जी खींवसरा, ब्यावर

2,100/– सोहनी देवी डागा, भीलवाड़ा

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– ब्यावर से– निर्मला जी कांकरिया, नरेंद्र कुमार जी कांकरिया, शशिकला जी डांगी, दिलीप कुमार जी डांगी

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– ममता जी खाब्या, जेठाणा, **ब्यावर से–** आशा जी बाबेल, राजुल जी रांका, सीमा जी हिंगड़, बीना जी कोठारी, मोनिका जी रांका, मालकंवर जी पीपाड़ा, विमला देवी जी बाबेल, नम्रता जी कांकरिया, चोटा देवी लोढ़ा

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– ममता जी चोरड़िया, सूरत, सुनीता जी तुषार जी बरमेचा, उलुंदुरपेट, **ब्यावर से–** मंजूलता जी लुणावत, पुष्पा देवी बोहरा, मंजू जी मेहता, वंशिता जी जैन

700/– शांता जी जैन, ब्यावर

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– इंदिरा जी लुणिया, जेठाना, कौशल्या देवी नाहर, जेठाणा, ममता जी चोरड़िया, मसूदा, **ब्यावर से–** चंद्रकांता जी लोढ़ा, मंजू जी बाबेल, स्नेहलता जी जैन, पिंकी जी लोढ़ा, चाँदनी जी जैन (गुलेच्छा), सरिता जी देरासरिया, अन्नू जी जैन (गुलेच्छा), चंद्रकांता जी बाबेल, अर्चना जी रांका, रेखा जी छल्लाणी, पुष्पा जी डूंगरवाल, बरखा जी बुरड़, बीना जी कोठारी, राजकुमारी जी बुरड़, सुनीता जी ढेढिया

:: **विशेष** ::

श्रमणोपासक सदस्यता–22, साहित्य सदस्यता–11, संघ सदस्यता–1, महिला समिति सदस्यता–10

:: 1 अप्रैल 2024 से 31 अगस्त 2024 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/–	UPI सिद्धार्थ
04.04.24	500/–	नकद
04.04.24	12,000/–	UPI रौनक
04.04.24	7,000/–	UPI रौनक
06.04.24	1,000/–	UPI आदित्य जैन
07.04.24	2,500/–	UPI शरत
12.04.24	501/–	UPI विपुल जैन
19.04.24	1,100/–	UPI विकास
19.04.24	1,000/–	NEFT अशोका रेजीडेंसी
29.04.24	3,256/–	UPI राजेश
07.05.24	13,000/–	UPI NAKES
13.05.24	5,100/–	नकद
14.05.24	1,100/–	UPI सिंपल
14.05.24	800/–	UPI सचिन
07.06.24	4,000/–	NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो
10.06.24	21,000/–	By Trf.
12.06.24	2,100/–	UPI पारसमल जैन
19.06.24	2,960/–	UPI रचना
01.07.24	3,133/–	IMPS
20.07.24	3,800/–	UPI महेंद्र इलेक्ट्रिकल्स
01.08.24	3,133/–	UPI विमल कुमार
02.08.24	1,000/–	UPI सुशील संजय जैन
12.08.24	2,375/–	UPI प्रदीप कुमार जैन
16.08.24	2,100/–	TRF
17.08.24	11,000/–	UPI युनाइटेड प्लास्टिक
20.08.24	38,500/–	UPI NK श्री निगसन
31.07.24	25,500/–	UPI उत्तम ट्रैडर्स

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। –जय जिनेंद्र!

सुश्रावक श्री अमृतलाल जी मेहता, बड़ीसादड़ी

रो पड़ती हैं आँखें हमारी, देखकर तस्वीर आपकी।
जिंदगी ऐसी जी गए कि मौत भी बन गई महोत्सव आपकी।।
जिंदगी जी छोटी, लेकिन सबसे अच्छी जी गए।
हर जगह सुगंध फैलाकर, स्मृति सबके दिल में भर गए।।

धर्मनिष्ठ सुश्रावक **श्री अमृतलाल जी मेहता** सुपुत्र स्वाध्यायी श्री कोमल सिंह जी मेहता, बड़ीसादड़ी/बांसवाड़ा निवासी का 57 वर्ष की आयु में 14 जुलाई 2024 को देहावसान हो गया। आपके देहावसान की सूचना मिलते ही पूरा नगर स्तब्ध हो गया।

आप बांसवाड़ा में कुशल व्यवसायी के रूप में **सन डिस्ट्रीब्यूटर** फर्म के नाम से व्यवसायरत थे। आप अच्छे व कुशल व्यवसायी होने के साथ-साथ विनम्र, हँसमुख, धार्मिक स्वभावी, दयालु, परम गुरुभक्त, सेवाभाव आदि गुणों से ओत-प्रोत थे। आपका जीवन **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** के भावों में रमा हुआ था।

आपकी परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा. एवं शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धा व आस्था थी। आप में देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा व निष्ठा कूट-कूटकर भरी हुई थी। श्री साधुमार्गी जैन संघ, बाँसवाड़ा के आप सक्रिय कार्यकर्ता थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

::: श्रद्धावनत :::

स्वाध्यायी कोमल सिंह-चंद्रकला (माता-पिता), **सुनीता** (धर्मपत्नी), **सुरेश कुमार-मंजू, स्व. श्री अभय कुमार-अभिलाषा** (भाई-भाभी), **सीमा-नवीन कुमार जी करणपुरिया** (बहन-बहनोई), **अंशुल** (पुत्र), **अदिती, सुरभि** (पुत्रियाँ), **विदित-ईशिका** (भतीजा-भतीजा वधू), **चिन्मय** (भतीजा), **यश्वी, अक्षी** (भतीजियाँ), **कृतिक, हर्षित** (भाणेज)।

ससुराल पक्ष: स्व. श्री लादुलाल जी, सुनील कुमार, अनिल कुमार, यशवंत कुमार नंदावत, भीलवाड़ा।

विनम्र श्रद्धांजलि

नोखा। सुशीला देवी धर्मपत्नी नथमल जी बैद का 1 जुलाई को चौविहार संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आपको पूर्ण सजग अवस्था में शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. ने चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए। आपने अपना जीवन दो वर्षीतप, सावण 5, सावण-भादवा 2, आयंबिल 100 एवं अनेक तेला तप करके सजाया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

संगरिया। सुश्राविका दर्शना जी धर्मपत्नी प्रेमचंद जी जैन का 69 वर्ष की आयु में 25 जुलाई को देहावसान हो गया। आप अत्यंत ही सरल व विनयवान थीं। प्रतिदिन 5-6 सामायिक, 14 नियम, तीन मनोरथ, सागारी संथारा, उभयकाल प्रतिक्रमण, घर में रहते हुए धोवन पानी पीना, 700 गाथाओं का स्वाध्याय सहित अन्य अनेक छोटे-छोटे प्रत्याख्यान करती थी। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बड़ीसादड़ी। सुश्राविका रेणु जी धर्मपत्नी जसवंत जी मारू का 58 वर्ष की आयु में 2 अगस्त को देहावसान हो गया। आप आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धावान थीं। आपने नौ, चार एवं तेला तप किया हुआ था। आप साध्वी श्री अक्षयप्रभा जी म.सा. की संसारपक्षीय भाभीजी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

अर्जुनी। सुश्राविका पन्ना देवी धर्मसहायिका दुलीचंद जी टाटिया का 68 वर्ष की आयु में 13 अगस्त को संथारापूर्वक महाप्रयाण हो गया। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश की अनन्य भक्त थी। नित्य सामायिक, स्वाध्याय एवं संत-सतियाँ जी की सेवा का लाभ लेती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

देशनोक। सुश्राविका विमला देवी धर्मसहायिका हड़मानमल जी कातेला का 4 सितंबर को 52 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप चारित्रात्माओं के दर्शन-सेवा के भाव सदैव रखती थी। एकासना, आयंबिल, उपवास, दया आदि तपस्याएँ यथाअवसर करती थीं। प्रतिदिन सामायिक करने का लक्ष्य रखती थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

उत्तमता - अवनत न हो

मनुष्य सृष्टि में सबसे उत्तम प्राणी माना जाता है, पर जब मनुष्य को देखते हैं तो लगता नहीं कि मनुष्य उत्तम प्राणी है। उसकी तनावपूर्ण जिंदगी दर्शाती है कि वह सुखी नहीं है। इस पर विचार करने से लगता है कि उसे ऊँचा स्थान तो मिल गया, पर वह अपने विचारों को उन्नत नहीं बना सका। जैसा ऊँचा स्थान मिला वैसा ही यदि वह वैचारिक दृष्टि से उन्नत होता तो वह सुखमय जीवन जी सकता था। गिद्ध पक्षी आकाश में ऊँचाई पर चले जाने पर भी उसकी दृष्टि जैसे नीचे जमीन पर पड़े मांस के लोथड़े पर होती है, वैसे ही मनुष्य को ऊँचा स्थान मिल जाने पर भी वह वैचारिक दृष्टि से नीचे की ओर ही देखता रहता है। अतः दुःखी है, तनावग्रस्त है। वह यदि अपनी विचारधारा को उन्नत बना ले तो वस्तुतः अपनी उत्तमता को बरकरार रख सकता है।

(आरोह)

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धार्मिक कार्य

तप–त्याग

:: मेवाड़ अंचल ::	
बड़ीसादड़ी	**31 –** सुनीता जी मेहता, सरोज जी मेहता, चंदनबाला जी मेहता, **30 –** क्षेमलता जी भंडारी।
बंबोरा	**31 –** तारा जी जारोली।
चित्तौड़गढ़	**31 –** सरोज जी सुराणा।
प्रतापगढ़	**31 –** शशि जी मोगरा।
उदयपुर	**31 –** पिंकी जी मेहता।
:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::	
नोखा	**31 –** सुंदर देवी संचेती, **15 –** पूनम जी आंचलिया।
गंगाशहर	**15 –** जागृति जी लुणावत।
नागौर	**11 –** नेहा जी संखलेचा।

जोधपुर	**33 –** शगुन जी मुणोत, **31 –** सुजाता जी मिन्नी।
:: जयपुर-ब्यावर अंचल ::	
ब्यावर	**46 –** लीला देवी कोठारी, **30 –** पद्मावती जी कोठारी।
:: छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ::	
बेरला	**31 –** तारिका जी बुरड़, **30 –** ट्विंकल जी सुराणा, महिमा जी सुराणा।
रायपुर	**32 –** सुनीता जी संचेती, **30 –** सुरभि जी लोढ़ा, प्रिया जी भंडारी, मंजू जी भंडारी, **23 –** श्वेता जी चोपड़ा।
दुर्ग	**30 –** संगीता जी सांखला, सुप्रिया जी छाजेड़।
धमतरी	**31 –** आशा जी सांखला, **30 –** पूजा जी लुणिया, बबिता जी बुरड़, **29 –** स्वीटी जी कोटड़िया, **18 –** आस्था जी लुणिया, **16 –** गुण जी कवाड़।
अर्जुनी	**31 –** प्रियंका जी टाटिया, ऋतु जी टाटिया, दीपाली जी सांखला।
डौंडीलोहारा	**30 –** संतोष बाई भंसाली।
महासमुंद	**30 –** ज्योति जी बाफना।
दल्लीराजहरा	**31 –** रक्षा जी बाँठिया, नीतू जी चोपड़ा, वंशिका जी गुणधर, **25 –** पूजा जी गुणधर, **16 –** सुमन जी बाँठिया।
:: मुंबई-गुजरात अंचल ::	
सूरत	**21 –** हुलासी देवी मेहता, **19 –** वीणा जी श्रीश्रीमाल।
:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::	
जलगाँव	**36 –** लीला जी बोहरा, **31 –** आकांक्षा जी श्रीश्रीमाल, प्रेरणा जी जैन।

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	माँ मेरी दोस्त बनो, छोटी बातें बड़े काम की	बड़ीसादड़ी	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.
2.	अहोदानम् एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी	कोटा	शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा.
3.	समीक्षण ध्यान शिविर	ब्यावर	शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा.
4.	गति-आगति, लघुदंडक	बेरला	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.
5.	निर्दोष गोचरी, प्रतिक्रमण के लाभ	जयपुर	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा.
6.	दिशाबोध	धमतरी	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.
7.	आराधना का थोकड़ा, जैन सिद्धांत बत्तीसी, अन्य तीर्थी का थोकड़ा, वेदना का थोकड़ा	बालोद	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
8.	ज्ञानलब्धि का थोकड़ा, जैन सिद्धांत बत्तीसी	महासमुंद	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि जी म.सा.
9.	मेरे साथ ही ऐसा क्यूँ होता है, धोवन पानी	वापी	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा जी म.सा.
10.	जैन सिद्धांत बत्तीसी	अर्जुनी	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.
11.	आजादी	कोलकाता	शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.
12.	टी पॉइंट	ब्यावर	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा.
13	लोक गणित, जैन भूगोल	रायपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.
14.	मोक्ष का सुहाना सफर	दुर्ग	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसारिका श्री जी म.सा.
15.	स्वाध्याय शिविर-मिशन विजन	चेन्नई	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा.
16.	ज्ञान आराधना शिविर	देशनोक	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा.
17.	तप आराधना की विधि	जयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा.
18.	कर्म बंध और हमारा जीवन, लघुदंडक, गति-आगति का थोकड़ा	सवाई माधोपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा.
19.	ऐसी वाणी बोलिए	बेंगलुरु	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.
20.	आत्मयात्रा	जोधपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा.
21.	माइंड करेगा वर्क जानो दो का फर्क	महामंदिर	शासन दीपिका साध्वी श्री वरण श्री जी म.सा.

स्वर्ण कुंभ
Block Booking 45...

दो दिवसीय आवासीय शिविर भीलवाड़ा में आयोजित

भीलवाड़ा की पावन धरा पर 24-25 अगस्त को '**स्वर्ण कुंभ**' नामक दो दिवसीय आवासीय शिविर से महिला शक्ति में ऊर्जा का संचार हो गया। भीलवाड़ा में आयोजित इस शिविर के प्रथम दिवस प्रातः 6:30 बजे से रजिस्ट्रेशन प्रारंभ हुआ, जिसमें 48 वर्ष से कम आयु की 525 श्राविकाओं ने बैज के माध्यम से पंजीकरण कराया। शिविर का शुभारंभ आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण कर हुआ। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने समता ऊर्जा साधना विषय पर मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि शत-प्रतिशत समर्पण व उत्साह से जिस कार्य को करेंगे उससे हमारे मनोभावों को सुख प्राप्त होगा और ऊर्जा का विकास होगा। यदि दुःख-संताप हैं तो ऊर्जा का स्तर सतत गिर जाएगा।

साध्वी श्री रामरया श्री जी म.सा. ने फरमाया कि समय के टुकडों को आत्मविकास में उपयोग करना चाहिए। जो स्वयं के साथ समय बिताता है उसमें जीवन जीने की कला विकसित हो जाती है।

साध्वी श्री मृणाल कँवर जी म.सा. ने फरमाया कि सकारात्मकता के साथ परिश्रम, आत्मविश्वास और योजनाबद्ध तरीके से सफलता प्राप्त की जा सकती है। इंगियागार संपन्ने बनकर जीवन संवारना है।

साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने '**पाप से बच,**

पुण्य में रच' उक्ति पर भाव फरमाए कि जिस प्रकार चींटी स्वयं चेन्नई से भीलवाड़ा नहीं पहुँच पाती, परंतु इस रूट की ट्रेन में सवार है तो अवश्य पहुँच सकती है, उसी प्रकार पुण्य से प्राप्त आचार्यश्री का सान्निध्य हमें लक्ष्य प्राप्ति के समीप पहुँचाएगा। हमारी उत्तेजना, चिड़चिड़ाहट तथा तनाव बच्चों की परवरिश एवं उनके साथ व्यवहार में बाधक न बनें। प्रेम व वात्सल्य से बच्चों को सुसंस्कारित करें और उनमें उज्ज्वल भविष्य का आत्मविश्वास भरें। जब हम हमारी सुनने व समझने की क्षमता को बढ़ाएँगे तभी बदलाव का खुले हाथों से स्वागत कर पाएँगे।

करीब 250 महिलाओं ने सामूहिक रूप से देवसिय प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण के पश्चात् '**स्वर्णिका**' भक्ति की स्वर्णिम गूँज में सभी प्रतिभागियों ने भक्ति से ओत-प्रोत होकर स्वयं को ऊर्जान्वित महसूस किया।

शिविर के द्वितीय दिवस का शुभारंभ प्रार्थना, समता शाखा एवं उपाध्याय प्रवर के ओजस्वी उद्बोधन से हुआ। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में ऊर्जा के साथ-साथ समय का भी महत्त्व समझाते हुए फरमाया कि व्यक्ति चाहे कितना भी व्यस्त हो, स्वयं के लिए समय निकाल ही लेता है। यदि हम उस समय का सदुपयोग प्रोडेक्टिव, आध्यात्मिक कार्यों के लिए करते हैं तो इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। जो नियमित रूप से अपने परिवार के अलावा दूसरों के विकास में समय लगाता है, वह स्वयं का विकास निश्चित रूप से करता है। '***We grow as we grow others***' स्वयं का विकास अन्यों के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। यदि हम अपना समय धर्म संघ के साथ व्यतीत करते हैं तो सुनिश्चित संघ के प्रति लगाव बढ़ेगा और वह हमारे दीर्घकालीन विकास के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

1) कार्य को अपना समझना, जिम्मेदार होना।

2) किसी कार्य में हिस्सा लेना – चाँदी की थाली।

3) कार्य को स्वयं करना – सोने की थाली।

4) नेतृत्व का भार लेना – हीरे-रत्नों की थाली।

और उपरोक्त सभी को ना बोलने को इन सभी थालियों को ठुकराने के समान बतलाया है।

मध्याह्न पश्चात् सभी प्रतिभागियों को रुचि के अनुसार तीन विभागों **प्रथम-** ज्ञान-ध्यान, **द्वितीय-** प्रभावना एवं **तृतीय-** सेवा में विभाजित किया गया।

प्रथम विभाग में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा अनंत शक्तिशाली है। कषायों को देखने की समझ और प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहने की कला का ज्ञान जरूरी है। मैं भिन्न हूँ, आत्मा भिन्न है। ढोल बजने पर सुई गिरने की आवाज सुनाई नहीं देती, परंतु श्रुत की आवाज से धीरे-धीरे परिवर्तन आता ही है, लेकिन समय लगता है। प्रत्येक जीव की बीज आत्मा अलग-अलग है। उनको उसी प्रकार की खाद दी जाए तो वह परिपक्व वृक्ष बनेगा। थोकड़े, धर्मकथा, स्वाध्याय, ज्ञान-ध्यान आदि के माध्यम से स्वयं ज्ञान करके दूसरों को भी ज्ञान करा सकते हैं। हमारा कर्तव्य है गुरुदेव के भार को कम करना। जिस प्रकार आहार बहराकर प्रतिलाभित होते हैं, उसी प्रकार ज्ञान-ध्यान सीखकर या सीखाकर गुरु को प्रसन्न करके गुणों में अभिवृद्धि कर सकते हैं।

द्वितीय विभाग में में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्रेणिक राजा व कृष्ण महाराज ने धर्म दलाली कर धर्म की प्रभावना करके तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया। धर्म की प्रभावना में कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए और धर्म की प्रभावना में अपनी शक्ति लगा देनी चाहिए।

तृतीय विभाग में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्रावक-श्राविकाओं में निम्न गुण होने चाहिए –

- **आत्मार्थी श्रावक –** अपनी आत्मा की निंदा करने वाला स्वप्रेरित श्रावक होना चाहिए।
- **जागरूक श्रावक –** श्रावक में हमेशा जागृत रहना चाहिए। कल्पमर्यादा पुस्तक पढ़ना, जानकारी

रखना, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी आदि करना और 20 कि.मी. के दायरे में म.सा. का सान्निध्य मिले तो वंदना का लाभ लेना चाहिए।

- **अम्मा-पिया श्रावक** - श्रावक को माता-पिता की तरह जागरूक रहना चाहिए।
- **विवेकवान श्रावक** - संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों की जानकारी रखनी चाहिए।
- **दृढ़धर्मी प्रियधर्मी श्रावक** - म.सा. के अनुकूल सामान, कपड़ा, दवाई, आगम, थोकड़ा के उपकरण व सर्वधर्मी सेवा, मुमुक्षु सेवा आदि के बारे में विवेक रखना चाहिए।

सभी चारित्रात्माओं ने ज्ञान का अपूर्व वर्षण किया, जिससे प्रतिभागियों की श्रद्धा में बहुगुणा वृद्धि हुई एवं श्राविकाओं में ऊर्जा व अहोभाव की परिपूर्णता नजर आई। इस प्रकार '**स्वर्ण कुंभ**' के माध्यम से श्रीसंघ से जुड़ने का संकल्प और मजबूत हुआ।

समता ऊर्जा साधना

इय सव्वकालतित्ता, अतुलं निव्वाण-मुवगया सिद्धा।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता।। (श्री उववाई सूत्र) - 9 बार
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणाव-माणओ।। (श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र) - 1 बार
अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

प्रतियोगिता

भगवन् का जीवन, हमारा आदर्श

देश के अनेक स्थानों में विचरण व चातुर्मास आदि विविध प्रसंगों पर परम पूज्य आचार्य भगवन् के सान्निध्य का लाभ प्राप्त हुआ है। इस दौरान अनेक सुश्रावक-सुश्राविकाओं को आचार्य भगवन् के जीवन को नजदीक से जानने-समझने का अवसर मिला। यदि आपके ध्यान में आचार्य भगवन् के जीवन, जीवन चारित्र, संघीय व्यवस्था, श्रावक-श्राविकाओं संबंधी कुछ विशेष घटनाएँ या संस्मरण हों, जो आपने प्रत्यक्ष देखे हों तो उन्हें अपने शब्दों में पिरोकर हमें भिजवाने का कष्ट करें। साथ ही यह भी अंकित करें कि आप द्वारा लिखित संस्मरण से हमें क्या शिक्षा मिलती है एवं यह संस्मरण आचार्य भगवन् की कौनसी विशेषता को उजागर करता है। आप द्वारा भेजा गया विवरण यथाशीघ्र ही हमें प्राप्त हो सके, ऐसा लक्ष्य रखें।

सारगर्भित शब्दांकन, सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित एवं शब्द रचना में जिन श्रावक-श्राविकाओं की रचनाएँ सर्वश्रेष्ठ होंगी उन्हें विजेता के रूप में **प्रथम ₹1100/-**, **द्वितीय ₹700/-**, **तृतीय ₹500/-** एवं **सांत्वना (पाँच) ₹251/-** के पुरस्कार से सम्मानित किया गए जाएँगे। आपका यह सार्थक प्रयास अन्यों के लिए प्रेरक होगा।

- श्रमणोपासक टीम

केंद्रीय पदाधिकारियों का जयपुर-ब्यावर अंचल प्रवास संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा 26 से 28 अगस्त 2024 को तीन दिवसीय जयपुर-ब्यावर अंचल प्रवास सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

उपलब्धियाँ :

- 4 नए मंडलों का गठन – 1. कुंडेरा, 2. हाउसिंग बोर्ड, 3. मंडी रोड, 4. श्यामपुरा ।
- 7 प्रतिनिधि सदस्यों (लीड मेंबर्स) का मनोनयन – 1. खरवा, 2. आदर्श नगर, 3. किशनगढ़, 4. मसूदा, 5. विजय नगर, 6. हिंडौन सिटी, 7. देवली।
- कुंडेरा व टोंक में 1-1 तथा ककोड़ में 2 नई बहुओं का स्वागत किया गया।

प्रवासी दल ने तीन दिवसीय प्रवास में 18 क्षेत्रों (अजमेर, ब्यावर, खरवा, कोटा, सवाई माधोपुर, बजरिया, चौथ का बरवाड़ा, मंडी, आदर्श नगर, हाउसिंग बोर्ड, कुंडेरा, अलीगढ़, उखलाना, ककोड़, टोंक, जयपुर, श्यामपुरा, किशनगढ़) में चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी व सभी सदस्यों का परिचय प्राप्त किया। साथ ही केसरिया कार्यशाला, युवती शक्ति, साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम, छात्रवृत्ति, सर्वधर्मी, संगठन, परिवारांजलि, प्रतिक्रमण तथा दानपेटी प्रवृत्तियों सहित विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई। इस दौरान पर्याय ज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा., शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हो गया।

एक ज्ञानवान एवं सत्क्रियाशील साधक का यह चिंतन होना चाहिए कि मेरी समस्त आध्यात्मिक क्रियाएँ तथा तपाराधना आत्मशुद्धि के लिए हैं, न कि लोक-परलोक की किसी लालसा पूर्ति के लिए और न ही मेरी अहंकार पुष्टि के लिए। मैं सिर्फ अपने आत्मस्वरूप पर लगे हुए पापों को धोने के लिए ही तपस्या कर रहा हूँ, किसी पर कोई अहसान नहीं कर रहा हूँ। ऐसे चिंतन के साथ जब लक्ष्य स्पष्ट रूप से सामने होता है तो साधक की तपस्या निष्फल भी नहीं जाती और वह अपनी साधना से डोलायमान भी नहीं होता। जो आत्मशुद्धि के फल को एकांत रूप में न देखकर सिर्फ क्रिया और अनुष्ठान तक ही अपनी लक्ष्य दृष्टि को सीमित कर लेता है एवं विविध क्रियाओं, विविध फल को देखता है तो ऐसा साधक न तो अपने आत्मस्वरूप का अवलोकन कर सकता है और न ही भगवान की सच्ची चरण-सेवा कर सकता है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ. भा. सा. जैन संघ)

कर्मों का क्षमन - करे शुद्ध प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण

प्रथम चरण	1 अगस्त - 20 अगस्त (पूर्ण) इच्छामि णं भंते - 18 पापस्थान
द्वितीय चरण	21 अगस्त - 10 सितम्बर (पूर्ण) इच्छामि खमासमणो - 6 अणुव्रत
तृतीय चरण	11 सितम्बर - 30 सितम्बर (पूर्ण) 7 अणुव्रत - तस्स धम्मस्स
चतुर्थ चरण	1 अक्टूबर - 20 अक्टूबर 5 पदों की भाव वंदना - अंतिम पाठ
पंचम चरण	21 अक्टूबर - 10 नवंबर संपूर्ण प्रतिक्रमण विधि सहित

SCAN ME

घर घर प्रतिक्रमण
हर घर प्रतिक्रमण

महिला समिति पुन: लेकर आ रही है
आपके लिए प्रतिक्रमण प्रतियोगिता

Helpline Number -
9303208800, 8770813715

EMPOWER RETREAT

सरल युवा-सबल युवा-सफल युवा

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय युवा शिविर **'Empower Retreat'** का भव्य आयोजन भीलवाड़ा की पावन धरा पर 24-25 अगस्त को किया गया, जिसमें देशभर के अनेक स्थानों के लगभग 360 युवाओं ने भाग लिया। शिविर में भाग लेने हेतु आए युवाओं को परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हुआ।

प्रथम दिवस शिविर का शुभारंभ आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मांगलिक श्रवण के साथ हुआ। प्रवचन पश्चात् शिविरार्थी युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि किसी भी प्रकार की ऊर्जा का सेंटर गुरु है। गुरु से प्राप्त ऊर्जा शाश्वत है। गुरु की ऊर्जा सम्यग्ज्ञान की ऊर्जा है। आत्मा की ताकत क्या है? आत्मा का मूल्य क्या है? विचार करें कि हम अपनी आत्मा के लिए क्या कर रहे हैं? कबूतर को दाना डालने और बकरे को दाना डालने में क्रिया तो समान है, परंतु भावों में बहुत अंतर है। बकरे को दाना डालना पुण्य नहीं, पाप का भेद है। संतों का समागम अच्छा है, पर आत्मा का दृष्टिकोण शुद्ध होना चाहिए। हमें अपनी ऊर्जा को बढ़ाने के लिए अपने भावों को सदैव ही सकारात्मक रखना होगा। हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि किसी कार्य को 100 प्रतिशत डेडिकेशन के साथ किया जाए तो परिणाम भी 100 प्रतिशत मिलना सुनिश्चित है। आपश्री जी ने समता युवा संघ को **'समता ऊर्जा साधना'** का नवीन संकल्प दिया।

शिविर के दूसरे सत्र में श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने सरल युवा-सबल युवा-सफल युवा विषय पर मार्गदर्शन प्रदान करते हुए फरमाया कि युवा वही कहलाता है जो सदा अपना लक्ष्य ऊँचा रखते हुए आगे कदम बढाता है। आँधी आए या तूफ़ान आए, वह कभी नहीं घबराता। युवाओं में हमेशा परिणाम को तीव्रता से प्राप्त करने की ललक रहती है। यही ललक युवाओं को संसार के अन्य प्राणियों से अलग बनाती है।

तृतीय सत्र में श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने **'संघ उत्थान में युवाओं का व्यक्तित्व किस प्रकार का हो'** विषय का विस्तृत विवेचन फरमाया। चतुर्थ सत्र में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने पाँच कार्यों द्वारा शिविरार्थियों को आत्म-अवलोकन करवाया। आपश्री जी ने व्यक्तित्व में निखार लाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हुए फरमाया कि संयम की शुद्ध आराधना एवं व्रत शुद्धि आवश्यक है।

द्वितीय दिवस का शुभारंभ समता आराधना के साथ हुआ। प्रवचन पश्चात् इस दिवस के प्रथम सत्र में श्री राजन मुनि जी म.सा. ने समता ऊर्जा साधना की विस्तृत व्याख्या फरमाई। दूसरे सत्र में श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने एवं जीवन में सरलता एवं साधुपना कैसे प्राप्त

हो विषय पर बहुत ही सरल एवं सुंदर भाषा में समझाया। तृतीय सत्र में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रत्येक धार्मिक क्रिया में हमारा मोह कम से कम रहे। संघ सेवा में हमारा अहं, मान, क्रोध कम पड़े क्योंकि सच्ची संघ सेवा वही है जिसमें अहं ना हो।

भोजन पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित चतुर्थ सत्र का संचालन शिविर संयोजक ने किया। समता युवा संघ, भीलवाड़ा द्वारा मंगलाचरण के पश्चात् अध्यक्ष ने अपने स्वागत उद्बोधन में सभी का भावाभिनंदन किया। सत्र संवाद '**द टॉक शो**' की शुरुआत करते हुए शिविर संयोजक ने संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री को मंच पर आमंत्रित किया। इस सत्र में उपरोक्त सदस्यों का पैनल बनाकर साधुमार्गी संघ कैसे प्रगतिशील हो विषय पर सारगर्भित विचार-विमर्श पश्चात् प्रश्नोत्तर किए गए एवं सभी प्रतिभागियों को गूगल फॉर्म के माध्यम से समता युवा संघ के विकास में रुचि अनुसार अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया गया।

अगली एक्टिविटी में दोपहर 2 बजे मोटिवेशनल स्पीकर सचिन जी चंडालिया, भीलवाड़ा ने विभिन्न गतिविधियों द्वारा युवाओं को '**क्षमताओं के सृजनात्मक रंग**' विषय पर एक इंटरैक्टिव कार्यक्रम आयोजित कर सभी युवा सदस्यों को सोचने के तरीके पर रचनात्मक होने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में '**विकल्पों और संभावनाओं की तलाश**', '**हर युवा के पास एक अद्वितीय प्रतिभा का आशीर्वाद**', '**विभिन्न क्षमताओं से संपन्न युवा**' जैसे अनेक विषयों पर प्रस्तुति दी गई। स्पीकर ने युवाओं से परस्पर प्रश्नोत्तर कर उनका नजरिया एवं फीडबैक जानने के साथ सभी प्रतिभागी युवा साथियों से शिविर अनुभव साझा करवाए। उन्होंने कहा कि आचार्य भगवन् ने 2017 के सूरत चातुर्मास में फरमाया था कि गुण देखें, अगर न देखें तो ढूँढ़े। आइए, सबमें सकारात्मकता खोजें। हम सभी के गुण देखने वाले युवा बनें, जिससे हर युवा साधुमार्गी संघ का एक सकारात्मक ब्रांड एंबेसडर बने।

अगले सत्र की शुरुआत नवकार मंत्र के सामूहिक संगान से हुई। तत्पश्चात् अर्पित जी दस्सानी, दिल्ली ने न्यूट्रीशन एंड हेल्थ विषय पर उपस्थित सभी युवा साथियों को महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि लाइफ स्टाइल और हेल्थ का सही होना प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सभी का अभिनंदन करते हुए शिविर में अर्जित ज्ञान को जीवन में आत्मसात् करने अपनी रुचि अनुसार संघ सेवा से जुड़ने का आह्वान किया। तत्पश्चात् तीन सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थियों, मोटिवेशनल स्पीकर्स का अभिनंदन किया गया। स्थानीय समता युवा संघ द्वारा सभी का आभार ज्ञापित किया गया।

समता युवा संघ के राष्ट्रीय महामंत्री ने आगत सभी पदाधिकारियों, सदस्यों, युवा साथियों एवं समता युवा संघ, भीलवाड़ा को सुंदर व्यवस्था के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। '**तेरे पावन चरणों में**' गीत की पंक्तियों के भक्तिभाव के साथ सामूहिक संगान एवं जय-जयकारों के साथ शिविर समापन हुआ।

- राष्ट्रीय शिविर संयोजक

भगवान ने स्वाध्याय करने की बात कही है। स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होना भी कहा है, परंतु कल्याण मार्ग, पाप मार्ग के लिए सुनने की बात कही। इसमें बहुत गहरा विज्ञान छुपा हुआ है। इस पर हमें गहनता से विचार करना होगा, क्योंकि ऊपर-ऊपर से ही अर्थ लगा लेने से अथवा गाथाओं का कोई अर्थ लगा लेने मात्र से हम कथन के मर्म तक नहीं पहुँच पाएँगे।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। श्रमणोपासक के आगामी **अक्टूबर 2024 धार्मिक अंक** से **मार्च 2025 धार्मिक अंक** तक के सभी प्रकाशन **आचार्य भगवन् के गुणों, विशेषताओं, साधना एवं संयमी जीवन** पर आधारित रहेंगे। उपर्युक्त विषयों पर आधारित रचनाएँ आप सभी से सादर आमंत्रित हैं। चूँकि महत्तम शिखर वर्ष गतिमान है, अत: हम सभी को महत्तम महापुरुष के गुणों का बखान कर कर्मनिर्जरा करने एवं उन गुणों को आत्मसात करने का अपूर्व अवसर उपलब्ध हुआ है। हम सभी अपने गुरु के गुणानुवाद कर इस अवसर का लाभ उठावें।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ – लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो, तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

9314055390 | **news@sadhumargi.com**

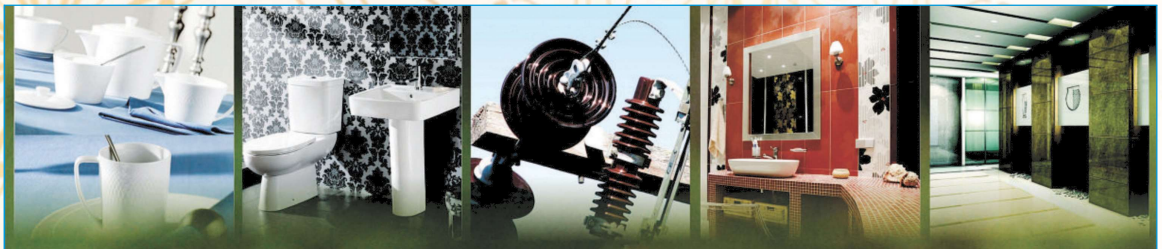

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिश: वंदन

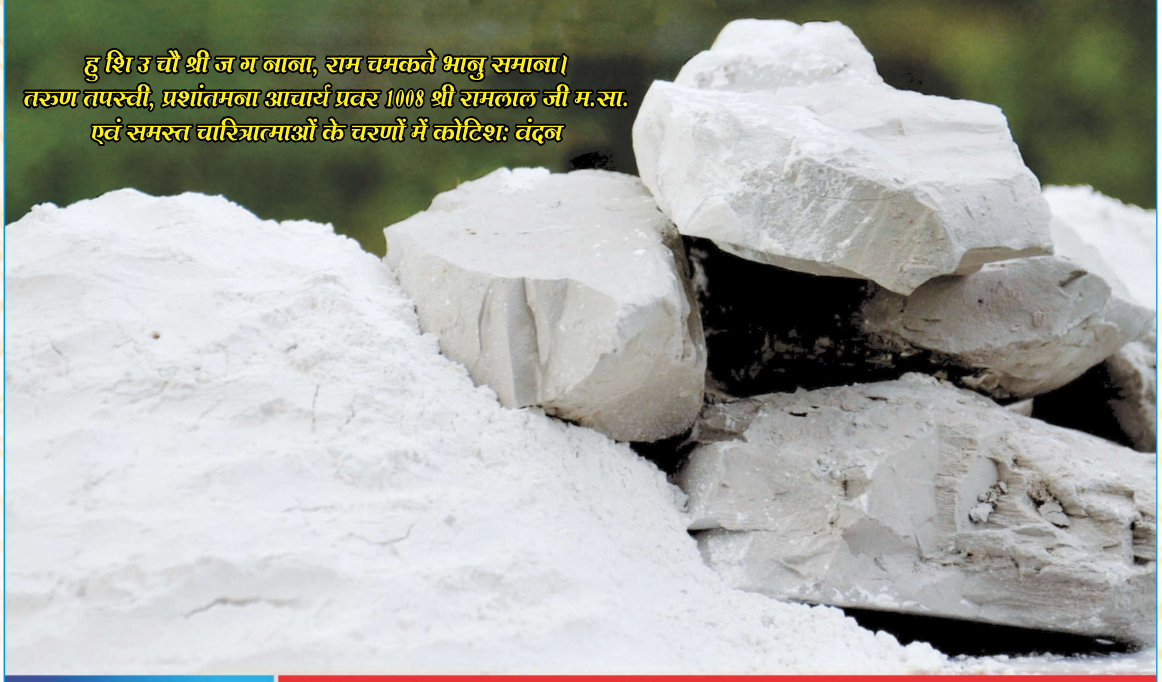

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इसका उद्घाटन फरवरी 2025 से पहले होना संभावित है।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरूण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ		: 9602026899
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ		: 7231933008

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

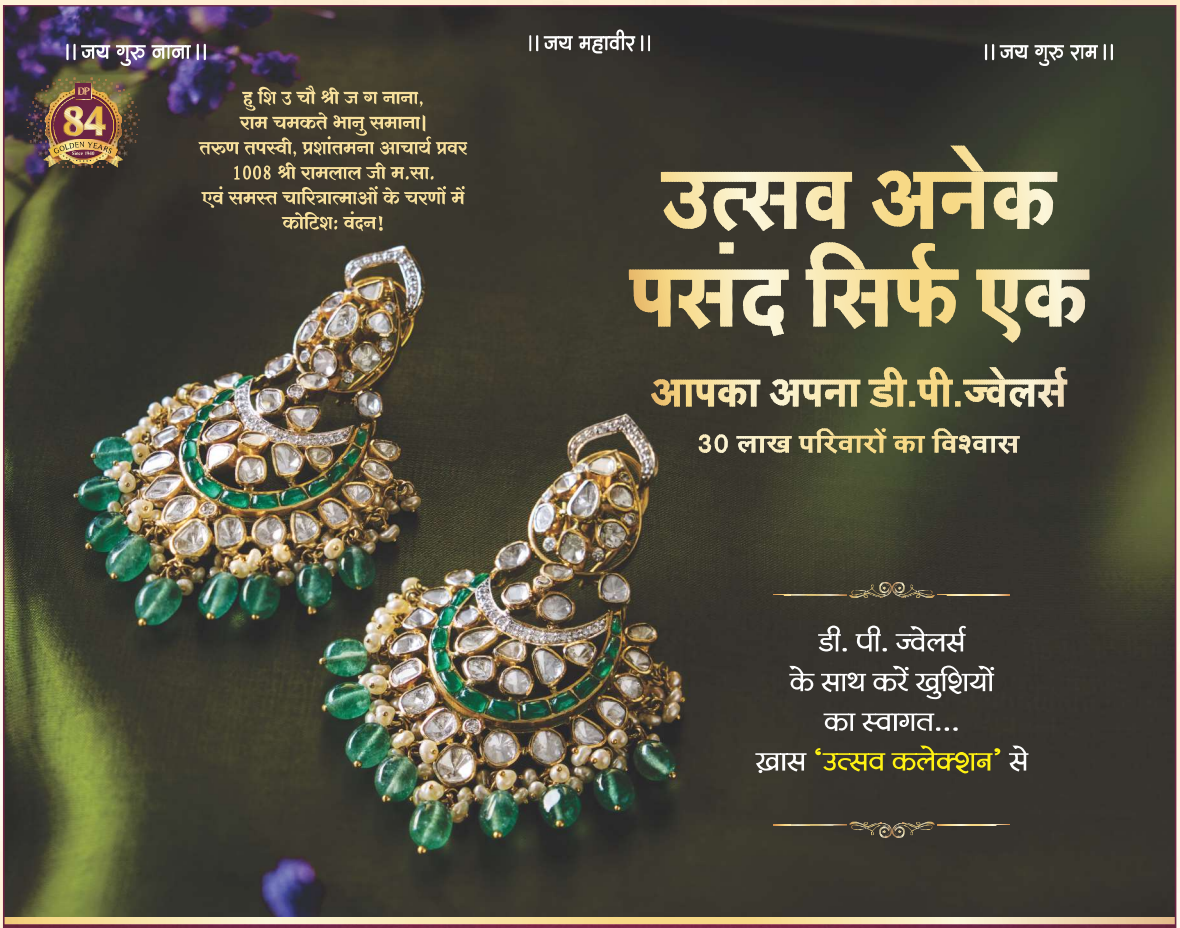

DP

D.P. Jewellers

A BOND OF TRUST SINCE 1940

A VENTURE OF D.P. ABHUSHAN LTD.

TOLL FREE No.: 1800 202 0339 www.dpjewellers.com

138, चाँदनी चौक, रतलाम (07412-408900

✦ इन्दौर (0731-4099996 ✦ भोपाल (0755-2606500 ✦ उज्जैन (0734-2530786 ✦ उदयपुर : (0294-2418712/13
✦ भीलवाड़ा : (01482-237999 ✦ कोटा : (0744-2500009 ✦ बांसवाड़ा : (02962-250007 ✦ अजमेर : (0145-2990748

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261

@absjainsangh

www.facebook.com/HOSadhumargi